अमूल्य शास्त्र दानदाता.

जैन स्थम्भ दानवीर

स्व राजा बहादुर लाला सुखदेव सहायजी, जौंहरी.

जैन प्रभावक धर्म धुरंधर

लाला ज्वालाप्रसादजी, जौंहरी.

मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री खुबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझे साथ ले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बडा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म मे प्रसिद्ध किया व परमोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये. उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैद्राबाद में हुए. इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए. जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे.

शिशु-अमोल ऋषि.

उपकारी महात्मा

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्यपाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज!

आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आपके परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका. इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं. आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोंद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा.

दास-अमोल ऋषि

आभारी-महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज!

इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचिन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समय२पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका. इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगें वे सब ही आप के अभारी होंगे.

आपका-अमोल ऋषि

हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पुज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनिश्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया. और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तल दबे हुओ हम आप के बडे अभारी हैं.

संघकी तर्फ से.

सुखदेव सहाय ज्वाला प्रसाद

सहाय-मुनिमंडल

अपनी छत्ती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बाल ब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्रीअमोलक ऋषिजीके शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी. तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी. इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाका बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोपचार का संयोग मिला. दो प्रहर का व्याख्यान, प्रसंगीसे वार्तालाप,कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखरू पूर्ण सके. इस लिये इस कार्य बहक उक्त मुनिवर्गों का भी बडा उपकार है.

और भी-सहायदाता

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहनलालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी, तपस्वीजी माणकचन्दजी, कवीवर श्री अमी ऋषिजी,सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी.प. श्री नथमलजी, पं.श्री जोरावरमलजी. कविवर श्री नानचन्द्रजी.प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी.गुणज्ञसतीजी श्री रंभाजी. धोराजी सर्वज्ञ भंडार,भीनासरवाले कनीरामजी बहादरमलजी बॉठीया, लीबडी भंडार,कुचेरा भंडार,इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्माति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है. इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं.

शास्त्र-प्रकाशक

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ठ दृढधर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महा-लाभके लोभी बन जैन साधुमार्गीय धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने को रु.२००००, का खर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु. ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नही होते भी आपने उस ही उत्साह से कार्य को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों की गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

हैद्राबाद सिकन्द्राबाद जैन संघ

आवश्य कीय सूचना

झोनाला (काठियावाड) निवासी मणीलाल शीवलाल जो शास्त्रोद्धार कार्यालय का मेनेजर था और जो शास्त्रोद्धार जैसे महा उपकारी और धार्मीक कार्य के हिसाब को संतोष जनक और विश्वासनीय ढंग से नहीं समझा सकने के सबब से हमको पूर्ण अविश्वास हो गया और आपखुद घबरा कर बिना इजाजत एक दम चलागया इस लिये जो प्रेस अखबार और धार्मीक कार्य के लिये मणीलाल को देना चाहाथा सो उसकी अप्रमाणिकता और घोटाला देखकर उस को नही देते हुवे आग्रा निवासी जैन पथप्रदर्शक मासिक के प्रसिद्ध कर्ता बबू पदम सिंघ जैनको धार्मीक कार्य निमित्त दिया गया है सर्व सज्जन उस अखबार से फायदा उठावें

ज्वाला प्रसाद

निशीथ सूत्र की प्रस्तावना.

नमस्यामी विशुद्धात्मा, विशुद्ध पथ प्रवेदिकं । निशीथ छेद सूत्रस्य कुरुते वार्तिकं मया ॥१॥

जो विशुद्धात्मा और विशुद्ध-न्याय पथ के प्रदर्शक जिनेश्वर भगवंत हैं उन को नमस्कार करके इस निशीथ नामक छेद सूत्र का हिन्दी भाषानुवाद करता हूं. इस का नाम निशीथ है अर्थात् जिस प्रकार शिक्षक शिष्य को सुधारने के लिये नसीयत-हित शिक्षा करते हैं तैसे इस में भी तीर्थंकरोंने साधुओं को नसीयत की है. २मोक्ष पथ से आत्मा को शुद्ध कर्ता, ३ उन्मार्ग प्रवर्तक को दंड कर्ता, ४ अगड सूत्री को तीन दिन से अधिक यह सूत्र पढे बिना रहना नहीं. ५ इस का पठन किये विना गच्छ की आगेवानी न हो सके. ६ इस के पठन विना शुद्धाचार पाल नहीं सके, ७ मोक्ष पंथ भूले को पथ लगानेवाला, ८ गुण रूप धान्य का दोष रूप कचरे की शुद्धी करनेवाला, इत्यादि कारण इस सूत्र के होने से इस को निशीथ सूत्र कहते हैं. हरेक कार्य का सुधारा शुद्ध पुरुषों की हित शिक्षा के मानने से ही होता है इस लिये आत्मा सुधारे के इच्छक को जिनेन्द्र प्रकाशित इस सूत्र कथित हित शिक्षण को मान्य कर पालन कर आत्मोद्धार कर्ता होना चाहिये.

इस सूत्रकी एक प्रत तो कच्छ देश पावन कर्ता आठ कोटी मोटी पक्ष के श्री नागचन्द्रजी महाराज की तरफ से प्राप्त हुई उस से तथा तीनों साधुओं की दीक्षापर भीनासरवाले बादरमलजी बांठीया की तरफ

से आई हुई मत पर से यथामति शुद्ध वृद्धि कर भाषानुवाद किया है प्रायश्चित का खुलासा श्री नागचन्दजी महाराज के पास से नशीथ सूत्र की हुंडी प्राप्त हुइ उस पर से लिखा है. इस में जो कोई अशुद्धि रही हो उसे शुद्ध कर पठन करने की विद्वरों से विज्ञप्ति है.

निशीथ सुत्र की विषयानुक्रमाणिका.

इत्यानुक्रमाणिका.

षड्विंशतितम-निशिथ सूत्र-तृतीय छेद

॥ पहिला उद्देशा ॥

सूत्र

नमो-सुयदेवयाए, जे भिक्खू हत्थकम्म सूत्र करेति, करंतंवा साइज्जइ ॥१॥ जेभिक्खू अंगादाणं—कट्टेणं वा, कलिंचेण वा, अंगुलियाए वा, सिलागए वा, संचालेइ

अर्थ

यहां प्रथम मंगला चरण के लिये सूत्र देव अर्हन्त भगवंत को सूत्र के गुंथन करता गणधर को और सूत्र दान दाता आचार्यादि को नमस्कार कर साधु का आचार के उदेश रूप निशित सूत्र कहते हैः-जो भिक्षु (निर्वद्य भिक्षा वृति से उपजीविका करने वाले या अष्ट कर्म को क्षोभित करने साध्वी वाले-(यहां सूत्र मे साध्वी का नाम नहीं कहा तथापि उपलक्षण से साध्वी भी ग्रहण करना) जो साधू हस्त कर्म करे-अर्थात् अपनी हस्तांगुली आदि से गुह्य इन्दीय से वीर्य पात करे ॥१॥जो साधु अंग आदान (जो शरीर कर कर्मों का आदन-बंधन करे ऐसा शरीर पुरुष चिन्ह-लिंग या स्त्री चिन्ह योनि इसे काष्ट की नली में प्रक्षेप कर. या काष्ट अंदर प्रक्षेप कर. एसे ही वांस की नली में प्रक्षेप कर

सूत्र

संचालंतं वा, साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं-संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्जवा, संवाहंतं वा, पलिमद्देतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं-तेलेण वा, घएण वा, वासाएणवा, णवणीए वा, अभंगेज्ज वा मंक्खेज्जवा, अभ्भंगंतं वा मक्खंत वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं-कक्केण वा, लोद्देण वा, पउमचुण्णेणं वा, ण्हाणेण वा, सिणाणेण वा, चुण्णेहि वा, वण्णेहि वा, उवट्टेइ वा' परिवट्टेइ वा, उवट्टतं वा, परिवट्टतं वा साइज्जइ

अर्थ

वा बांस अंदर प्रक्षेप कर, अंगुलीयों से ग्रहण कर या अंगुली अंदर प्रक्षेप कर, लोह प्रमुख की नली में प्रक्षेप कर या लोह प्रमुख की शलाइ अंदर प्रक्षेप कर, संचालावे,-हलावे, दूसरा हलाता हो उसे अच्छा जाने * ॥ २ ॥ जो साधु अंगादान का मर्दन करे बारम्बार, मर्दन करे, मसलते मर्दन करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु अंगादान स्त्री पुरुष के चिन्ह को तेलकर, घृत कर, चरबी कर, मक्खन कर अभंगन करे लगावे, लगाकर, मर्दन करे, ऐसे कर्तव्य दूसरा करता हो उसे अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु अंगादान को कोष्टक कर लोद्र कर पद्मचूरण कर तथा केशर कर. पीठी करे स्नान करावे पखाले, सुगंधी चूर्ण का अबीरादि वर्ण का उगटना करे. दूसरा लगाता हो उगटना करता हो उसे अच्छा जाने

* जिस प्रकार सूते सिंह को जाग्रत करने से वह घात करता है वैसी उक्त प्रकार से तथा आगे कहेंगे उस प्रकार से काम जाग्रत करने से संयम की घात होती है.

सूत्र

॥ ५ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं—सीउदग वियडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोइज्ज वा, उच्छोलेतं वा, पधोयंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं-णिच्छलेइ, णिच्छलंतं वा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं—जिग्घइ, जिग्घंतंवा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं-अण्णयरंसि अचित्तंसि सोयगंसि अणुप्पविसित्तए सुक्कपोग्गले णिग्घाएइ, णिग्घायंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जेभिक्खू साचित्तंगद्धं जिग्घइ जिग्घंतं, वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जेभिक्खू सचित्तं

अर्थ

॥ ५ ॥ जो साधु अंगादान को अचित्त शीतल पानी (धोवनादि) कर, अचित्त गरम पानी कर थोडा धोवे, वहुत धोवे, थोडे धोते को वहुत धोते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु अंगादान के ऊपर की त्वाचा दूरकर-ऊपर कर अन्दर का भाग उघाडा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु अंगादान को घ्राणेन्द्रिय कर सूंघे-हाथ से मशल नाक को लगावे, दूसरा सूंघता हो उसे अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु अंगादान को अन्य कोई आचित्त श्रोत्र छिद्र हो उस में प्रक्षेप कर शुक्र के पुद्गलों निकाले. अन्य शुक्र पुद्गल निकालनेवाले को अच्छा जाने ॥९॥ जो साधु सचित्त पुष्पादि सुगंधी वस्तुको सूंघे,अन्य सूंघते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु सचित्त द्रव्य पर रक्खा हुवा सुगंधी द्रव्य को सूंघे, सूंघते को

पइठिय गंधं जिग्घइ, जिग्धंतं वा साइज्जइ ॥११॥ जे भिक्खू पदमगं वा, संकामं वा अवलंणं वा, अणउत्थिएणं वा गारत्थिएणं वा करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू दगविणियं अणउत्थिएहिं वा गरत्थिएहिं वा करेइ, करंतं वा साइज्जइ॥१३॥ जेभिक्खू सिकुगं वा, सिकुगणंतं वा, अणउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा करेइ, करंतं साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू सोतियं वा, रज्जूयं वा, चिलमिलि वा, अणउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १५ ॥ जेभिक्खू सूचीए, उत्तरकरणं,

अर्थ

अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु जिस रास्ते में कीच आदि से पांव को बचाने पाषानादि की स्थापना तथा ऊंचेस्थान पर चढने के लिये अलंबन डोरी सीडी आदि की स्थापना, किसी अन्य तीर्थिक ताप-सादि के पास अथवा गृहस्थ श्रावकादि के पास करावे. कराते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु पानी भराता हो उसे निकलने की मनाल या नाली (गटर) अन्य तीर्थिक व गृहस्थ श्रावक के पास करावे. कराते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु सूत की डोरी, ऊनका नाडा, सणकी रज्जु-रसी, और चिलमिली (आहार करने शयन करने के लिये वस्त्र की कोटडी) खीला डोरी सहित. अन्य तीर्थिक या गृहस्थ-श्रावक के पास करावे, कराते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु छींका अथवा छींके का अच्छादन अन्य तीर्थिक ग्रहस्थ के पास करावे, कराते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु सूई को

सूत्र

अणउत्थिएणवा, गारात्थएण वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जेभिक्खू पिप्पलगस्स उत्तरकरणं अणउत्थिएणवा, गारत्थिएणवा करेइ, करंतंवा साइज्जइ ॥ १७ ॥ जेभिक्खू णक्खच्छेयग्गस्स उत्तरकरणं अणउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू कण्णसोहणग्गस्स उत्तरकरणं अणउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू अणट्ठाइं सूइं जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ एवं पिप्पलगं ॥ २१ ॥ एवं णक्खच्छे-

अर्थ

तीक्ष्ण साफ सीधी. पश्चात् भाग टूटे तो बराबर अन्य तीर्थिक या ग्रहस्थ के पास करावे कराते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु पिपलिका (कैंची-कतरनी) को तीक्ष्ण अथवा पश्चात भाग बराबर अन्यतीर्थक के पास तथा ग्रहस्थ के पास करावे, करने को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु नख काटने की-नेहरनी की तीक्षणधार अथवा टूटी हो तो पीछे का भाग बराबर अन्यतीर्थक तथा ग्रहस्थ के पास करावे तथा कराने वाले को अच्छा जाने ॥१८॥ जो साधु कान में से मेलनिकालने की कान सोधनी चाटूडी को अन्यतीर्थक या ग्रहस्थ के पास समरावे- साफ करावे कराते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु विना कारन सूई की याचना करे याचना करने वाले को अच्छा जाने ॥२०॥ जो साधु विना कारन पिपीली (कतरनी) की याचना करे करने वाले को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु नख छेदन की

यणयं ॥ २२ ॥ एवं कण्णसोहणयं ॥ २३ ॥ जे भिक्खू अविहिए सुइ जायइ जायंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ एवं पिप्पलयं ॥ २५ ॥ एवं णक्खच्छेयणयं ॥२६॥ एवं कण्णसोहणयं ॥ २७ ॥ जे भिक्खू अप्पणो एगस्स अट्ठाए सूइजाइत्ता अण्णमण्णस्स अणुपदेइ, अणुपदंतं वासाइज्जइ ॥ २८ ॥ एवं पिप्पलयं ॥ २९ ॥ एवं णक्खच्छेयणयं ॥ ३० ॥ एवं कण्णसोहणयं ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू पाडिहारियं

नेहरनी की विना कारन याचना करे करने वाले अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु-कर्ण सोधनी की विना कारन याचना करे करते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु विधी रहित अर्थात् पडीहारी (पीछी दूंगा) ऐसा कहे विना सूइ याचे, याचेत को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ ऐसे ही अविधी से पिपली,कैंची याचे, याचते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ ऐसे ही अविधी से नख छेदन-नेहरनी याचे, याचते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ ऐसे ही अविधी से कान सोधनी-चाटूडी याचे याचते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु अपने अकेले के लिये सूई याचकर लाया और वह परस्पर आपस में अन्य साधु को देवे देते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ ऐसे ही अपने लिये पिपली-कैंची लाया वह अन्य साधु को देवे देते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ ऐसे ही अपने लिये नहरनी लाया वह अन्य को देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ ऐसे ही अपने अकेले के लिये कर्ण सोधनी लाया वह आपस में दूसरे साधु को देवे देते को अच्छा जाने ॥ ३१ ॥ जो साधु पाडिहारी [काम कर पीछी दूंगा ऐसा कह कर] सूई की याचना करे और

सूत्र

सुयंजाइत्ता वत्थसिविस्सामित्ति, पायंसिवेइ, सिवंतंवा साइज्जइ ॥ ३२ ॥ जे भिक्खू पडिहारियं पिप्पलयं जाइत्ता वत्थंछिदिस्सामित्ति, पायंछिदइ छिदंतंवा साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खू पडिहारियं णहच्छेयणय जाइत्ता णहंछिदिस्सामित्ति, सलुद्धरणं करेइ, करंतंवा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू पडिहारियं कण्णसोहणयं जाइत्ता, कण्णमलं णिहरिस्सामित्ति, दंतमलं वा, णखमलं वा निहरइ, निहरावंतं वा साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जे भिक्खू अविहीए सूइ पच्चप्पिणइ, पच्चप्पिणंतंवा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ एवं पिप्पलयं ॥ ३७ ॥ एवं णहच्छेयणयं ॥ ३८ ॥ एवं कण्णसोहणयं

अर्थ

कहे कि मैं इस से वस्त्र सींवूंगा. फिर उस से पात्रा आदि अन्य सींवे सींवते को अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ ऐसे ही पाडीहारी कतरनी लाया और बोले कि मैं इस से वस्त्र कतरूंगा और फिर उस से पातरा वगैरह अन्य कतरे, कतरते को अच्छा जाने ॥३३॥ ऐसे ही नख छेदूंगा, ऐसा कहकर नेहरनी लाया और फिर उस से कांटा निकाले निकालने को अच्छा जाने ॥३४॥ ऐसे ही कान का मैल निकालूंगा. ऐसा कहकर पाढीहारी कर्ण सोधनी लाया और फिर उस से दांत का तथा नखादि का मैल निकाले निकालने को अच्छा जाने ॥३५॥ जो साधु अविधी से सूई पीछी देवे अर्थात् हाथोहाथ हाथ में देवे तथा फेंक देवे. ऐसे ही अविधी से देते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ ऐसे ही अविधी से कैंची पीछी देवे देते को अच्छा जाने. ॥ ३७ ॥ ऐसे ही अविधी से नेहरनी पीछी देवे, देते को अच्छा जाने. ॥ ३८ ॥ ऐसे ही अविधी से कर्ण सोधनी पीछी देवे देते को

सूत्र

॥ ३९ ॥ जे भिक्खू लाउपायं वा, दारुपायं वा, मट्टिपायं वा अणउत्थिएण वा गारत्थिएण वा, परिघट्टावेइ वा, संठावेइ वा, जंमावेइ वा, अलमप्पणो करणयाए सुहुममवि णोकप्पइ जाणमाणे सरमाणे अण्णमण्णस्स वियरेइ, वियरंतंवा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू दंडयं वा, लट्ठियं वा, अवलेहणियं वा, वेणुंसूइं वा, अणउत्थिएण वा गारत्थीएण वा परिघट्टावेवइ वा सो चेव मगिलओ गमओ अणुगंतव्वो जाव साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू पायस्स एकंतुडियं तुडेइ, तुडंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥

अर्थ

अच्छा जाने ॥ ३९ ॥ जो साधु—१ तुम्बे का पात्रा, १ लकडे के पात्रा, ३ मट्टी स पात्रा, अन्यतीर्थीक—अन्यमती तपसादि के पास तथा ग्रहस्थ श्रावक के पास. घसा पूंछा कर साफ करावे, बिगडा हुवा विभाग सुधरावे, समरावे, किंचित भी विषम होवे उसे समकरावे. नवे तैयार करावे, तथा अपना सूक्ष्म थोडासा भी कोई भी काम करावे, करातेको अच्छा जाने ॥४०॥ जो साधू दंडा[मनुष्य प्रमाण]लाठी [शरीर प्रमाण] कर्दम फेडनी (चौमसे आदि में कर्दम से पांव भरावे उसे पूंछने की लकडी के बांस के खपाटीये) इन को अन्य तीर्थिक तथा गृहस्थ के पास सुधरावे समरावे यावत् सब उक्त प्रमाने कहना यावत् अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु पात्रेको एक थीगला लगावे अर्थात् पात्रा फूटे विना शोभा

सूत्र

जे भिक्खू पायस्स परीतण्हं तुडियाणं तुडेइ, तुडंतं वा साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू पायं अवीहीए तुडेइ, तुडंतं वा साइज्जइ ॥४४॥ जे भिक्खू पायं अविहीए बंधइ बंधतं वा साइज्जइ ॥ ४५ ॥ जेभिक्खू पायं एगेणं बंधेणं बंधइ, बंधंतंवा साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू पायं परातिण्हं बंधणाणं बंधइ, बंधंतंवा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जेभिक्खू अइरेग बंधणंपायं दिवढाओ मासाओ परेण धरेइ, धरतंवा साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू वत्थस्स एगंपडियाणियं देइ देयंतंवा साइज्जइ ॥ ४९ ॥

अर्थ

के निमित्त कोई चिन्ह करे ॥ ४२ ॥ जो साधु पात्रे को तीन थेगली से ज्यादा थेगली [कारी-पेमन] लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ जो साधु पात्र को विना विधी से अनशोभित लगे या मर्यादा उल्लंघन होवे इस प्रकार थेगला लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ जो साधु फूटे पात्रे को विना विधी से बंधन से बंधे अर्थात् ढीले बंधे जिस में जन्तु प्रक्षेप कर जावे इस प्रकार बांधे तथा दूसरे के पास बंधावे ॥ ४५ ॥ जो साधु पात्र को एक ही बंध से बांधे बांधते को अच्छा जाने ॥ ४६ ॥ जो साधु पात्रे को तीन बंधन के उपरांत बंध बंधे. बांधते को अच्छा जाने ॥ ४७ ॥ जो साधु पात्र को अतिरिक्त [अविधी] बंधन से बांधकर देढ महिने उपरांत रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ४८ ॥ जो साधु वस्त्र को एक थेगला (पेमन) शोभा के वास्ते लगावे किसी भी प्रकार के चिन्ह करे करते को अच्छा जाने

सूत्र

जे भिक्खू वत्थस्स परंतिण्हं पडियाणियं, देइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्खू अविहीए वत्थंसिव्वइ, सिवंतं वा साइज्जइ ॥ ५१ ॥ जे भिक्खू वत्थस्स एगंफलियं गंठियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ५२ ॥ जे भिक्खू वत्थस्स परंतिण्हं फालियं गंठियाणं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ५३ ॥ जे भिक्खू वत्थस्स मेगं विफालियंदेइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ५४ ॥ जे भिक्खू वत्थस्स परंतिण्हं विफलियं गंठियं देइ,

अर्थ

॥ ४९ ॥ जो साधु वस्त्र चदर (पछोडी) आदि को तीन थेगले (कारी-पेवन) उपरांत लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥ ५० ॥ जो साधु विना विधी से वस्त्र सींवे अर्थात् जिस प्रकार ग्रहस्थ शोभा के निमित जाली कंगुरे वगैरे करते हैं, बखीया आदि डालते हैं तथा लेंगे या अंगरखे में घेर रखते हैं इत्यादि प्रकार के वस्त्र की सम्यक् प्रकार प्रति लेखना न हो ऐसे अविधी से वस्त्र सींवे सीवते को अच्छा जाने ॥ ५१ ॥ जो साधु शोभा के निमत वस्त्र को एक फलित के [पल्ले के] एक गंठी दे देते को अच्छा जाने ॥ ५२ ॥ जो साधु वस्त्र को तीन फाली-तीन गांठ उपरांत देवे देते को अच्छा जाने (यह ग्रन्थी जीर्ण वस्त्र को विशेष काल चलाने दी जाती है) ॥ ५३ ॥ जो साधु वस्त्र को विफलित विनाकारण ममत्व भाव कर गांठ देकर बंध रखे. रखते को अच्छा जाने ॥ ५४ ॥ जो साधु वस्त्र को विफलित विनाकारण

सूत्र

देयंतंवा स इज्जइ ॥ ५५ ॥ जे भिक्खू वत्थं अविहीए गंठइ, गंठतंवा साइज्जइ ॥ ५६ ॥ जे भिक्खू वत्थं अइजाएणं गहेइ, गहंतं वा साइज्जइ ॥५७॥ जे भिक्खू अइरेग गाहियं वत्थं परंदिवढाओ मासाओ धारेइ, धारंतंवा साइज्जइ ॥ ५८ ॥ जे भिक्खू गिहं धुमं अणउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिसाडावेइ, परिसाडावंतंवा साइज्जइ ॥ ५९ ॥ जे भिक्खू पूइकम्मं भुंजंतंवा साइज्जइ ॥ ६० ॥

अर्थ

तीन गांठ उपरांत देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ५५ ॥ जो कोई साधु वस्त्र को अविधी से गांठ बंधे जो अशोभनीक लगे ऐसी गांठ देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ५६ ॥ जो साधु वस्त्र श्वेत रंग सिवाय तथा जो सूतादि पांच प्रकार के वस्त्र सिवाय अन्य जाति के वस्त्र ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने॥५७॥ जो साधु अतिरिक्त काल—अधिक लिया वस्त्र देढ (१॥) महिने उपरांत रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ५८ ॥ जो साधु जिस घर मे रहा उस घर में धूंवा जमा हो उसे अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के पास साफकरावे, करते को अच्छा जाने ॥ ५९ ॥ और जो साधु पूतीकर्म आहार अर्थात् निर्दोष आहार में सदोष आहार किंचित मात्र भी मिला हो उस निर्दोष आहार को भोगवे ॥ ६० ॥ यह ६० बोल कहे इस में किसी भी बोल का सेवन करने वाले साधु को गुरु मासिक प्रायश्चित आता है.

सूत्र

तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारठाणं, अणुग्गाइयं ॥ निसीहिज्झयण पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ * * * * *

अर्थ

अर्थात् इन साठ ही बोल में से अलग २ कोई भी बोल सेवन करे तो गुन मासिक प्रायःश्चित्त आताहै, परवश्यता से तथा बिना उपयोग से सेवन किया होतो जघन्य ४, मध्यम, १५ उत्कृष्ट ३० नीवीका प्रायःश्चित्त, आतुरता से उपयोग सहित सेवन किया होतो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट ३० आयंबिल का प्रायःश्चित्त. और मोहनीय कर्मोदय से मूर्च्छा भाव से सेवन किया होतो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट ३० उपवास का प्रायःश्चित्त. तत्त्व गुरुगम्य. इति नीसित सूत्रका प्रथम उद्देशा संपूर्ण ॥१॥

॥ दूसरा उद्देशा ॥

जे भिक्खू दारुदंडयं पायपुच्छणं करेइ, करंतंवा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू दारुदंडयं पायपुच्छणं गिण्हइ, गिण्हंतंवा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू दारुदंडयं पायपुच्छणयं धरेइ, धरंतंवा साइज्जइ ॥ ३ ॥ एवं वियरेइ ॥ ४ ॥ एवं परिचाएइ ॥ ५ ॥ एवं परिभुंजइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू दारुदंडयं पायपुच्छणयं परं दिवड्ढाओ

अर्थ

जो भिक्षुक-निर्वद्य भिक्षावृत्ति से उपजीविका तथा अष्टकर्मों का क्षोभित करने वाले साधु [यहां उपलक्षण से भिक्षुणी-साध्वी भी ग्रहण करना] लकडी की दंडीवाला रजोहरण नसीतिया (कपडा) चढाये विना बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु लकडी की दंडी का रजोहरण नसीतिया विना ग्रहन करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु लकडी की दंडी का रजोहरण नसीतिया विना का रखे रखते को अच्छा जाने ॥३॥ऐसे ही रजोहरण को लेकर विचरे अर्थात् ग्रामानुग्राम विहार करे. विहार करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ ऐसे ही रजोहरण दूसरे को रखने की अनुज्ञा दे देते को अच्छा जाने ॥५॥ ऐसा ही रजोहरण आप भोगवे उपयोग में लेवे भोगवते को अच्छा जाने॥६॥ जो साधु कदापि लकडी की दंडी का रजोहरण विना नसीतिये का विना कारण देढ(१॥)माहिने उपरांत रखे रखते को अच्छा

सूत्र

मासाओ धरेइ धरंतंवा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जेभिक्खू दारुदंडयं पायपुच्छणयं विसुयावेइ विसुयावंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू अचित्त पइठियं गंधंजिग्घइ जिग्घंतंवा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जेभिक्खू पदमग्ग वा, संकामं वा, अवलंवणं वा, सयमेव करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ एवं दगवीणियं ॥ ११ ॥ एवं सिक्कगंवा, सिक्कगणंतगं वा ॥ १२ ॥ एवं सोतियं वा, रज्जूए वा, चिलमिली वा ॥ १३ ॥ जे भिक्खू सूचिए उत्तरकरणं सयमेव करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥१४॥

अर्थ

जाने ॥७॥ जो साधु लकडी की दंडी का रजोहरण दंडीफल आदि (शोभा के लिये) धोवे धोते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ ※ जो साधु निर्जीव प्रतिष्ठ गंध अर्थात् चंदन अतरादि किसी अचित्त स्थान व भाजन में हो उसे शोक निमित्त सूंघे सूंघाते को अच्छा जाने ॥९॥ जो साधु कर्दम के पंथ में तथा चडने उतरने के स्थान में काष्ठ पत्थर मट्टी वगैरह डाले पंक्तिये अवलम्बन आप बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥१०॥ ऐसे ही आप पानी निकलने को मोरी लगावे नाली बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ ऐसे ही छींका लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ ऐसे ही सूत की डोरी अथवा जाली नाडी निवार चिलमिली आदी बांधने की आप बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु सूई को स्वयंमेव सुधारे काठ लगा हो

※ दारु दंड रजोहरण का अर्थ भुंज का रजोहरण भी किया है भूंज जो पानी के अंदर घास होता है उस की. होती है

एवं विप्पलयस्स ॥ १५ ॥ एवं णहच्छेयणगस्स ॥ १६ ॥ एवं कण्णसोहणगस्स ॥ १७ ॥ जे भिक्खू लहूसग्गं फरुसवयइ, वयंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू लहूसंगा मुसंवदेइ, वदंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू लहूसग्गं अदत्तं आदियइ, आदियंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू लहूसग्गं सीउदग वियडेणवा, उसिणोदग वियडेण वा, हत्थाणि वा, पायाणि वा, कण्णाणि वा, अच्छिणि वा, दंताणि वा, णहाणि वा, मुहं वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा, उच्छोलंतं वा पधोयंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू कसिणाणि चम्माइं धरेइ, धरंतं वा

अर्थ

कड़ दूर करे बाँकी को सीधी करे. करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ ऐसे ही पिपली-कतरनी को सुधारे ॥ १५ ॥ ऐसे ही नेहरनी को सुधारे ॥ १६ ॥ ऐसे ही कर्ण सोधनी को सुधारे ॥ १७ ॥ जो साधु थोडासा भी कठोर अमनोज्ञ वचन अन्य को बोले बोलावे बोलते को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु थोडा सा भी मृषावाद झूठ बोले बोलते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु थोडीसी भी चोरी करे, करते को अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु अचित्त ठंडा पानी (धोवन पानी) कर, अचित्त गरम पानी कर-हाथ, पांव, कान, आंख, दांत, नख मुख धोवे वारम्वार धोवे, एकवार अथवा वारम्वार धोते को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु अखंड चर्म [चमडा] रखे. रखते को अच्छा जाने. [बृहत्प

साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू कसिणाइं वत्थाइं धरइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू अभिन्नाइ वत्थाइ धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू लाउपायं वा, दारूपायं वा, मट्टीयापायं वा, सयमेव परिघट्टेइ वा, संठ्ठवेइ वा, जंमावेइ वा, परिघट्टंतं वा, संठ्ठवंतं वा, जंमावंत वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ एवं दंडयं वा लट्ठियं वा अवलेहणं वा, वेणुसूइयं वा, जाव जंमाइवंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू णियगं गवेसियगं, पाडग्गिहगं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू

कल्प में चमडादिक रात्री कारण सिर रखने का कहा है॥२२॥जो साधु वस्त्र का स्थान अखंड रखे, रखतेको अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु विना फाडा पछोडी चोलपटादि का वेत विना किया वस्त्र रखे रखनेको अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु तुम्बे के पात्र, काष्ट के पात्र, मट्टी के पात्र, स्वयंमेव शोभा के लिये खराब होवे उसे अच्छा करे, मुख पींदादी संस्थापे, बराबर जमावे, दूसरा अच्छा करता हो सुधारता हो जमाता हो उसे अच्छा जाने ॥ २५ ॥ इस ही प्रकार शोभा निमित्त दंडे को लकडी को वांस की खापटी को, वांस की शलाका को, काँटे निकालने के हिंगोरादि के काँटे को, आप सुधारे अन्य सुधारते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ जो साधु गुरु आज्ञा विना अपना स्वयं का याचना किया हुवा पात्र रखे, रखते को अच्छा

परगवेसियगं पडिग्गहगं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ॥ २८॥ जे भिक्खू वरगवेसियगं पडिग्गहगं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू बलगवेसियगं, पडिग्गहगं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥ जे भिक्खू लवगवेसियगं, पडिग्गहगं धरेइ. धरंतंवा साइज्जइ ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू नितियं अग्गपिंडं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ

सूत्र

अर्थ

जाने॥२७॥जो साधु गुरु की आज्ञा विना दूसरे ने लाकर दिया पात्र रखें रखते को अच्छा जाने (तथा अकल्पनीक ॥ २८॥ जो साधु मनुष्य का गवेषा हुवा पात्र रखे. अर्थात् वह मुझे नहीं देता है इस लिये बडे जाति का पात्रा रखे) मनुष्य को बीच में रखे जिस से उस की शरण से वह देवे, ऐसा पात्रा रखे रखते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो साधु बलत्कार कर याचना कर पात्रा रखे. अर्थात् अपना तपादि का बल बताकर या राजा आदि का डर बताकर जबरदस्ती से पात्र ग्रहण कर रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ जो साधु पात्रे के मालक को दान के फल बतला कर उस से पात्रा याच कर रखें रखते को अच्छा जाने ॥ ३१ ॥ जो साधु सदैव अग्रपिंड भोगवे * तथा भोगते को अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ जो

* जो प्रथम रोटी उतरती है तथा हंडी के ऊपर के चांवलादि होते हैं उसे अग्रपिंड कहते है. वह बहुत से स्थान दान में ही दिये जाते हैं. तथा देवादि को चढाये जाते हैं. वह साधु को लेना उचित नहीं है. क्यों कि दूसरे के अंतराय लगे.

॥ ३२ ॥ जे भिक्खू णितियं पिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खू नितियं अवड्डभागं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू णितियं भागं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जे भिक्खू णितियं उणड्डं भागं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू णितियं वासंवसइ, वसंत वा साइज्जइ ॥ ३७ ॥ जे भिक्खू पुरे संथवं वा पच्छा संथवं वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ३८ ॥ जो

साधु सदैव एक ही घर का आहार पानी भोगवे, भोगते को अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु नित्य सदैव अर्ध भाग भोजन अर्थात् कितनेक स्थान बनाया भोजन का या भाने में लिया भोजन का आधा हिस्सा दान में देने निकाला जाता है पुण्य निमित्त रखा वह अर्ध भाग भोजन आप भोगवे तथा भोगवते को अच्छा जाने. ॥ ३४ ॥ जो साधु सदैव भाग का भोजन अर्थात् बने भोजन में से जो कुछ हिस्सा दानार्थ निकाल के रखा हो वह भोजन का भाग आप भोगवे तथा भोगवते को अच्छा जाने. ॥ ३५ ॥ जो साधु पुण्यार्थ निकाले भोजन में का कुछ भी भाग भोगवे भोगवते को अच्छा जाने. ॥ ३६ ॥ जो साधु मास कल्प तथा वर्षा ऋतु की मर्यादाका भंग करे [विना कारण] सदैव एक ही स्थान रहे रहते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु दानदिये पहिले तथा दानदिये पीछे दातार की प्रसंशा करे.

* इस प्रकार के भोजन भोगवने से अन्य जीवों को अंतराय भी लगती है और उद्देशिक आधाकर्मी अज्झोयर स्थापना वगैरे दोषों भी लगते है.

भिक्खू सममाणे वा वसमाणे वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे पुरेसंथुयाइयाणि वा, पच्छा संथुइयाणि वा कुलाइं पुव्वामेवा अणुपविसित्ता पच्छा भिक्खायरियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू अणउत्थिएण वा गारात्थिएण वा, परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धिं गाहावइ कुलं पिंडवाय पडियाए अणुपविसइ वा णिक्खमइ वा, अणुपविसंतं वा णिक्खमंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू अणउत्थिए वा गारात्थिए वा, परिहारिओ अपरिहारिएणं सद्धिं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खम-

करते को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ जो साधु वृधावस्थादि कारण विना सशक्त शरीर होवे. शीतकाल ऊष्णकाल में मास कल्प और चौमासा के काल उपरांत रहता हुवा तथा ग्रामानुग्राम विहार करता हुवा. पूर्व परिचित संसार में जिनके साथ विशेष परिचय था. और पश्चात परिचित सो दीक्षा लिये बाद जिन से विशेष परिचित हो उन गृहस्थ के घरों में तथा पूर्व परिचित माता पिता भाइ बेनों के घरों में और पश्चात परिचित सासु सुसरे साले पुत्र पुत्रवधु के घरों में भिक्षा का काल होने पहिले ही तथा भिक्षा का काल हुवे बाद प्रवेश करे, प्रवेश करते हुवे को अच्छा जाने. ॥ ३९ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक के साथ गृहस्थ श्रावकादि के साथ, परिहारिक-सदोषी साधु के साथ, अपरिहारिक मूल गुण में दोषित परसत्थादि के साथ गृहस्थ के घर में आहार पानी आदि के वास्ते प्रवेश करे निकले, प्रवेश करते निकलते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक, गृहस्थ, परिहारिक साधु, अपरिहारिक

वा पविसइ वा, निक्खमंतं वा पविसंतं वा साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू अणउत्थिएण वा गारात्थिएण वा परिहारिएओ अपरिहारेणं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जइ, दुइज्जंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू अणयरं भोयण जाइं पडिगाहित्ता सुब्भि २ भुंजइ दुब्भि २ परिट्ठावेइ परिट्ठावंतं वा साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू अण्णयरं पाणग जाइं पडिग्गहित्ता पुप्फयं २ आइयंति, कसाइं २ परिट्ठवेइ, परिट्ठवेतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू मण्णुणे भोयण जायं पडिग्गाहित्ता, बहु परियावणं अदूरे तत्थ साहम्मियो संभोइया समणुणा अपरिहारिया संता परिवसंति तेण पुच्छिय

अर्थ

साधु के साथ थंडिल की भूमी में स्वध्याय की भूमी मे जावे जाते को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक, गृहस्थ, परिहारिक साधु, अपरिहारिक साधु के साथ ग्रामानुग्राम विचरे. विचरते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु अनेक प्रकार के भोजन ग्रहण कर उस में से अच्छा २ भोजन तो खा जावे और खराब २ परीठा देवे. ऐसे काम करते को अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ जो साधु आहार पानी ज्यादा ले आया हो, खाये बाद बहुत बचा हो, उसे वहां नजीक में कोई स्वधर्मिक शुद्धाचारी संभोगी निर्दोष योग्य शांत परिशांत साधु हे

सूत्र

अणिमंतियं परिट्ठावेई, परिट्ठावंतं वा साइज्जइ ॥ ४५ ॥ जे भिक्खू सागारिय पिंड गिहण्इ गिण्हंतं वा साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू सागारिय पिंड भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू सागारियं कुल अजाणिय; अपुच्छिय; अगवेसिय पुव्वामेव पिंडवाय पडियाए अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू सागारिय णिस्साए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय २ जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥ ४९ ॥ जे भिक्खू उडुबांद्धियं सिज्जा संथारयं परं पज्जोस

अर्थ

उन को पूछे विना उन की आमंत्रणा किये विना, जो परिठादेवे, ऐसे परिठाते को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु शैय्यांतर (मकान में उतरने की जिसकी आज्ञा ली हो उस के) घर का आहार पानी ग्रहण करे ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥४६॥ जो साधु शैय्यांतर के घरका आहार आदि भोगवे. भोगवतेको अच्छा जाने ॥ ४७ ॥ जो साधु शैय्यांतर का घर को विना जाने विना पूछे विना गवेषना किये पहिले आहार पानी लेने के वास्ते प्रवेश करे प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ ४८ ॥ जो साधु शैय्यांतर के नेश्राय से अर्थात् शैय्यांतर घर बता कर दलाली कर दिलावे ऐसा आहार पानी खादिम स्वादिम याचे, याचना करते को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु चौमासे में वर्षा ऋतु में पर्युसन तक भोगवने के लिये पाट

वणाओ उवायणावेइ, उवायणावंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्खू वासावासियं सिज्जा संथरयं परं दसराय कप्पाउ उवायणावेइ, उवायणावंतं वा साइज्जइ ॥ ५१ ॥ जे भिक्खू उडूबधियं वा वासावासियं वा सिज्जासंथारयं उवरिसिज्जमाणं पेहाए णओसारेइ, णओसारंतं वा साइज्जइ ॥ ५२ ॥ जे भिक्खू पाडिहारियं सिज्जासंथारयं दोच्चंपि अणुवेता बाहिं णीणेइ, णीणंतं वा साइज्जइ ॥ ५३ ॥ जे भिक्खू सागारियं सातियं सेज्जा संथारयं दोच्चंपि अणुणविता बाहिंणि णेइ, णीणंतं वा साइज्जइ ॥५४॥

अर्थ

पाटले लाया हो उन को अधिक काल तक-पर्योमन-संवत्सरी उपरांत भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥५०॥ जो कोई साधु चौमासे में संवत्सरी तक भोगवने पाटपाटले लाये हैं उन में जीव जंतू हो इस लिये वे संवत्सरी बाद दश रात्रि रखने कल्पते हैं दश रात्रि उपरांत रखे रखते को अच्छा जाने ॥ ५१ ॥ जो साधु पाट पाटला सेज्या संथारा लाया हो वह वर्षा ऋतु में वर्षा कर भींजता हो उसे वर्षाद में से उठाकर अलग नहीं रखे. नहीं रखते को अच्छा जाने ॥ ५२ ॥ जो साधु काल की मर्यादा बंध कर शैय्या संथारा लाया है उस को काल मर्यादा पूर्ण हुवे बाद भोगवे भोगवते को अच्छा जाने अथवा एक स्थानक छोड दूसरे स्थानक में जाते अन्य ग्राम जाते दूसरी वक्त मालक की आज्ञा लिया विना साथ लेजा जावे, ले जाते को अच्छा जाने ॥ ५३ ॥ जो साधु शैय्यांतर के पाट पाटले सेजा संथारा हो उसे दूसरे स्थानक में जाते शैयांतर की दूसरी वक्त आज्ञा मांगे विना ले जावे, ले जाते को अच्छा जाने ॥ ५४ ॥ जो साधु

सूत्र

जे भिक्खू पडिहारियं वा सागारियं संतिय सेज्जा संथारयं दोच्चंपि अणुणविता बाहिं णिणेइ णींणंतं वा साइज्जइ ॥ ५५ ॥ जे भिक्खू पाडिहारियं सेज्जा संथारयं आयाए अपडिहट्टु संपव्वयइ, संपव्वयंतं वा साइज्जइ ॥ ५६ ॥ जे भिक्खू सागारियं संतियं सेज्जा संथारयं आयाए अधिकरणकट्टू अणुपणिचा संपव्वयइ संपव्वयंतं वा साइज्जइ ॥ ५७ ॥ जे भिक्खू पडिहारियं वा सागारियं संतियं वा सेज्जा संथारयं विप्पणट्ठं न गवेसेइ, न गवेसंतं वा साइज्जइ ॥ ५८ ॥ जे भिक्खू

अर्थ

कितनेक शैयांतर के शैय्या संथारे और कितनेक दूसरे के शैय्या संथारे बाहिर अन्य स्थान जाते दोनों की आज्ञा मांगे विना मकान के बाहिर निकाले निकालते को अच्छा जाने ॥ ५५ ॥ जो साधु पडिहारिय शैय्यां संथारा लाया हुवा पीछा दिना दिया ही विहार कर जावे, जाते को अच्छा जाने ॥५६॥ जो साधु शैय्यांतर के तथा दूसरे के पाट पाटले शैय्या संथारा लाया है पाटादि विछाये. संथारा संथारा पडदाहि बंधा इत्यादि अधिकरण [बिखेरा] किया है उसे विना समेटे विहार कर जावे. जाते को अच्छा जाने॥५७॥ जो साधु परिहारीये शैय्यांतर के शैय्या संथारे नष्ट हुवे. बाद चाहिये सो दूसरे नहीं गवेषे नहीं गवेषते को अच्छा जाने ॥ ५८ ॥ जो साधु पास उपधी है. उस में से किंचित मात्र भी विस

सूत्र

इतरियंपि उवहि णपडिलेहइ णपडिलेहंतं वा साइज्जइ ॥५९॥ तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥६०॥ निसीह ज्झयणं बीओ उद्देसो सम्मत्तो॥२॥*

अर्थ

प्रति लेखी-विना पडिलेही रखे. विना पडिलेही उपधी रखने वाले को अच्छा जाने ॥ ५९ ॥ यह ५९ बोल में का किसी एक बोल का—दोष का कोई भी साधु अथवा साध्वी सेवन करे तो उस को लघु मासिक का प्रायश्चित्त आवे, अर्थात् उक्त काम जो परवश्यपने विना उपयोग से हुवा होतो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, एकासने का प्रायश्चित्त. अतुरता से इच्छा कर हुवा होतो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, आयंबिल का प्रायश्चित्त. और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्छाभाव से किया हो तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, उपवासका प्रायश्चित्त. इति नीशीथ सूत्रका दूसरा उद्देशा संपूर्णम् ॥२॥

॥ तीसरा-उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू आगंतारेसु वा, आरामगारेसु वा, गाहावइकुलेसु वा, परिवसहेसु वा, अणउत्थियं वा गारात्थियं वा-असणं वा पाणं वा खाइयं वा साइमं वा ओभासिय २ जायइ, तं वा साइज्जई ॥ १ ॥ जे भिक्खू आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ कुलेसु वा, परिया वसहेसु वा, अणंउत्थियाओ वा गारत्थियाओ वा-असण वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासियं २ जायइ जायंतं वा साइज्जइ ॥ २॥ जे भिक्खू आगंता-

अर्थ

जो कोई साधु साध्वी जिस स्थान में मुसाफर लोक आकर उतरे उस मुसाफरखाने में, २ आराम बगीचे में, गृह बनाकर कोई गृहस्थ रहा हो ऐसे बगीचे के घर में, ३ गृहपति-गृहस्थी रहता हो उस घर में, ४ परिव्राजिक-सन्यासी तापसादि रहते हों उन के वास में, ५ कोई अन्य तीर्थिक-अन्यमतावलम्बी तापस गृहस्थ हों तथा गृहस्थ-श्रावक जन हों उस से [एक वचन] अशन-अन की जाति-चांवल गोधूमादि, पाणी-ऊष्ण धोवनादि, खादिम-मिष्टान्न पक्वान्नादि, और स्वादिम चूरण-सोपारी आदि. यह चारों प्रकारका आहार जोर २ से पुकार २ कर याचे. या याचते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु मुसाफरखाने में बगीचे के बंगले में, गृहपति के घर में, परिव्राजिक के वास में, अन्य तीर्थिकों अथवा श्रावकों गृहस्थी हो उन से (अनेक वचन) अशनादि चारों प्रकार का जोर २ से पुकार २ कर याचे. याचते को अच्छा

सूत्र

रेसु वा आरामागारेसु वा, गाहावइकुलेसु वा, परियावहेसु वा अणउत्थिणी वा गारत्थिणी वा असणं वा ४, उभासिय २ जायइ जायंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू आगंतारेसु वा आरामगारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा अणउत्थिणीओ वा गारत्थिणीओ वा असणं वा ४, उभासिय २ जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइकुलेसु वा, परियावसहेसु वा, अणउत्थिउ वा गारत्थिउ वा कोउहल पडियाए पडियागयं समाणं असणं वा ४, उभासिय २ जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ एवं एतेणं

अर्थ

जाने ॥ २ ॥ जो साधु मुशाफरखाने में, बगीचे के बंगले में, गृहस्थी के घर में, तपस्वीयों के पास में अन्य तीर्थिका स्त्री से अथवा गृहस्थनी से [एक वचन] पुकार २ कर याचे, याचते को अच्छा जाने॥३॥ जो साधु मुशाफरखाने में, बाग के बंगले में, गृहस्थी के घर में, परिव्राजिक के मठ में बहुत अन्य तीर्थिकाओं व बहुतसी गृहस्थनीयों को पुकार २ के याचे, याचते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ [यह चार आलापक सहज याचने के कहे] जो साधु साध्वी मुशाफरखाने में, बगीचे के बंगले में, गृहस्थी के घर में, तपस्वीयों के आश्रम में, एक अन्य तीर्थिक, एक गृहस्थी कौतुक के लिये आया हो उस से अशनादि चारों आहार पुकार २ कर याचे, याचना करनेवाले को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ यह एक आलापक हुवा ऐसे ही

सूत्र

अभिलावेणं चत्तारिगामा ॥ ८ ॥ जे भिक्खू आगंतारेसु वा जाव परियावसहेसु वा अणउत्थियं वा गारत्थियं वा असणं वा ४, अभिहडं आहट्टु दिज्जमाणं पडिसेहित्ता तंमेव अणुवतियं तंमेव अणुवतियं परिवेढिय २ परिजविय २ ओभासिय २ जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥९॥ एवं एतेणं चेव चत्तारिगमा ॥१२॥ जे भिक्खू गाहवइकुलं पिंडवाय पडियाए पविट्ठे पडियाइक्खित्तेसमाणे दोच्चंपि तमेवकुलं अणुप्पविसइ,

अर्थ

कौतुक आश्रिय भी उक्त प्रकार चार आलापक कहना (यथा—१ एक अन्य तीर्थिक, तथा गृहस्थ, २ बहुत अन्य तीर्थिक, तथा बहुत गृहस्थ, ३ एक अन्य तीर्थिकनी तथा एक गृहस्थनी, और ४ बहुत अन्य तीर्थिकनीयों तथा गृहस्थनीयों. यों चार २ आलापक आगे भी जानना) ॥८॥ जो साधु साध्वी को मुसाफरखाने में से यावत् तापस के आश्रम में से अन्य तीर्थिक तथा गृहस्थी अशनादि चारों आहार सन्मुख लाकर देवे उस को निषेध करे की यह आहार मुझे नहीं कल्पता है. यों कहे से वह पीछाले जावे तब उस को सात आठ पांव गये बाद साधु उस के पास जाकर उस को चारों तरफ घेर लेवे. और वचन जाल डाल कर यों कहे कि यह जो तुम हमारे लिये लाये नहीं होवो तो हम लेते हैं, इस प्रकार याचना करे याचना करते को अच्छा जाने ॥९॥ जैसा यह एक का आलापक कहा एसे ही उक्त प्रकार चारों चार आलापक सनमुखलाने आश्रिय कहना ॥ १२ ॥ जो साधु साध्वी गृहस्थ के घर में आहार के लिये प्रवेश करते हुवे घर का मालिक निषेध करे कि घर में मत आवो. तो उसी वक्त फिर आवें. जरूर

सूत्र

अणुप्पविसंतं वा साइज्जइ॥१३॥जे भिक्खू संखडि पलोयणाए असणं वा४.पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू गाहावइकुलं पिंडवाए पडियाए अणुपविट्ठेसमाणे परंतिघरंतराओ असणं वा ४, अभिहंड आहट्टुदिज्जमाणं, पडिगहेइ, पडिगाहंतंवा साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खू अप्पणोपाए आमज्जेज्जवा पामज्जेज वा आमजंतं वा पामजंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू अप्पणोपाए संवहेज्जवा पलिमदेज्ज वा, संवाहंतं वा पलिमद्दंतं वा साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू

अर्थ

काम औषधादि का होवे तो दूसरी वक्त मालिक की आज्ञा मांगे विना प्रवेश करना कल्पे नहीं, और जो विना आज्ञा प्रवेश करे, तथा प्रवेश करते को अच्छा जने ॥ १३ ॥ जो साधु साध्वी जिस स्थान जेमन वार हो वहां देख, २ कर अशनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु गृहस्थ के घर में आहार पानी ग्रहण करने के लिये प्रवेश करे उस घर में तीन घर [द्वार] के अन्दर आहार रखा हो उस घर में से सन्मुख लाकर अशनादि चारों आहार देवे उसे ग्रहण करे. ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु साध्वी अपने पांवो को शोभा के लिये प्रमार्जे (पूंजे-झट के) साफ करे, शोभा निशित प्रमार्जते-साफ करते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु अपने पांव को दबावे. वारम्वार दबावे. दबाते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु साध्वी

सूत्र

अप्पणोपाए-तेल्लेण वा, घएण वा, वासाएण वा, णवणीएण वा, मंखेज्ज वा, भिलंगेज्ज वा, मंखंतं वा, भिलंगंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू अप्पणो पाए, लोद्देण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा, पउमचुण्णेण वा, उल्लोलेज्ज वा उवट्टेज्ज वा, उल्लोलंतं वा उवट्टंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू अप्पणो पाए-सीउदगवियडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्जावा, उच्छोलंतं-वा पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू अप्पणोपाए-फुमेज्ज वा, रएज्ज वा, मंखेज्ज वा, फुमंतं वा, रएतं वा, मखंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू अप्पणो

अर्थ

[विना कारन] अपने पांव को तेल घृत चरबी मक्खन एक वक्त लगावे तथा वारम्वार लगावे. एकवक्त या वारम्वार लगाते को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु अपने पांव को लोद्रक कोष्टकद्रव्यक चूर्णक चूर्ण अवीरादिक एकवार लगावे उगटना (पीठी) करे वारम्वार पीठी करे ऐसा करतेको अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु अपने पांव को अचित्त ठंडेपानी कर, अचित गरम पानी कर, एक वक्त धोवे वारम्वार धोवे. धोतेको अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु साध्वी अपने पांव को. खटाइ आदि रस लगावे, अलतादिरंग कर रंगे, रंगतेको अच्छा जाने ॥ २१ ॥ (यह पांव के ६ सूत्र हुवे-१ मेल उतारे, २ मसले, ३ तेलादि लगावे, ४ लोद्रादि लगावे, ५ धोवे, और ६ रंगे)

सूत्र
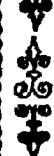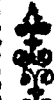
कायं-आमज्जेज वा पमज्जेज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ एवं एतेणं अभिलावेणं सो चेव गमो भाणियव्वो जाव रयंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ एवं कायस्स वणेवि तं चेव ॥३२॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा, पलियं वा, अरियं वा, असियं वा, भगंदलं वा, अण्णयेरणं वा तिक्खेणं सत्थ जाएणं अच्छिंदे-ज्ज वा, विच्छिंदेज्ज वा अच्छिदंतं वा विच्छिदंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कयांसि-गंडं वा, पलियं वा, अरियं वा, भगंदलं वा, अण्णयेरणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदेत्ता विच्छिदेत्ता पूयं वा, सोणियं वा निहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा,

अर्थ

जो साधु अपनी काया को मसल कर मैल उतारे, वारम्वार मैल उतारे. उतारते को अच्छा जाने ॥२२॥ यों उक्त प्रकार ६ अभिलापक काया आश्रिय भी कहना ॥ २७ ॥ और उक्त प्रकार ही छ सूत्र शरीर में कोई गड गूबडादिक होवे उस आश्रिय भी कहना ॥ ३३ ॥ जो साधु अपने शरीर को गुम्बडे हुवे हों उसे, मेद हुई हों उसे, फुनसी आदि हुई हों उसे, मस्सा-हर्ष रोग हुवा हो उसे, भगंदर का रोग हो उसे, इन सिवाय और भी इस प्रकार के रोग हुवें हो उसे तीक्ष्ण शस्त्र कर एक वक्त छेदावे, वारं-वार छेदावे. छेदाते को अच्छा जाने ॥ ३४ ॥ जो साधु अपने शरीर को गुम्बडा-गंडमालादि, मेंद, फुन्सीयों, मस्सा, भगंदर, और इस प्रकार का रोग हो उस को तीक्ष्ण शस्त्र कर एक वक्त छेदाकर

सूत्र

निहरंतं वा विसोहंतंवा साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जं भिक्खू अप्पणो कायंसि-गंडतं वा, पलियंतं वा, अरियं वा, असियं वा, भगंदलं वा, अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता, पूयं वा सोणियं वा निहरेता विसोहेता, सीउदेग वियडेण वा, उसिणोदग विगडेणवा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा, उच्छोलंतं वा, पधोवंतं वा, साइज्जइ ॥ ३६ ॥ एवं अण्णयरेणं आलेवण जाएणं आलिंप्पेज्ज वा, विलिंप्पेज्ज वा, आलिंप्पंतं वा विलिप्पंतंवा साइज्जइ ॥ ३७ ॥ एवं अण्णयरेणं आलेवणजाएणं अब्भंगेज्ज वा मंखेज्ज वा, अब्भंगेतं वा मखंतं वा साइज्जइ ॥ ३८ ॥ एवं एतेणं

अर्थ

वारम्वार छेदाकर पीरू-पीप रक्त निकला कर विशुद्ध करावे, विशुद्ध कराते को भला जाने ॥ ३५ ॥ जो साधु अपनी काया के गंडमाल, मेंद, फुन्सीयों, हर्ष, भगंदर आदि अन्य भी रोगों को तीक्ष्ण शस्त्र जाती से छेदन भेदन कर पीप रक्त निकालकर विशुद्ध कर अचित्त ठंडे पानी कर अचित्त गरम पानी कर एक वक्त धोवे वारम्वार धोवे, धोते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ ऐसे ही अन्य किसी प्रकार के मलम आदि का लेपन करे वारम्वार विलेप करे, लेप करते को वारम्वार विलेपन करते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ ऐसे ही अन्य किसी प्रकार के द्रव्य से अभंगन-मर्दन करे वारम्वार अभंगन मर्दन करे, अभंगे

सूत्र

गमेणं- धुवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा, धूवंतं वा पधूवतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू अप्पणो पालु किमियं वा, अप्पणो अंगुलिए निवेसिय २ णिहरइ, णिहरंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाओ णहसीओ कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं वत्थीरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं चक्खूरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पतं वा संठवंतं वा

अर्थ

मर्दन करते को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ ऐसे ही गड गुम्बडादि को धूप देवे, वारम्वार धूप देवे, धूप देते को अच्छा जाने※ ॥ ३९ ॥ जो साधु अपने गुदा में क्रिमीयों की उत्पाति हुइ हो, कूक्षी में क्रिमीयों की उत्पाति हुइ हो, उन को अपनी अंगुली अन्दर प्रवेश कर निकाले, निकालते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ जो साधु अपने दीर्घ-लम्बे नख हुवे हों उनको (शोभानिमित) छेदे साफ करे-सुधारे, छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु अपने लम्ब वडे हुवे गुह्य स्थान के बालों को छेदन करे साफ करे सुधारे, सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु अपने लम्बे हुवे आंखों के भांपने भूंवाओं के बाल

※ उक्त प्रकार गुम्बडादि का छेदादि कराने में कदाचित घात होवे, असझाइ होवे, रोग विस्तार पावे तो संयम की विराधना होवे, इत्यादि दोष जानकर प्रायश्चित का स्थान कहा है.

सूत्र

साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं जंघरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं कक्खरोमाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४५ ॥ जे भिक्खू
अप्पणो दीहाइं मंसुरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवंतं वा,
साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं केसाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पंतं वा, संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं कण्णरोमाइं
कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा, कप्पंतं संठवंतं वां, साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू-

अर्थ

को छेदे साफ करे, छेदन करते साफ करते को अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ जो साधु अपने लम्बे हुवे जंघा
के रोम को छेदे सुधारे, छेदे सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ जो साधु अपने लम्बे हुओ कांक्ष के
रोम को छेदे सुधारे छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु अपने लम्बे बढे दाढी मूछ के
रोम वाल को छेदे सुधारे, छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४६ ॥ जो साधु साध्वी अपने लम्बे
केसों को (मस्तक के वालों को) छेदे सुधारे, छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४७ ॥ जो साधु अपने
लम्बे हुवे कान के वालों को छेदे सुधारे, छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥४८॥ जो साधु अपने लम्बे हुवे

एवं नासरोमामाइ ॥ ४९ ॥ जेभिक्खू अप्पणोदंतं आघसेज्ज वा, पघसेज्ज वा, आघसंतं वा पघसंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्खू अप्पणो दंते सीउदग वीयडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोवेज्ज वा, उच्छोलंतं वा पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ ५१ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दंते फुमेज्ज वा, रएज्ज वा, फुमंतं वा रएतं वा साइज्जइ ॥ ५२ ॥ जे भिक्खू अप्पणो उठे अमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, अमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥ ५३ ॥ एवं उठे पायगओ भाणियव्वो जाव फुमेज्ज वा, रएज्ज वा, फुमंतं वा रयंतं वा साइज्जइ ॥ ५८ ॥ ज भिक्खू अप्पणो दीहाइं उत्तरोठाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा कप्पंतं वा, संठवंतं वा, साइज्जइ ॥ ५९ ॥ एवं दीहाइं अत्थिपत्ताइं जाव साइज्जइ ॥ ६० ॥

अर्थ

नाक के बालों को छेदे सुधारे, छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु साध्वी अपने दांतों को दांतनकर घसे अथवा वारम्वार घसे, घसते को अच्छा जाने ॥५०॥ जो साधु साध्वी अपने दांतोंको अचित ठंडपानी कर, अचित गरम पानी कर एकवक्त धोवे, वारं वार धोवे, धोतेको अच्छा जाने ॥५१॥ जो साधु अपने दांत खटाइ कर खट्टे करे रंग लगावे. खटाइ देते रंगते को अच्छा जाने ॥ ५२ ॥ जो साधु अपने होटों को एक वक्त घसे वारम्वार घसे, घसते को अच्छा जाने ॥ ५३ ॥ ऐसे ही होठ का गया कहना, २ मैल निकाले,

सूत्र

जे भिक्खू अप्पणो अत्थिणि आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पामज्जंतं वा साइज्जइ ॥ ६१ ॥ एवं अत्थिसु पायगमओ भाणियव्वो जाव फुमज्जवा रएज्ज वा फुवंतं वा रयंतं वा साइज्जइ ॥ ६६ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइ भूमगरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ६७ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं पासरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ६८ ॥

अर्थ

३ धोवे, ४ खटाइ दे, ५ रंग चडावे, धोते, खटाइ देते, रंग चडाते को अच्छा जाने ॥ ५८ ॥ जो साधु अपना लम्बा ऊपर के होठ को काटे सुधारे, काटते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ५९ ॥ ऐसे ही दीर्घ आंखों के भांपणीयों छेदे समारे, समारते को अच्छा जाने ॥ ६० ॥ जो साधु अपनी आंखों को साफ करने मसले विशेष मसले मसलते को अच्छा जाने ॥ ६१ ॥ यों जिस प्रकार पांव के गमे कहे वे सब कहना—१ मसले, २ मैल निकाले, ३ धोवे, ४ खटाइ आदि से शुद्ध करे, ५ काजलादि से रंगे, यह पांच गमे कहना ॥ ६६ ॥ जो साधु अपने लम्बे हुवे भूंवारे के बालों को छेदे, सुधारे, छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ६७ ॥ जो साधु अपने लम्बे हुवे पसवाडे छाती आदि के वालों के छेदे सुधारे, छेदे सुधारते को अच्छा जाने ॥ ६८ ॥

बहु मूछों के बाल हुवे चाहिये*

जे भिक्खू अप्पणो अत्थिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा, णहमलं वा, णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा, णिहरंतं वा विसोहेतं वा, साइज्जइ ॥ ६९ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायाओ सेयं वा, जल्ल वा, पंकं वा, मलं वा, णिहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णिहरंतं वा विसोहंतं वा साइज्जइ ॥ ७० ॥ जे भिक्खू गामाणुगामं दूइज्जमाणे-अप्पणो सीसदुवारिया करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ ७१ ॥ जे भिक्खू सणकप्पासाओ वा, उणकप्पासाउ वा, बोडकप्पासाओ वा, अमिलकप्पसाओ वा, वसीकरणसुताइं

अर्थ

जो साधु अपने आंखों के मैल को, कान के मैल को, दांत के मैल को, नख के मैल को, [शोभा के लिये] निकाले, विशुद्ध करे निकालते को अच्छा जाने ॥६९॥ जो साधु अपनी कायाका स्वेद [पशीना] विशेष पशीना, मैल, जमा हुवा मैल निकाले, विशुद्ध करे, निकालते सुधकरते को अच्छा जाने ॥७०॥ जो साधु ग्रामानुग्राम विचरते हुवे रास्ते में चलते हुवे वस्त्रादि कर मस्तक ढके, ढकते को अच्छा जाने ॥ ७१ ॥ जो साधु साध्वी सण का दोरा, कपास का दोरा, ऊन का दोरा, वन (नंदन वन के) कपास का दोरा, (इस कपास का वडा झाड होता है) मिलक (आकादि के) कपास का दोरा, इत्यादि का दोरा वशीक-

यह सूत्र फक्त साधु आश्रिय जानना, क्यों कि साधु शिर ढक कर रास्ते में चलते विप्रीत देखाता है. कोई रोगादि कारन हो तो आगार है. साध्वी को तो उघाडे सिर रहना योग्य ही नहीं है.

सूत्र

करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ७२ ॥ जे भिक्खू गिहंसि वा, गिहमुहंसि वा, गिहदुवारंसि वा, गिहपडिदुवारंसि वा, गिहेलुयंसि वा, गिहगणंसि वा, गिहवचंसि वा, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठावेइ परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ॥७३॥जे भिक्खू मंडग गिहंसि वा, मंडग छारियंसि वा, मंडग थूभियांसि वा, मंडग सयंसि वा, मंडग लेणसि वा, मंडग छुभिलंसि वा, मंडग वच्चंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतंसि वा साइज्जइ ॥ ७४ ॥ जे भिक्खू अंगाल दाहंसि वा, खार दाहंसि वा, गाय दाहंसि वा, तुस दाहंसि वा, उसुस दाहंसि वा,

अर्थ

रणादि के मंत्र यंत्र के वास्ते आप बटे, अन्य बटते को अच्छा जाने ॥ ७२ ॥ जो साधु साध्वी घरमें, घरके द्वार में, घर के प्रतिद्वार में, [घर के अंदर के द्वार में] घर की पोल में, घर के अंगन में, घर के लघुनीत बडी नीत के स्थान में, जो बडीनीत (दिशा) या लघुनीत (पेशाब) परिठावे परीठाते को अच्छा जाने ॥ ७३ ॥ जो साधु साध्वी मुरदे के घर में [मशान में] मुरदे की राख में, मुरदे की स्तूभ बनाइ हो वहां, मुरदे को विश्राम दे वहां, मुरदों की पंक्ती बैठाते हो वहां (अथवा मुरदों की कबरादि की पंक्ती हो वहां) मुरदों की छत्री प्रतिमा आदि होवे वहां, मुरदों जलाने का खास कोई स्थान होवे वहां बडी नीत लघुनीत परिठाने, परिठावते को अच्छा जाने ॥ ७४ ॥ जो साधु साध्वी अंगार करने की (कोयले बनाने की) जगह में, साजी आदिक क्षार करने की जगह में, गौ आदि पशू को रोगादि हुवे जिस स्थान

सूत्र

उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ७५ ॥ जे भिक्खू सेयंसि वा, पंकासि वा, पणगंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा, साइज्जइ ॥७६ ॥ जे भिक्खू णवियासु वा, गोलेहणियासु वा, णवियासु वा, मट्टियासु वा, मट्टियाक्खाणीसु वा, परिभुंजमाणियासु वा, अपरिभुंजमाणियासु वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवइ परिट्ठावंतं वा साइज्जइ ॥७७॥ जे भिक्खू उंबर वच्चंसि वा, नगोह वच्चंसि वा, आसत्थवच्चंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ७८ ॥ जे भिक्खू इक्खू वणंसि

अर्थ

दाय देते हो उस स्थान में, धान के ऊपर तुस उडाते हो उस स्थान में, वर्षावर्ष खलादि होते हों ऐसे स्थान में, बडीनीत लघुनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७५ ॥ जो साधु साध्वी सचित पानी का थोडा कीचड हो ऐसे स्थान में, कर्दम हो ऐसे स्थान में, फूलन हो ऐसे स्थान में, बडीनीत लघुनीत परिठावे परिठाते को अच्छा जाने ॥७६॥ जो साधु साध्वी नवी बनी हुइ गौशाला में नवी खोदी हुइ मट्टी की खान में, भोजनादी निष्पन्न होने के स्थान में, बडीनीत लघुनीत परिठावे परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७७ ॥ जो साधु जिस स्थान उंबर [गुलर] के फल पडे हो, जहां निग्रोध [बड] के फल पडे हो, जहां आसथी (पिंपल) के फल पडे हों, ऐसे स्थान में लघुनीत बडी नीत परिठावे, अन्य परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७८ ॥ जो साधु साध्वी इक्षू—साठे के वन में, शाल धान्य के खेत में, कुसुबादि फूलों के वन

सूत्र

वा, सालि वणंसि वा, कुसुम वणंसि वा, कप्पास वणंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ
परिट्ठवंतं साइज्जइ ॥ ७९ ॥ जे भिक्खू मडाग वच्चंसि वा, साग वच्चंसि वा,
मूलय वच्चंसि वा, कोच्छुभरि वच्चंसि वा, खार वच्चंसि वा, जीरिय वच्चांसि वा दमणय-
वच्चांसि वा, मरुग वच्चांसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ
॥ ८० ॥ जे भिक्खू असोग वणंसि वा, सति वणंसि वा, चंपग वणांसि वा, चुय वणंसि
वा, अण्णयरेसु तहाप्पगारेसु पत्तोवएसु पुप्फोवएसु फलोवएसु छाओवएसु उच्चार-
पासवणं परिट्ठवइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ८१ ॥ जे भिक्खू सपायंसि वा,

अर्थ

में, कपासादि उत्पन्न होने के स्थान में, वडीनीत लघुनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७९ ॥
जो साधु मंडाग वनस्पति के स्थान में, शाक हो ऐसी वनस्पति के स्थान में, मला वनस्पति के स्थान में,
बहुवीज वनस्पति के स्थान में, सचित क्षार होता हो ऐसे स्थान में, जीरा होता हो, ऐसे स्थान में दमनक वनस्पति
के स्थान, में मरोचन वनस्पति के स्थान. में वडीनीत लघुनीत परिठावे परिठाते को अच्छा जाने ॥८०॥ जो साधु
साध्वी आशोक वृक्ष के वन में, सप्तवर्ण वृक्ष के वन में, चंपा के वन में, चूत वृक्ष के वन में, और भी इस प्रकार के
वृक्षों के वन में, जो पत्र सहित, फूल सहित, फल सहित, छांया सहित हो वहां लघुनीत वडीनीत परिठावे
परिठाते को अच्छा जाने ॥ ८१ ॥ जो साधु साध्वी अपनी नेश्राय के लघुनीति करने के पात्र में, अन्य

सूत्र

परशायंसि वा, दिया वा, राओ वा, वियाले वा, उच्चाहिज्जमाणे सपायं गहाय जाइत्ता उच्चार पासवणं परिट्ठवेत्ता अणुग्गए सूरिए एडेइ, एडंतं वा साइज्जइ ॥ ८२ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं ओग्घाइयं ॥ निसीहज्झयणे तत्तीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ * * * * *

अर्थ

की नेश्राय के लघुनीति करने के पात्र में, दिन को रात्रि को सन्ध्या को उच्चार पासवणा की बाधा से पीडित हुवा. अपने या परके पात्र में ग्रहण कर सूर्योदय हुवे प्रथम सूर्योदय होते ही जो जगह देख रखी न हो ऐसी जगह में लघुनीत वडीनीत परिठावे अन्य परिठवनेवाले को अच्छा जाने ॥ ८२ ॥ यह ८२ बोल में का किसी भी एक बोल का सेवन करे उसे लघु मासिक प्रायश्चित्त आता है. उक्त कोई भी दोष परवश-पने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, एकासणा का प्रायःश्चित्त. आतुरता से उपयोग सहित लगे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, आयंबिल का प्रायःश्चित्त और मोहनीय कर्मोदय मूरछा भाव से लगे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, उपवास का प्रायःश्चित्त जानना. इति निशीथ सूत्र का तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ० ०

॥ चौथा-उद्देशा ॥

सूत्र
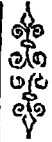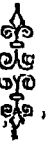
जे भिक्खू रायं अत्तिकरेइ, अतिकरंतं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू रायं अच्चिकरेइ, अच्चिकरंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू रायं अच्छिकरेइ, अच्छिकरंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू रायं अत्थि करेइ, अत्थिकरंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ एवं रायं रक्खियं ॥ ८ ॥ एवं णगर रक्खियं ॥ १२ ॥ एवं णिगम रक्खियं ॥ १६ ॥ एवं सव्वा रक्खियं ॥ २० ॥ जे भिक्खू कसिणाओ ओसहीओ आहारेइ,

अर्थ

जो साधु साध्वी राजा को अपने वश्यकरे, वश्य करते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु साध्वी राजा की अर्चा-पूजा करे, अर्चा-पूजा करते को अच्छा जाने. ॥ २ ॥ जो साधु साध्वी राजा को अच्छा करे, द्रव्य से वस्त्र भूषणादि कर भाव से गुणानुवादि कर. अच्छा करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु राजा के अर्थी होवे, अर्थी होते को अच्छा जाने. ॥४॥ इस राजा आश्रिय चार सूत्र कहे यथा—१ वश्यमे करे, २ अर्चा करे, ३ अच्छा करे और ४ अर्थी बने. यही चार सूत्र राजरक्षक प्रधानादि आश्रिय कहना. ॥ ८ ॥ उक्त प्रकार ही चार सूत्र नगर रक्षक-कोटवालादि आश्रिय कहना. ॥ १२ ॥ उक्त प्रकार ही चार सूत्र निगम रक्षक [ठाकूरादि] आश्रिय कहना. ॥ १६ ॥ उक्त प्रकार ही चार सूत्र ग्रामादि सब के रक्षक-फोजदार आदि आश्रिय कहना ॥ २० ॥ जो साधुर साध्वी अखंड औषधी (विना पीसे अन्न) का आहार करे अर्थात् सचित्त अन्न आदि को भोगवे. अथवा

आहारंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू आयरिय अदिच्चं आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू आयरियं उवज्झाएहिं अविदीणं त्रियगयं आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू ठवणाकुलाइं अजाणियं अपुच्छियं अगवेसयं पुव्वामेव पिंडवाय पडियाए अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू निग्गंथीणं उवस्सयंसि अविहाए अणुप्पविसइ, अणुप्पविसंतं वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू णिग्गंथीणं आगमणं पहंसि दंडगं वा, लट्ठियं वा,

अन्न की जाति रोटी आदि आवे जिसे खोले विना पुड उघाडे विना अंदर से प्रति लेखन किये विना खावे ऐसे खाते को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु साध्वी आचार्य उपाध्याय को विना दिये चारों प्रकार के आहार करे, करते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु साध्वी आचार्य उपाध्याय को विना दिये दूध दही घृत तेल मिष्टान आदि विगय का आहार करे. करते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु साध्वी गृहस्थ के घर में आहार आदि साधु को देने योग्य वस्तु स्थापन कर रखी हो उस को अनजाने अनपूछे विना गवेषना किये पहिले ही आहार के लिये प्रवेश करे, प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु-साध्वी के उपाश्रय में अपना आगम जानायें विना [खांसी आदि किये विना] प्रवेश करे, प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ जो साधु साध्वी के आने के रास्ते में दंडा लकडी

मूल

रयहरणं वा मुहपतिं वा अण्णयरं वा उवगरणजायं ठवेइ, ठवंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू णवाइ अणुपणोयं अहिगरणायं उप्पाएइ, उप्पायंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू पोराणाइ अहिगरणाइ खामियं विओसमियाइं पुणो-उदीरेइ उदीरंतं वा साइज्जइ ॥ २८ ॥ जे भिक्खू मुहविफालिय हसइ, हसंतं वा साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू पासत्थस्स संगाडिय देइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥ जे भिक्खू पासत्थस्स संघाडियं पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइज्जइ

अर्थ

रजोहरण मुहपति आदि उपकरण स्थापन करे (मस्करी के वास्ते) स्थापन करे तो अच्छा जाने ॥२६॥ जो साधु साध्वी नवे क्लेश-झगडे की उदीरणा करे, नवा झगडा उत्पन्न करते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु साध्वी प्रथम क्लेश-झगडा हुवा था उस को खमत खामना कर शांती करली. फिर उस क्लेश की उदीरणा करे. करते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ जो साधु साध्वी मुख फाड फाड कर हंसे. हमते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो साधु साध्वी पासत्थे-स्थिलाचारी को चद्दर देवे तथा उन का संघडा मिलावे-अपने शिष्यादि उन के साथ देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ जो साधु साध्वी पासत्थे साधु साध्वी के पास की चद्दर की आप इच्छा करे तथा उन के संघाडे की आप स्वयं इच्छा करे. अपने यें तन को मिलालेवे, मिलाते को अच्छा जाने

सूत्र

॥ ३१ ॥ एवं उसणस्स ॥ ३३ ॥ एवं कुसिलस्स ॥ ३५ ॥ एवं णितियस्स ॥ ३७ ॥ एवं संसत्थस्स ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू उदओलेण वा संसणिद्धेण वा हत्थेण वा मत्थेण वा, दव्वीएण वा, भायणेण वा, असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, पडिगाहेइ, पडिगाहंतं वा, साइज्जइ ॥ ४० ॥ एवं १ उदउल्ले, २ ससणिद्धे, ३ ससरक्खे, ४ मट्टिया, ५ ओसा, ६ लोणेय ७ हरियाल, ८ मणिसिल, ९ वणि, १० गेरु, ११ सेढिय, १२ हिंगुलुए, १३ अंजन, १४ लोद्धे,

अर्थ

॥ ३१ ॥ इस प्रकार उसन्न (ज्ञानादि के निरादक) साधु के दो सूत्र कहना-१ चदर देवे और २ उन की चदर लेवे तथा अपने शिष्यादि देवे उन को अपने में शामिल ॥ ३३ ॥ ऐसे ही कुशीलिये भ्रष्टाचारी साधु के भी उक्त दो आलापक कहना ॥ ३५ ॥ ऐसे ही नित्य प्रतिसेवी-सदैव दोष लगानेवाले साधु के दो आलापक कहना ॥ ३७ ॥ ऐसे ही संरथे अवनीत मर्यादा भनक के दो आलापक कहना ॥ ३९ ॥ जो साधु पानी से भीजे हुवे अथवा पूरे सूके न हो ऐसे हाथादि अंग, पात्रादि उपकरण, कुडछी आदि द्रव्य. तपेलादि भाजन से अशनादि चार प्रकार का आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ ऐसे ही २१ आलापक कहना उन के नाम-१ पानी से, २ स्निग्ध (पूरा सूका न हो) ३ सचित्त रज से, ४ सचित्त मट्टी से, ५ ओस के पानी से, ६ निमक से, ७ हरताल से, ८ मणशिल से

सूत्र

१५ कुकस, १६ पिट्ठ, १७ कंद, १८ मुल, १९ सिंगवेरय, २० पुप्फुक, २१ कंकुव्वडे, एकवीसं भवे हत्था, पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा साइज्जइ ॥ ८० ॥ एवं एकवीसं हत्था भाणियव्वा ॥ ८१ ॥ जे भिक्खू गामरक्खियं अत्तिकरेइ, अत्तिकरंतं वा साइज्जइ ॥ एवं सोचेव रायगमओ णेयव्वो ॥८४॥ एवं देसरखियं-॥८८॥ एवं सीमरक्खियं ॥९२॥ एवं रन्नो रक्खियं ॥९६॥एवं सव्वराखियं ॥१००॥

अर्थ

९ वानी (पीली मट्टी) से, १० गेरू से, ११ खडी से, १२ हिंगलू से, १३ अंजन से, १४ लोद्र से, १५ कुकस से, १६ सचित्त आटे से अर्थात् तुर्त के पीसे हुवे आटे से.१७कंद से,१८मूल से, १९ अद्रक से २० फूल से, और २१ कोष्टक से इन २१ प्रकार की सचित्त वस्तु से भाजन भरा होवे उस भाजन से अशनादि चारों आहार ग्रहण करे करते को अच्छा जाने ॥ ८० ॥ उक्त २१ प्रकार की वस्तु से हाथ भरे होवे उस से लेवे लेते को अच्छा जाने ॥ ८१ ॥ जो साधु साध्वी ग्राम का अधिकारी पटेलादि मालक होवे उस को अपना करे, अपने करते को अच्छा जाने, यों जिस प्रकार राय के उद्देश की आदि में चार गमे कहे ऐसे ग्राम अधिकारी के भी कहना ॥८४॥ ऐसे ही देश रक्षक (फौजदार आदि) के भी चार गमे कहना ॥८८॥ ऐसे ही सीम रक्षक-नाकादार आदि के भी चार गमे कहना ॥ ९२ ॥ ऐसे ही जंगल के रक्षक के भी चार गमे कहना ॥७६॥ ऐसे ही सब रक्षक के भी चार गमे कहना ॥१००॥ जो साधु साध्वी

सूत्र

जे भिक्खू अण्णमस्सपाए अमज्जेज वा पमज्जेज वा अमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥ १०१॥ एवं तइयो उद्देसो गमो णेयव्वो, जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे अण्णमण्णस्स सीसदुवारियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १५६ ॥ जे भिक्खू साणुपाए उच्चारपासवणं भूमि णपडिलेहइ णपडिलेहंतं वा साइज्जइ ॥ १५७ ॥ जे भिक्खू तओ उच्चारपासवणं भमिओ नपडिलेहइ नपडिलेहंतं वा साइज्जइ ॥ १५८ ॥ जे भिक्खू खुडागंसि

अर्थ

शोभा के वास्ते परस्पर एकेक दूसरे के पांवों को पूंजे (झाट के) पूंजते को अच्छा जाने ॥ १०१ ॥ यों तीसरे उद्देशे में कहे१६वे सूत्र से लगा कर७०वा सूत्र तक यावत् साधु मस्तक ढक ग्रामानुग्राम विचरे वहां तक सब ५५ सूत्र कहना. वहां तो स्वयं के आश्रिय कहे हैं और यहां परस्पर करने आश्रिय कहना ॥ १५६ ॥ जो साधु साध्वी वडी नीत लघुनीत की जगह की प्रतिलेखना नहीं करे, प्रतिलेखना नहीं करे उसे अच्छा जाने*॥१५७॥जो साधु साध्वी वडी नीत लगुनीत के लिये तीन स्थानक की प्रतिलेखना नहीं करे. नहीं करते को अच्छा जाने*॥१५८॥जो साधु साध्वी सकडे स्थान(थोडी जगह) में थंडिल (स्थान)

* रात का परिठाने के लिये दिन को भूमि देखे नहीं तो विना देखी भूमी में रात्री को गमनागमन करते त्रस स्थावर जीव की घात होवे तथा खडा आदि में पडे तो आत्मा की संयम की घात होवे इत्यादि दोपो पत्ति होती है.

* कदाचित एक स्थान मे किसी कारण से पठाने का अवसर न होतो दूसरा तीसरा स्थान काम में आजावे.इसलिये तीन स्थानकहे हैं.

सूत्र

थंडिलंसि उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ १५९ ॥ जे भिक्खू उच्चार पासवणं अविहीए परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ १६० ॥ जे भिक्खू उच्चारपासवणं परिठवेत्ता णपूच्छइ णपूछंतं वा साइज्जइ ॥ १६१ ॥ जे भिक्खू उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्ता कठेण वा कविलेणवा अंगुलियाए वा, सिलागए वा, पूच्छइ पूच्छतं वा साइज्जइ ॥ १६२ ॥ जे भिक्खू उच्चार-

अर्थ

में बडीनीत लघुनीत परिठावे. परिठाते को अच्छा जाने ॥ १५९ ॥ जो साधु साध्वी अविधी से बडीनीत लघुनीत परिठावे. अर्थात् स्थान की दिशा की प्रति लेखना नहीं करे. देखे विना जीवादि होतो पूंजे विना परिठावे. ऊंची नीची खड्डे वाली फटी तराडो पडी जमीन पर परिठावे. एक स्थान डालदे. अर्थात् लघुनीत को छीदा २ नहीं परिठावे. वगैरे अविधी से परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ १६० ॥ जो साधु साध्वी बडीनीत लघुनीत परिठाने की जगह जिस धनी की होवे उस को पूछे विना वहां परिठावे. विना पूछे परिठाते को अच्छा जाने ॥ १६१ ॥ जो साधु साध्वी बडीनीत लघुनीत परिठा कर अपान द्वार (गुदे) को काष्टकर वांस की खपाटी कर अंगुलीयों कर लोहादि की शलाका कर पूंछे पूंछते को

छोटे स्थान में समृह होकर रहने से जीवोत्पत्ति जीव घात होवे. जलदी नहीं सूकने से दुर्गंधादि उत्पन्न हो नजीक वाले को ग्लानी पेदा करे. आस पास हरीजीवादि होने से उन पर जाने से जीव घात होवे. इत्या दोषोत्पत्ती होती हैं.

सूत्र

पासवणं परिट्ठवित्ता णायमइ णायमतं वा साइज्जइ ॥ १६३ ॥ जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेत्ता तत्थेव आयमंति आयमंतं वा साइज्जइ ॥ १६४ ॥ जे भिक्खू उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्ता अइदूरे आयमइ, अइदूरे आयमंतं वा साइज्जइ ॥ १६५॥ जे भिक्खू उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्ता, परितिण्हं नावा पूराणं आयमइ, आयमंतं वा साइज्जइ ॥ १६६ ॥ जे भिक्खू अपरिहारिएणं परिहारियं वएज्जाएहिं अज्जातुमं

अर्थ

अच्छा जाने * ॥ १६२ ॥ जो साधु साध्वी वडीनीत लघुनीत परिठाये बाद. शुची नहीं करे. शुची नहीं करते को अच्छा जाने. + ॥ १६३ ॥ जो साधु साध्वी जिस स्थान लघुनीत वडीनीत परिठाइ उस स्थान शुची करे आचीर्ण लेवे, लेते को अच्छा जाने * ॥ १६४ ॥ जो साधु साध्वी वडीनीत लघुनीत परिठाकर बहुत दूर जाकर शुची करे. शुची करते को अच्छा जाने ॥ १६५ ॥ जो साधु वडीनीत लघुनीत परिठाकर तीन पसली [खोबे या अंजली] पानी से अधिक पानीले शुची करे करते को अच्छा जाने ॥ १६६ ॥ जो साधु साध्वी अपरिहारिक किसी भी प्रकार के प्राय:श्चित को प्राप्त नहीं हुवा ऐसा

---

* क्यो कि उस से कृमि आदि जीवकी घात हो जावे तथा काष्टादि ग्रहण करते अदत्तादान लगे. इस लिये वस्त्र के खडिये से प्रथम शुद्ध करे.

+ अशुची रहने से असज्झाइ होवे तथा प्रवचन की हीलना होवे. आदि दोषोत्पन्न होवे.

* अर्थात् जरा इधर उधर सरकर शुची करने से समूर्च्छिम की वृद्धि नहीं होवे. हाथ वस्त्रादि भी भरावे, नहीं.

सूत्र

च आहं च एगओ असणं वा पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा पडिगाहेत्ता तओ पच्छा पत्तेयं २ भोक्खामो वा पादामो वा, जोतं एवं वदइ, वंदतं वा साइज्जइ ॥१६७॥ तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥ निसीत्थज्झयणस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ * * * * *

अर्थ

शुद्धाचारी साधु परिहारिक कहता पांच दिन से छ मासादि प्रायश्चित्त को प्राप्त हुवा वह प्रायश्चित्त युक्त है अर्थात् उस का प्रायश्चित्त पूरा उतारा नहीं होवे, वह सदोषी साधु निर्दोषी साधु से इस प्रकार कहे कि अहो आर्य ! तुम और हम दोनों एक स्थान सामिल अशनादि चारों आहार ग्रहण करें अर्थात् वेहर कर लावे. फिर लाये बाद अपन अलग २ करके आहार आदि भोगवेंगे, पानी आदि पीवेंगे. जो शुद्धाचारी साधु उस के वचन को अंगीकार करे. अथवा अंगीकार करते को अच्छा जाने ॥ १६७ ॥ यह सब १६७ बोल हुवे. इसमें से एकही बोल सेवन करनेवाले साधु साध्वीको लघुमासिक प्रायश्चित्त आता है. उक्त १६७ दोष परवशपने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, एकासना का प्रायश्चित्त. आतुरता से उपयोग पूर्वक लगे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, आयंबिल का प्रायश्चित्त और मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छाभाव से लगावे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७ उपवास का प्रायश्चित्त आता है यों जितने दोष लगावे उतने अलग २ प्रायश्चित्त जानना. इति निशीथ सूत्र का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ४ ॥ ० ० ०

॥ पांचवा-उद्देशा ॥

सूत्र
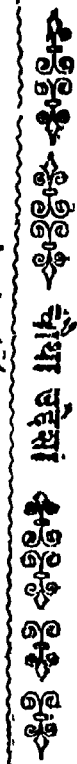
जे भिक्खू सचित्त रुक्खमूलंसि ठाणं वा, सिज्जं वा, णिसीहियं वा, चेएइ, चेएइतं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू सचित्त रुक्खमूलंसि ठिच्चा आलोएज्ज वा, पलोएज्ज वा, आलोयंतं वा, पलोयंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू सचित्त रुक्खमूलंसि ठिच्चा असणं वा ४ आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू सचित्त रुक्खमूलंसि ठिच्चा उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठावेइ, परिट्ठावेतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू सचित्त रुक्ख मूलंसि ठिच्चा सज्झायं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ एवं उद्दिसइ उद्दिसंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ एवं समुद्दिसइ, समुद्दिसंतं वा

अर्थ

जो साधु साध्वी सचित्त वृक्ष के मूल पर कायोत्सर्ग करे. बिछोना करे, बैठे, इतना काम स्वयं करे, अन्य करते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु साध्वी सचित्त वृक्ष के मूल पर खडा रहकर इधर उधर अवलोकन करे, देखे विशेष देखे ॥ २ ॥ जो साधु साध्वी सचित्त वृक्ष के मूल पर खडा रहकर अशनादि चारों प्रकार का आहार करे, करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु सचित्त वृक्ष के मूल पर खडा रहकर लघुनीत बडीनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु सचित्त वृक्ष के मूल पर खडा रहकर स्वाध्याय करे करते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ ऐसे ही नया ज्ञान पढावे पढाते को अच्छा

साइज्जइ ॥ ६ ॥ एवं वाएइ, वायंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ एवं पडिच्छइ, पडिच्छतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ एवं परियट्टइ, परियट्टतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू अप्पणो संघाडियं, अणउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, सिवावेइ, सिवावंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू अप्पणो संघाडिए-दीहसुत्ताइं करेइ, करंतं वा साइज्जई ॥ १२ ॥ जे भिक्खू पिओमद पलासयं वा, पडोल पलासयं वा, बिल-पलायसयं वा, सीउदग वियडेण वा, उसीणोदग वियडेण वा, संफाणियं २

जाने ॥ ६ ॥ ऐसे ही समुद्देश वारम्बार पढावे, पढाया ज्ञान स्थिर करे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥७॥ ऐसे ही वांचना देवे, वांचना देनेवाले को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ ऐसे ही वांचनी लेवे, वांचनी लेते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ ऐसे ही प्रथम पढा ज्ञान याद करे, याद करते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु साध्वी अपनी चद्दर (पछेवडी) अन्य तीर्थिक के पास या गृहस्थी-श्रावक के पास सींवावे, सींवावते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु अपनी चद्दर (मर्यादा से अधिक) लम्बे वस्त्र की करे, करते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु नींब पत्ते, पटोल वृक्ष के पत्ते, बील वृक्ष के पत्ते, अचित्त ठंडेपानी (धोवन) कर धोवे. अथवा अचित्त गरम पानी कर धोवे धोकर एकत्र कर उन का आहार करे अर्थान्तर पत्ते के

आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू पडिहारियं पायपुंछणं जाइत्ता तामेव रयणी पच्चुपिणइ सामिति, सूए पच्चुपिणइ, पच्चुपिणंतं वा साइज्जइ ॥१४॥ जे भिक्खू पडिहारियं पायपुच्छणयं जाइत्ता सुए पच्चुप्पिणस्सामिति, तामेव रयणी पच्चुपिणइ, पच्चुपिणंतं वा साइज्जइ ॥ १५ ॥ एवं सागारियं संतिएवि ॥ एवं पाय पुंच्छणेणं दो अलावगा ॥ १७ ॥ जे भिक्खू पडिहारियं दंडयं वा लट्ठियं वा

अर्थ

ऊपर रखकर आहार करे आहार करते को अच्छा जाने *॥१३॥ जो साधु पडिहारीया अर्थात् आज ही पीछा देवूंगा ऐसा कहकर रजोहरण (ओगा) याचके लावे और उस ही रात्रि (इगाम) तक भी पीछा नहीं देवे, ऐसे ही पीछा नहीं देते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु पडिहारा रजोहरण याचकर कहे कि कल में पीछा देवुंगा और उस ही दिन पीछा देवे, देते को अच्छा जाने*॥१५॥ ऐसे ही शैय्यान्तर के यहां के रजोहरण के दो आलापक कहना (यथा-१ उस ही दिन देने का कहकर उस ही दिन नहीं देवे और २ दूसरे दिन देने का कहकर उस ही दिन देवे) ॥ १७ ॥ जो साधु

* यहां सूके पत्ते समझना चाहिये, अन्य आहारादि की प्राप्ति न होने से अथवा अटवी में पडे हुवे कार्य प्रसग वापरने में आते हैं कितनेक तापसादि इन का सेवन करते हैं.

* ऐसा करने से मृषावाद लगता है अप्रतीत होती है.

सूत्र

अवलेहणियं वा, वेणसुइयं वा, एवं वि दोवि चेव पाडिहारियं सागारियं गमएहिं णे-यव्वो ॥ २१ ॥ जे भिक्खू पाडिहारियं सेज्जा संथारयं पच्चप्पिणत्ता दोच्चंपि अणुणविय अहिठेइ, अहिठंत वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू पाडिहारीयं सागारिय संतियं वा सेज्जा संथारयं पच्चूपिणित्ता अणुणविय अहिठेति अहिठेंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू सणकप्पसोओ वा, उणकप्पासोओ वा, बोडकप्पासोउ वा, आमिलकप्पाओ वा, दीहसुत्ताइ करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥

अर्थ

दंडा, लकडी, बांस की खपाटी, बांसादी की सूई, इन को पडिहारी ग्रहण करके लावे जिस के भी दो आलापक अन्य गृहस्थ आश्रिय और दो आलापक शैय्यान्तर आश्रिय, यों चार आलापक कहना ॥ २० ॥ जो साधु पडिहारीया शैय्या-स्थानक संथारक-बिछाने का परालादि पीछा दे दिया हो उसे दूसरी वक्त मालिक की आज्ञा विना ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु सेज्यान्तर के घर के शैय्या संथारक पीछे दे दिये हों, उन को पीछे ग्रहण करती वक्त शैयान्तर की आज्ञा विना लिये लेवे, लेतं को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु सण का डोरा. ऊन का डोरा, वन के कपास का डोरा, आमिक कपास का डोरा लम्बा बनावे बनाते को अच्छा जाने* ॥ २४ ॥ जो साधु सचित्त लकडी का दंडा,

* लम्बे डोरे को बनाते इधर उधर फिरते पानी आदि गिरते सूतथे इर्या आदि समिती की व्याघात होते दोष लगता है.

सूत्र

जे भिक्खू सचित्ताइ दारु दंडाणि वा वेणुदंडाणि वा, वेतंदंडाणि वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ एवं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ एवं परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ एवं चित्ताइ दारु दंडाणि वा, वेणु दंडाणि वा ॥ ३१ ॥ एवं विचित्ताणि वा, दारु दडाणि वा जाव साइज्जइ ॥ ३२ ॥ जे भिक्खू णवेसंसि वा, गामंसि वा जाव सांनिवेसंसि वा अणुप्पविसित्ता असणं वा ४ पाडिग्गहेइ ? पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू णवेसंसि वा,

अर्थ

बांस का दंडा वेत का दंडा [छडी] स्वयं बनावे अन्य बनाते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ ऐसे ही सचित्त दंडा स्वयं रखे रखते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ ऐसे ही सचित्त दंडा स्वयं वापरे अन्य वापरते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ ऐसे ही चित्राम युक्त लकडी के बांस के बेंत के दंड के तीन सूत्र कहना (१ बनावे २ रखे, ३ वापरे) ॥ ३० ॥ ऐसे ही विचित्र प्रकार के रंग रंगित दंड के तीन सूत्र कहना ॥ ३३ ॥ जो साधु नवे स्थापन किये हुवे ग्राममें यावत् सन्नी वेसमें प्रवेशकर अशनादि चारों प्रकार के आहार ग्रहण करे, ग्रहनकरते को अच्छा जाने + ॥ ६४ ॥ जो साधु नवी खोदी हुई लोह की खदान में. तावे की खदानमें, तरवे

+ राजादि की सेना के पडावादि के कारन से नवीन ग्रामादि की स्थापन हुइ हो उस में जो साधु जावे तो साधु को हेरु चोर जान कर पकडे, अपशकुन समझे हेलना करे, इत्यादि दोष उत्पन्न होवे, इसलिये निषेध किया है.

सूत्र

अयआगरंसि वा, तंबआगरंसि वा,तओआगरंसि वा, सिसआगरंसि ता, हिरणागरंसि वा, सुवण्णागरंसि वा रयणागरंसि वा, वइरागरंसि वा, अणुप्पविसित्ता असणं वा४, पडिग्गहेइ, पडिग्गहेतं वा साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जे भिक्खू मुहवीणीयं करेइ, करतं वा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू दंतवीणीयं करेइ, करंत वा साइज्जइ ॥ ३७ ॥ जे भिक्खू ओठ विणीयं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ ३८ ॥ जे भिक्खू णास वीणियं करेइ, करेतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू कंख वीणियं करइ, करतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू हत्थ वीणियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ

अर्थ

की खदान में, सीसे की खदान में, चांदी की खदान में, सुवर्ण की खदान में,रत्न की खदान में, वज्ररत्न की खदान में, प्रवेश कर अशनादि चारों प्रकार का आहार ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने* ॥३५॥ जो साधु मुख को वेणा (वादित्र) जैसा बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ दांत को वीणा जैसा बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ होठ को वेणा जैसा बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ नाक को वेणा जैसा बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ३९ ॥ कांख को वेणा जैसी बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ हाथ को वेणा जैसा बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ नख को वेणा

* इन से सचित्त पृथ्वी काय की घात का तथा ऊपर सूत्र में कहे दोषो का सभव है.

॥ ४१ ॥ जे भिक्खू नक्ख वीणियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू पत्तवीणियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खु पुप्फ वीणियं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू फल विणियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू बीयं विणीयं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू हरीय वीणियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू मुहे वीणियं वाएइ, वायंतं वा साइज्जइ ॥४८॥ जे भिक्खू दंत वीणियं वाएइ, वायंतं वा साइज्जइ ॥ ४९ ॥ एवं उट्ठ वीणियं ॥ ५० ॥ एवं णास विणीय ॥ ५१ ॥ एवं कंख विणीयं ॥ ५२ ॥ एवं हत्थ वीणियं ॥ ५३ ॥ एवं नक्ख वीणियं ॥ ५४ ॥ एवं पत्त वीणियं ॥ ५५ ॥ एवं पुप्फ वीणियं ॥ ५६ ॥ एवं फल

अर्थ

बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ पत्र की, फूल की, फल की, बीज की, हरित काय की, वीणा बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ४२-४७ ॥ जो साधु मुख को वैणा नामक वादित्र जैसा बनाकर बजावे, बजाते को अच्छा जाने ॥ ४८ ॥ ऐसे ही-दांत को, होष्ठ को, नाक को, कांख को, हाथ को, नख को. वीना की तरह बजावे, बजाते को अच्छा जाने ॥ ४९-५४ ॥ ऐसे ही पत्ते की, फूल की,

सूत्र

वीणियं ॥ ५७ ॥ एवं बीय वीणियं ॥ ५८ ॥ जे भिक्खू हरीय वीणियं वाएइ वायंयंतं वा साइज्जइ॥५९॥एवं अण्णयराणि वा तहाप्पगाराणि वा अणुदिन्नाइं सद्दाइ उदीरेइ, उदीरंतं वा साइज्जइ ॥ ६० ॥ जे भिक्खू उद्देसियं सेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ ६१ ॥ जे भिक्खू सपाहुडियं सेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ ६२ ॥ जे भिक्खू सपरिकम्मं सेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ ६३ ॥ जे भिक्खू णत्थि संभोगवत्तिया

अर्थ

फल की, बीज की. वीना बजावे, बजाते को अच्छा जाने ॥ ५५-५८ ॥ जो साधु हरित काय की, वीना को बजावे. बजाते को अच्छा जाने ॥ ५९ ॥ इस प्रकार ही अन्य २ प्रकार के शब्द वादिंत्रों के जानवरों के वगैरे तरह २ के शब्द की उदीरणा करे. तथा मोहनीय कर्म जो उपशांत पाया है उस की अनेक प्रकार के शब्दो कर उदीरणा करे, उदीरणा करते को अच्छा जाने ॥ ६० ॥ जो साधु साध्वी के लिये उद्देश कर शैय्या स्थानक बनाया उस में प्रवेश करे. प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ ६१ ॥ जो साधु निमित मकान साफ कराया द्वार खिडकी बनाइ छिपाया छनाया हो उस में रहे. रहते को अच्छा जाने ॥ ६२ ॥ जो साधु मूलगुण उत्तरगुन की घातकारी आरति का उत्पादक. या साधु के लिये उसमें कुच्छ भी निकालना धरना कराया हो उस मकान में प्रवेश करे प्रवेश करते को अच्छा जाने॥६३॥ जो साधु जिन साधुओं के साथ अपना संभोग न हो-आहार पानी सामिल न हो ऐसे विरुध समाचारी वाले

पंकिरियाचि वदेइ वदंतं वा साइज्जइ॥६४॥जे भिक्खू वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा पायपूंछणं वा, अलं थिरं धुवं धारणिज्जं, पलिब्भिदियं परिट्ठावेइ, परिट्ठावेतं वा, साइज्जइ ॥ ६५ ॥ जे भिक्खू लाउयपायं वा, दारुपायं वा, मट्टियापायं वा, अलं-थिरं धुवं धारणिज्जं,पलिब्भिदियं २ परिट्ठावेइ, परिट्ठावंतं वा साइज्जइ ॥६६॥ जे भिक्खू दंडगं जाव वेणुसुयणं वा पलिब्भिदियं २ परिट्ठावेइ,परिट्ठावेतं वा साइज्जइ ॥६७ ॥ जे भिक्खू अइरेयपमाणं रयहरणं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ ६८ ॥ जे भिक्खू

वाले साधु के साथ संभोग करने का कहे कहते को अच्छा जाने ॥ ६४ ॥ जो साधु साध्वी वस्त्र, पात्र, कम्बल. रजोहरण, जो प्रतिपूर्ण है, दृढ है, निश्चल बहुत काल तक चले ऐसा है. रखने योग्य है उस को भांग तोड टुकडे कर परिठावे. परिठाते को अच्छा जाने ॥ ६७ ॥ जो साधु तुम्बे का पात्र, लकडे का पात्र, मट्टी का पात्र, अखंड स्थिर बहुत काल चलने जैसा रखने योग्य उसे भांग तोड टुकडे २ कर परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ६६ ॥ जो साधु दंडे को यावत बांस की खपाटी पूर्ण स्थिर चलने योग्य है उस को भांग तोड परिठावे परिठाते को अच्छा जाने ॥ ६७ ॥ जो साधु प्रमाण से उपरांत रजोहरण रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ६८ ॥ जो साधु साध्वी बहुत सूक्ष्म पतली फलीयों का रजो-

* चलते हुवे नीचा झुकना नहीं पडे सुख से प्रमार्जन हो सके वह प्रमानोपेत, इस से कमी ज्यादा हो वह प्रमान रहित

सूत्र

सुहुमाइं रयहरणं सीसाइं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ६९ ॥ जे भिक्खू रयहरणस्स एक्कं बंधदेइ, देत्तं वा साइज्जइ ॥ ७० ॥ जे भिक्खू रयहरणंस्स परं तिणबंधणे देइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥७१॥ जे भिक्खू रयहरणे अवीहीए बंधण बंधइ, बंधतं वा साइज्जइ ॥ ७२ ॥ जे भिक्खू रयहरणं कठुनग बंधणं बंधइ बंधतं वा साइज्जइ

अर्थ

हरण बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ६९ ॥ जो साधु रजोहरण के ऊपर नशीशिया के डोरे का एक ही बंधन एक ही आंटा देकर बधे, बंधते को अच्छा जाने ॥ ७० ॥ जो साधु रजोहरण के निशीथिया के ऊपर के डोरे के तीन बंधन से ज्यादा देवे, देते को अच्छा जाने १ ॥ ७१ ॥ जो साधु रजोहरण को अविधी से कभी ज्यादा ऊपर नीचे होने जीव भरा जावे शीघ्र छूट जावे ऐसा बंधे, बंधते को अच्छा जाने* ॥७२॥ जो साधु रजोहरण को बहुत कठिन बंधन से बंधे. सन रजोहरण बंध दे जिस से पूंजा नहीं जावे. अथवा एक भाग सूत का एक भाग ऊन का एक भाग सन का यों अलगर भाग का रजोहरण बनावे.

जानना तथा कितनेक ऐसा भी कहते है कि-३२ अंगुल दंडी, ८ अंगुल फली, जघन्य १५० मध्यम १७५ उत्कृष्ट २०० फली. इस प्रकार का जमीनी की कर्म की तथा भव भ्रमण की रज का हरण करनेवाला रजोहरण रखे.

जिसे बनाने में बहुत काल लगे उस से स्वाध्यायादि की व्याघात हो तथा ज्यादा उलजे तो प्रतिलेखनादि बराबर न हो.

* १ एक बंध फलीयो के अंदर प्रथम देकर फिर रजोहरण की फली लपेटी, दूसरा ऊपर का बंध फली लपेटी बाद, तीसरा रजोहरण की दंडी के ऊपर के त्रिभाग मे तीन अंगुल दंडी छोड बंध दे वह.

सूत्र

॥ ७३ ॥ जे भिक्खू रयहरणं वोसट्ठं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ७४ ॥ जे भिक्खू रयहरणं अणसिट्ठं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ ७५ ॥ जे भिक्खू रयहरणं अदिट्ठं, अदिट्ठंतं वा साइज्जइ ॥ ७६ ॥ जे भिक्खू रयहरणं ओसीसे मूले ठवेइ ठवंतं वा साइज्जइ॥७७॥ जे भिक्खू रयहरणं तुयट्टेइ तुयट्टंतं वा साइज्जइ ॥७८॥ तं सेवमाणे आवज्जइ,मासियं परिहार ठाणं ओग्घाइयं॥।निसीथज्झयणस्स पंचमोदशो सम्मत्तो ॥ ५ ॥

अर्थ

तरह २ रंग रंग तरह २ के डोरे कर बंधे बंधते को अच्छा जाने ॥ ७३ ॥ जो साधु रजोहरण को अपने से बहुत दूर (९ हाथ से ज्यादा) रखे रखते को अनुमोदे तथा रजोहरण विना गमनागमन करे करते को अच्छा जाने ॥७४॥ जो साधु तीर्थंकर की आज्ञा से विरुद्ध, तथा मालिक का विना दिया रजोहरण रखे रखते को अनुमोदे ॥ ७५ ॥ जो साधु रजोहरण पर बैठे बैठते को अच्छा जाने ॥ ७६ ॥ जो साधु रजोहरण को मस्तक के नीचे तकीया रूप, रखे, रखते को अनुमोदे ॥ ७७ ॥ जो साधु रजोहरण पर शयन करे शयन करते को अच्छा जाने ॥ ७८ ॥ यह ७८ प्रकार के दोषों के सेवन करनेवाले साधु को अलग २ लघु मासिक प्रायःश्चित्त परवशपने उपयोग विना दोष लगे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७,एकासने का प्रायःश्चित्त आता है यथा-आतुरता से तथा उपयोग सहित दोष लगे तो जघन्य ४,मध्यम १५, उत्कृष्ट २७ आयंबिल का प्रायःश्चित्त, और मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से दोष लगावे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७ उपवास का प्रायःश्चित्त आता है. इति नीसीथ सूत्र का पांचवा उद्देशा ॥ ५ ॥

॥ छट्ठा-उद्देशा ॥

सूत्र

जेभिक्खू माउग्गमस्स मेहुणवडियाए विणवेइ,विणवंतं वा साइज्जइ ॥१॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुणं वडियाए हत्थकम्मं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुणं वडियाए अंगादाणं-कट्ठेण वा, कलिंचेण वा, अंगुलियाए वा, सिलागए वा, संचालेइ, संचालंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए अंगादाणं-संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा, संवाहंतं वा, पलिमद्दंतं वा,

अर्थ

जो साधु किसी माता समान इन्द्रियों-अवयव की धारक (अर्थान्तर-मोह भाव से) स्त्री से मैथुन सेवन की इच्छा कर कहे कि तेरी इच्छा हो तो आवो अपन वस्त्र रहित बने, मैथुन सेवन करे, ऐसे विनंती करे, विनंती करते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री से मैथुन की इच्छा से हस्त कर्म करे, अर्थात् स्त्री की योनि में अंगुली आदि प्रक्षेपे. इस प्रकार करते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियवाली स्त्री से पुरुष चिन्ह रूप काष्ट कर वांसादि की लकडी कर अंगुली कर, लोहादि की शलाइ कर, योनि में प्रक्षेप कर संचलन करे. ऐसा करते को अच्छा जाने ॥३॥ जो साधु माता समान इन्द्रियोंवाली स्त्री को मैथुन का अर्थी हुवा पुरुष चिन्ह ग्रहण करा कर थोडा मशलावे

सूत्र

साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खु माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-अंगादाणं तेलेण वा घएण वा वसाएण वा, णवणीएण वा, अब्भंगेज्ज वा, मंखेज्ज वा, अब्भगंतं वा, मखंतं साइज्जइ ॥५॥ एवं माउगमाभिलावेणं पढमोद्देसो गमो णेयव्वो जात्र जिग्घइ जिग्घंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-अंगादाणं अण्णयरंसि अच्चित्तंसि सोयंसि अणुप्पविसेत्ता सुक्कपोग्गले निग्घाएइ, निग्घायंतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-सयंकुज्जा, सयंबूया, करेइ

अर्थ

बहुत मशलावे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियोंवाली स्त्री से मैथुन के लिये अंगादान को तेल से घृत से चरबी से, मक्खन से मर्दन करे मशले मर्दन करते मशलते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ ऐसे ही-१ कर्कश लोद्रादि का लेप करे, २ अचित्त पानी से धोवे. ३ स्त्री चिन्ह पुरुष चिन्ह उघाडा करे, और ४ सूंघे. यह चार सूत्र जैसे प्रथम उद्देशे में कहे हैं तैसे ही यहां माता समान अवयव की धारक स्त्री की अपेक्षा से कहना ॥ ९ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियोंवाली स्त्री से मैथुन की इच्छा से अन्य दूसरा अचित्त निर्जीव श्रोत्र (छिद्र) में इन्द्रिय को प्रक्षेप कर शुक्र के पुद्गल निकाले, निकालते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियवाली स्त्री से मैथुन की इच्छा से स्वयं अपना वस्त्र

सूत्र

करेतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स, मेहुण वडियाए-कलहेकुज्जा, कालहेवूया, कलंहवडियाए गच्छइ, गच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-लेहंलिहइ, लेहलिहावेइ, लेह वडियाए बहियाए गच्छइ, गच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू माउमग्गरस मेहुण वडियाए-पिट्ठंतं वा सोयंतं वा, पोमंतं वा पोसंसिवा भल्लीएण उपाएइ, उपायंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-पिट्ठंतं वा, सोयंतं वा, पोसंतं वा, पोसंसिं वा

अर्थ

दूर कर नग्न बने. निर्लज्ज वचन बोले. ऐसे करते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियोंवाली स्त्री से मैथुन की इच्छा से क्लेश करे, क्लेशकारी वचन बोले. वस्ती छोड गमन करे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री से मैथुन की इच्छा कर विषय भाव के लेख लिखे, अन्य के पास लिखावे, लेख लिखने को बाहिर जावे, ऐसे करते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियोंवाली स्त्री से मैथुन की इच्छा से पृष्टांतर (अपान द्वार) में, श्रोत्रांतर (योनि) में इन्द्रिय को पोषे. जिस कर इन्द्रिय प्रबल बने, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री से मैथुन की इच्छा कर पृष्टांतर (गुदा) में श्रोत्रांतर [योनि] में इन्द्रिय का पोषन होगा ऐसा जान औषधादि सेवन कर मद उत्पन्न करे, अचित्त

सू

भलिएण उप्पाइत्ता, सीओदग वियडेण वा ओसिणोदग वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज या, उच्छोलंतं वा पधोएतं वा, साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू माओग्गमस्स मेहुण वडियाए-पिट्ठंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भालिएणं उप्पइत्ता तेलेण वा जाव अण्णयरेण वा आलवणजाएलं अलिंपेज्ज वा, विलंपेज वा, अलिप्पंतं वा विलिप्पंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खु माउग्गमस्स मेहुण वडियाए अप्पणो कायंसि गंड वा जाव भग्गंदलं वा अण्णयरेण तिक्ख सत्थ जाएणं अछिंदित्ता विच्छिंदित्ता पुयं वा सोणियं वा णिहरिता विसोहित्ता, अण्णयरेण वा आलेवणं

अर्थ

ठंडे पानी से अचित्त गरम पानी से पखाले धोवे पखालते धोते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियोंवाली स्त्री को मैथुन की इच्छा कर पृष्टांतर में श्रोत्रांतर में स्वयं आत्मा तथा उस की आत्मा को पोषता औषधादि सेवन करे तेल कर घृत कर यावत् अन्य कोई विलेपन की वस्तु का लेप करे विशेष लेप करे, लेप करते विशेप लेष करते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री से मैथुन की इच्छा स अपने शरीर पर हुवे गंडमाल यावत् भगंदर आदि अन्य भी गुम्बडादि का तीक्षण शास्त्र कर छेदे विशेष छेदे, पीप रक्त निकाले कर शुद्ध करे, अन्य

सूत्र
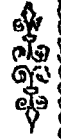
जाएणं अब्भंगेज्ज वा मखंतं वा साइज्जइ ॥ १७ ॥ एवं जहा तइया उद्देसए गंडादिए जो गमओ सोचेव इहंपि णेयव्वो जाव धूवेज्ज वा, पधोए वा धूवंतं वा पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ भिक्खू माउग्गमस्स मेहुणंवडियाए कसिणाए वत्थाइं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ एवं अहियाए वत्थाइं धरेइ, धरेतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ एवं धोव रत्ताइं वत्थाइं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ चित्ताए मलिणाइ, एवं विचित्ताइं वत्थाइं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स

अर्थ

प्रकार के पदार्थ कर औषध मलम का लेप करे. ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ यों जैसे तीसरे उद्देशे में गड गुम्बडादि के गम्मे कहे हैं वे सब यावत् धोवे विशेष धोवे धोतें को अच्छा जाने वहां तक के यहां कहना ॥ १८ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रयों वाली स्त्री से मैथुन की इच्छा कर संपूर्ण वस्त्र (अखंड थान) रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ ऐसे ही मर्याद उपरांत वस्त्र रखे ॥ २० ॥ ऐसे ही धोये हुवे रंग हुवे वस्त्र धारण करे, धारण को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु अपने दोष ढकने एक रंग वस्त्र रखे, मलीन वस्त्र रखे, तथा मोह उपजाने विचित्र रंग के वस्त्र रखे, ऐसे करते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों वाली स्त्री से मैथुन के लिये अपने पांव मसले विशेष मसले यों तीसरे उद्देशा के १६ वे सूत्र से लगा कर यावत् ७१ वा सूत्र ग्रामानुग्राम फिरता अपना मस्तक
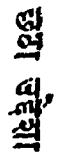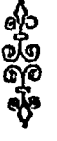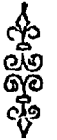
मेहुणवडियाए अप्पणोराए अमज्जेज्ज वा पामज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पामज्जंतं वा साइज्जइ, एवं तइए उद्देसो जो गमो सो चेव इहंपि मेहुणवडियाए णेयव्वो जाव जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुगाम दूइज्जमाणे अप्पणो सीस दूवारियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ॥७७॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए खीरं वा, दहिं वा, णवणियं वा सप्पि वा, गुलं वा, खंडं वा, सक्करं वा, मच्छंडियं वा, अण्णयरं वा, पणीयं

वस्त्रादि कर ढके वहां तक ५९ सूत्र माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री से मैथुन सेवन के लिये उक्त काम करे अन्य करते को अच्छा जाने ऐसा कहना॥ ७७। * जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री से मैथुन सेवन करने. क्षीर (दूध,) दही, मक्खन, घृत, गुड. मिश्री, इत्यादि और भी रस प्रणित आहार स्वयं करे, अन्य करतेको अच्छा जाने॥७८॥ इन ७८ बोल में से एक भी बोल सेवन करने वालेको गुरु चौमासिक प्रायश्चित्त आता है. उक्त दोष जो परवशपने बिना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ छट्ठ [बेले] उत्कृष्ट १२० उपवास तथा चार महिने का छेद. अनुरता से उपयोग सहित लगे हो तो जघन्य ४ छटा-बेले, तथा ४ दिनका छेद. मध्यम ४ अठम तथा ६ दिनका छेद. उत्कृष्ट १२० उपवास

* यद्यपि इन ५९ सूत्रो में ऊपर कहे हुए गुम्वढादि के सूत्रों का भी समादेश हो जाता है तथापि उन का अलग लेख किया है यह टप्पा बहु सूत्री गम्य जानना.

सूत्र

आहारं आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ ७९ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥ २३ ॥ निसीह ज्झयणस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ * *

अर्थ

तथा ४ महिने का छेद और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ अष्टम (तेले) पारने में आयंबिल तथा ६० दिन का छेद, मध्यम २५ अष्टम पारने में आयंबिल, तथा ६० दिन का छेद, उत्कृष्ट १२० उपवास, पारने में आंबिल, [तथा मूल से दीक्षा.] इति निशीथ का छठा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ ६ ॥

॥ सातवा-उद्देशा ॥

जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-तण मालियं वा, मुंज मालियं वा, भिडिं मालियं वा, मणय मालियं वा, पिच्छ मालियं वा, दंत मालियं वा, सिंग मालियं वा संख मालियं वा, हड्ड मालियं वा, भंड मालियं वा, कट्ठ मालियं वा, पत्त मालियं वा, पुप्फमालियं वा, फलमालियं वा, बीयमालियं वा, हरियमालियं वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ एवं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ एवं पिणद्धेइ, पिणद्धंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ एवं परिभुंजइ, परिभुंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू माउ-

जो साधु माता समान इन्द्रियों को धारन करनेवाली स्त्री से मैथुन की अभिलाषा कर, वारणादि तृणों की माला, पानी में घ्रास ऊगे उस भूंज की माला, भिंडी वनस्पति की माला, मयन [मोम] की माला, पक्षी के पांखों की माला, हस्ति आदि के दांतों की माला, शृंग की माला, शंख की माला, हड्डीयों की माला, मट्टी की माला, लक्कड की माला, पत्ते की माला, फूल की माला, फल की माला, बीज की माला, हरी की माला, बनावे. बनाते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ उक्त प्रकार की मालाओं उक्त प्रकार की इच्छा करके रखे रखते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ उक्त प्रकार की मालाओं उक्त प्रकार की इच्छा से पहने, पहनते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ उक्त प्रकार की मालाओं उक्त प्रकार की इच्छा से वारम्वार भोगवे,

सूत्र

ग्गमस्स मेहुण वडियाए-आयलोहाणि वा, तंबलोहाणि वा, तओलोहाणि वा,
सीसलोहाणि वा, रुप्पलोहाणि वा,, सुवण्णलोहाणि वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ
॥ ५ ॥ एवं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ एवं परिभुंजइ, परिभुजंतं
वा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-हाराणि वा,
अद्धहाराणि वा, एकावली वा, मुत्तावलि वा, कणगावली वा, रयणावली वा,
कडगाणी वा, तुडियाणि वा, केउराणी वा, कुंडलाणी वा, पंजलाणी वा,
मंउडाणी वा, पलंबसुत्ताणी वा, सुवण्णसुत्ताणी वा, करेइ, करंतं साइज्जइ ॥ ८ ॥

अर्थ

भोगवते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री से मैथुन की इच्छा करके
लोहे का संचय करे, तांबे का संचय करे, तरुअे (कथीर) का संचय करे, सीसे का संचय करे, रूपे का
संचय करे, सुवर्ण का संचय करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ उक्त वस्तुओं धारन करे, धारन करते
को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ उक्त वस्तु को वारम्वार भोग में लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु
माता समान इन्द्रियों की धारन करनेवाली स्त्री से मैथुन की इच्छा करके हार [१८ सरा] अर्धहार [९ सरा]
एकवली, मुक्तावली, कनकावली, रत्नावली, कडे, वाजूबंद, कंदोरा, कुंडल, पायजेब, मऊड, लग्वे-झूमरे, सोने की
सकली, बनावे बनाते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ उक्त भूषण धारण करे धारन करते को अच्छा जाने

सूत्र

एवं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ एवं परिभुंजइ, परिभुंजंतं साइज्जइ ॥१०॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-आयणाणि वा, आइणपावाराणि वा, कंबलाणि वा, कंबलपावाराणि वा, कायराणि वा, कायरपावाराणि वा, कालमियाणि वा, णीलमियाणि वा, गोरमियाणि, वा, सामाणि वा, महासामाणि वा, उट्टाणि वा, उट्टलेसाणि वा, वघाणि वा, विवघाणि वा, परवगाणि वा, सिहगाणि वा, सिहणवराणि वा, खोमाणि वा, दुगलाणि वा, तारिडपट्टणाणि वा, पतुलाणि वा, सामाआवरंत्ताणिवा, चीणाणि वा, अंसुआणि

अर्थ

॥ ९ ॥ उक्त भूषण वारम्वार भोगवे वारम्वार भोगवते को अच्छा जने ॥ १० ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों वाली स्त्री से मैथुन की इच्छा कर अजीर्ण-कमाया हुवा चर्म, चर्म के ओढने के वस्त्र, कम्बल का खंड, कम्बल ओढने के लिये, कायर जाति का वस्त्र खण्ड, कायर वस्त्र ओढने को, कृष्ण मृग का चर्म, कृष्ण मृग चर्म ओढने के लिये, श्वेत मृग का चर्म, श्वेत मृग का चर्म ओढने के लिये, श्याम वस्त्र खंड, महा श्याम वस्त्र, ऊंठ का चर्म, व्याघ्र का चर्म, बडे वाघ का चर्म, साप का चर्म, सिंह का चर्म, सिंह का चर्म ओढने जैसा, कपास का वस्त्र, दुकूल-आंक के वस्त्र, तिरड वृक्ष की छाल के वस्त्र, तंतूके पाट समान उस के वस्त्र, सामदेश के वस्त्र, चीनदेशोत्पन्न वस्त्र, सूक्ष्म [पतऊं] वस्त्र, सुवर्ण के तार के वस्त्र,

वा, कणगकंताणि वा, कणगखंसियाणि वा, कणगचित्ताणि वा, कणगविचित्ता-णि वा, आभरणाणि वा, आभरणविचित्ताणि वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥११॥ एवं धरेइ, धरंतं वा, साइज्जइ ॥ १२ ॥ एवं परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए- अंखिसि वा, उरुंसि वा, उदरांसि वा, थणंसि वा, गहाय संचालेइ, संचालंतं वा, साइज्जइ॥१४॥ जे भिक्खू माउ-ग्गमस्स मेहुण वडियाए-अण्णमण्णस्सपाए, अमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा, पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥१५॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुणवडियाए—अण्णमण्णस्स पाए

अर्थ

सुवर्ण के पत्र के वस्त्र, सुवर्ण के चित्र फूलादि, किये वस्त्र, सुवर्ण के विचित्र प्रकार बनाये वस्त्र, आभरण-भूषण मंडित वस्त्र, विचित्र प्रकार के आभरण से मंडित वस्त्र, बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ उक्त प्रकार के वस्त्र धारन करे, धारन करते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ उक्त प्रकार के वस्त्रों को भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रिय को धारन करने वाली स्त्री से मैथुन की इच्छा कर, आंखों, जंघा, पेट, स्तन, हाथ में ग्रहण कर संचलन करे करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारन करनेवाले स्त्री से मैथुन की इच्छा कर परस्पर एकेक के पांवों को पूंजे झाडे विशेष पूंजे पूंनते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की

सूत्र

संबाहेज्ज वा, पलिमंदेज्ज वा, संबाहंतं वा पलिमंदंतं वा साइज्जइ ॥ १ ६॥ एवंतइओ उद्देसो जो गमओ सोचेव इहंपि णेयव्वो जाव जे भिक्खू माओग्गमस्स मेहुणं वडियाए गामाणुगामं दुईज्जमाणे अण्णमण्णस्स सीसदुवारियं करेइ, करंतं वा, साइज्जइ ॥७०॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए अणंतरहियाए पुढवीए निसीयावेज्ज वा, तुयट्टावेज्ज वा, निसियावंतं वा, तुयट्टावंतं वा साइज्जइ॥७१॥एवं ससणिद्धं वा पुढवीए॥७२॥ एवं संसरक्खाए पुढवीए-मट्टिया-कडाएपुढवीए-चित्तमंताए सिलाए-चित्तमंताए लेलुए-

अर्थ

धारक स्त्री से मैथुन की इच्छा कर परस्पर एकेक के पांव मशले, वारम्वार मशले. मशलते कों अच्छा जाने ॥ यों जिस प्रकार तीसरे उदेश में कहा त्रे १६ वे सूत्र से ७१ वे सूत्र तक सब ५५ सूत्र यहां कहना यावत् उस का अन्तिम सूत्र जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की इच्छा करता हुवा परस्पर एकेक का मस्तक ढके ढकते को अच्छा जाने ॥ ७० ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की इच्छा कर सचित्त पृथ्वी (जो पानी शीत तापादि शस्त्र परिणमने से अचित्त नहीं बनी हो, उस पर बैठे, शयन करे, बैठते शयन करतेको अच्छा जाने ॥ ११ ॥ ऐसे ही सचित्त पानी से भींजी पृथ्वी पर बैठे शयन करे करते को अच्छा जाने॥ ७१ ॥ ऐसे ही सचित्त रज से भरी हुई पृथ्वी पर बैठे शयन करे, करते को अच्छा जाने ॥७२॥ ऐसे ही मट्टी के

सूत्र

कोलावासंसि वा· दारुय जीवपइट्ठए-सअंडे, सपाणे-सबीए-सहरिए, सओसे-सउतिंग-पणग-दग, मट्टिय, मकडा-संता गगंसि णिसियावेज्ज वा, तुयट्टावेज्ज वा, निसीयावंतं वा, तुयट्टावंत वा, साइज्जइ ॥ ७३ ॥ जे भिक्खू माओगामस्स मेहुण वडियाए आगंतारेसु वा, जाव परियसहेसु वा, णिसीयावेज्ज वा, तुयट्टावेज्ज वा, निसीयावंतं वा तुयट्टावंतं वा साइज्जइ ॥ ७४ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण वडियाए-आगंतारेसु वा, जाव

अर्थ

होती हो परंतु ऊपर धक्का लगने से अन्दर के जीवों की उपघात होती हो ऐसी कढाइ पृथ्वी पर. सचित्त सिला पर. सचित्त कंकरों पर. मकडी के जाले उदाइ के घर करोली के खडे वगैरह बहुत जीवों का स्थान हो वां तैसे ही सडे हुवे लकड पर. जिस स्थान शयनासन में अडे होवे, बेइन्द्रियादि प्राणी होवे, मुंह चनादि बीज होवे. हरित काय होवे, चींटियों दीमक के नगरे होवे, फूलन होवे, पानी भरा होवे. जाले अंडे होवे. ऐसे स्थान में शयनासन पर बैठे शयनासन करे करते को अच्छा जाने ॥ ७३ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की इच्छा कर मुशाफरों के उतरने की सराय में. बगीचे के बंगले में, गृहस्थ के घर में, तापसों के मठ में, बैठे शयन करे. बैठते शयन करतें को अच्छा जाने ॥ ७४ ॥ जो साधु माता के समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की इच्छाकर मुशाफर खाने में यावत् तापसों के आश्रम में बैठे शयन करे अशनादि चारों मक-

पंरिवेसहेसु वा, णिसीयावेतं वा तुयट्टावेतं वा अणसणं वा ४ अणुघासेज्ज वा, अणुपाएज्जवा, अणुघासंतं वा, अणुपायंतं वा साइज्जइ ॥ ७५ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण आडियाए अंकंसि वा, पलियंकंसि वा, णिसीयावेज्ज वा, तुयट्टावेज्ज वा, निसीयावेतं वा, तुयट्टावेतं वा, साइज्जइ ॥ ७६ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडिया-अंकंसि वा, पलियंकंसि वा, णिसीयावेतं वा, तुयट्टावेतं वा, असणं ४, अणुघासेज्ज वा, अणुपाएज्ज वा, अणुघासंतं वा, अणुपायंतं वा, साइज्जइ ॥ ७७ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-तिगिच्छ आउट्टइ, आउट्टंतं वा साइज्जइ ॥ ७८ ॥ जे भिक्खू

अर्थ

के आहार का ग्रास आप स्त्री को देवे स्त्री देवे वह आप लेवे. दुग्धादि का पान स्त्री को करावे आप करे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ७५ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री से मैथुन की अभीलाषा करके अपनी गोदी में, पर्यंक [पल्यंक] में बैठावे, शयन करावे. ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ७६ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की इच्छा कर गोदी में बैठा पर्यंक पर बैठा अशनादि चारों प्रकार का आहार उस को खिलावे, आप खावे, दुग्धादि उसे पावे आप पीवे. ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ७७ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की अभिलाषा करके वात पित कफ सन्नीपातादि रोग की औषधी

माउग्गस्स मेहुण वडियाए-अमणुण्णाइं पोग्गलाइं निहरेइ निहरेतं वा साइज्जइ ॥७९॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-मणुन्नाइं पोग्गलाइं उवाकिरइ, उव किरंतं वा साइज्जइ ॥ ८० ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-अण्णयरं पसुज्जाइं वा, पक्खिजाइं वा,पायंसि वा, पक्खिसि वा,पुच्छंसि वा,सीसंसि वा,गहाय संचालेइ, संचालंतं वा साइज्जइ ॥ ८१ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-अण्णयरंपसुजायं वा, पक्खिजायं वा, सोयंसि वा, कंठवा, कालिचिएण वा, अंगुलियाए वा, सिलागं वा,

करे, करते को अच्छा जाने ॥ ७८ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की अभिलाषा करके शरीर के, वस्त्र के, स्थानक के अमोज्ञ पुद्गलों दूर करे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ७९ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की इच्छा कर मनोज्ञ- अच्छे सुगंधी पुद्गलों शरीर में वस्त्र में स्थानक में प्रक्षेप करे. ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ८० ॥ जो साधु माता समान अवयव वाली स्त्री के साथ मैथुन की इच्छाकर अन्य गौआदि पशु जातिका मयुरादि पक्षी जातिका पांव पूंछ मस्तक ग्रहण करके अपने गुप्त अंग को लगावे ऐसे करतेको अच्छा जाने ॥८१॥ जो साधु माता समान स्त्रीसे मैथुन की इच्छा कर अन्य किसी पशु जाति पक्षी जाति के गुह्य स्थान में काष्ट वांस अंगुली शलाका प्रक्षेप कर

अणुपावासित्ता संचालेइ, संचलंतं वा साइज्जइ ॥ ८२ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-अण्णयरं पसुजायं वा, पक्खिजायं वा अयंइत्थि त्तिकट्टु, अलंगेज्ज वा, परिसएज्ज वा, परिंचुम्भेज्ज वा, अलंगंतं वा, परिसयंतं वा, परिचुम्भंतं वा, साइज्जइ ॥ ८३ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए असणं वा ४ देइ, देयंतं वा, साइज्जइ ॥ ८४ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुच्छणं वा, देइ, देयंतं वा, साइज्जइ ॥ ८५ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए- असणं वा, ४ पडिच्छेइ, पडिच्छंतं वा, साइज्जइ

अर्थ

हलावे चलावे ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ८२ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की अभिलाषा कर अन्य किसी पशु जाति पक्षी जाति को यह स्त्री है ऐसा मन में संकल्प कर आलिंगन करे, चुम्बन लेवे शरीर से शरीर मिलावे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ८३ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की अभिलाषा करके अशनादि चारों आहार देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ८४ ॥ जो साधु माता समान स्त्री साथ मैथुन की अभिलाषा करके वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ८५ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की अभिलाषा कर अशनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को

॥ ८६ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-वत्थं वा, ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा, साइज्जइ ॥ ८७ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-वाएइ, वायवायंतं वा, साइज्जइ ॥ ८८ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-वाएइयं पाडिच्छइ, पडिच्छंतं वा, साइज्जइ ॥ ८९ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए- सज्झायंदेइ, देयंतं वा, साइज्जइ ॥ ९० जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए- सज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा, साइज्जइ ॥ ९१ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-अण्णयरेणं इंदिएणं आकारं करेइ, करंतं वा,

अच्छा जाने ॥ ८६ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की अभिलाषा कर वस्त्र पात्र कम्बल रजो-हरण ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ८७ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की इच्छा कर शास्त्र की वाचनी देवे, देते को अच्छा जाने ॥८८॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुनकी इच्छा कर वांचनी लेवे लेतेको अच्छा जाने॥८९॥ जो साधु माता समान अवयवकी धारक स्त्री से मैथुनकी इच्छा कर सूत्र पढावे, पढाते को अच्छा जाने ॥ ९० ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की इच्छा कर सूत्र पढे पढतेको अच्छा जाने॥९१॥जो साधु माता समान स्त्री से मैथुनकी इच्छाकर अन्य किसी वस्तुका स्त्रीके अंगोपांग का आकार बनावे [वह स्त्री को बताने से उसे काम राग उत्पन्न होवे तथा आपकू चेष्टा करे] ऐसा करतेको

सूत्र

साइज्जइ ॥ १२ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चउमासियं परिहारियं ठाणं अणुग्घाइयं ॥ निसीह ज्झयणस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ * *

अर्थ

अच्छा जाने ॥१२॥ इन दोषों में से किसी एक दोष सेवन करने वालेको अथवा विशेष बोल सेवन करने वालेको गरु चतुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है. जो उक्त दोष-परवशपने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ छट, (बेले) उत्कृष्ट १२० उपवास, आतुरता से उपयोग सहित दोष लगे तो जघन्य ४ छट, ४ तथा दिनका छेद, मध्यम ४ अठम तथा ६ दिनका छेद, उत्कृष्ट १२० उप० पारने नीवी तथा १०८ दिनका छेद, मोहोदय मूर्च्छाभाव से लगावे तो जघन्य ४ अठम, तथा ६ दिन का छेद, मध्यम १५ अठम तथा ६० दिन का छेद, उत्कृष्ट १२० उपवास. पारणे आयंबिल तथा १२० दिन का छेद, इति निसीथ सूत्र का सातवा उद्देशा समाप्तम् ॥ ७ ॥ *

॥ आठवा-उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू आगंतारेसु वा, जाव परियावसहेसु वा, एगो एगत्थीएसद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा, ४ आहारेइ, उच्चारं वा, पासवणं वा, परिट्ठवेइ, अण्णयरं वा अणारियं निट्ठुरं मेहुणं असमणपाओगं कहंकहेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू उज्जाणंसि वा, उज्जाणगिहांसि वा, उज्जाणसालंसि वा, निज्जाणंसि वा, निज्जाणगिहंसि वा, निज्जाणसालंसि वा, एगो एगत्थिएसद्धिं जाव कहं कहेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू अट्टंसि वा, अट्टालयंसि वा, चरियंसि वा,

अर्थ

जो साधु मुशाफरखाने में, बगीचे के बंगले में, गृहस्थ के मकान में यावत् तापसों के आश्रम में, आप अकेला अकेली स्त्री साथ (अथवा साध्वी के साथ) विहार करे, स्वाध्याय करे, अशनादि चारों प्रकार का आहार भोगवे, बडी नीत लघुनीत परिठावे. अन्य भी काम विकार की उत्पादक निष्ठूर कथा मैथुन सम्बन्धी साधु के नहीं करने योग्य ऐसी पाप कर्म की कथा स्वयं कहे, अन्य कहता हो उसे अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु उद्यान-बगीचे में, बगीचे के बंगले में. बगीचे के पडशाल में, निजान-राजादि के निकलने के स्थान में, निकलने के स्थान के मकान में. निकले की शाला में, अकेली स्त्री साथ कथा कहे आदि उक्त कार्य करे, करते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु ग्रामादि के कोट की अटाली (प्रतिकोट)

सूत्र

पागारंसि वा, दारंसि वा, गोपुरंसि वा, एगो एगइत्थिसार्द्धं जाव कहं करेइ कहतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू दगंसि वा, दगमग्गांसि वा, दगपहंसि वा, दगमलंसि वा, दगतीरंसि वा, दगठाणंसि वा, एगो एगत्थिएसद्धिं जाव कहं करेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू सुण्णगिहंसि वा, सुण्णसालंसि वा, भिण्णगिहंसि वा, भिण्णसालंसि वा, कुडागारंसि वा, कोठागारंसि वा, एगो एगइत्थिएसद्धिं जाव कहं कहेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू तणगिहंसि वा, तणसालंसि वा, तुसगिहंसि वा, तुससालंसि वा, भुसगिहंसि वा, भुससालंसि वा, एगो एगत्थीएसार्द्धं

अर्थ

में, आटाली के मकान में, रास्ते में, कोट पर के स्थान (बुरजादि) में, द्वार में, ग्राम प्रवेश करने के गोपुर (दरवजे) में, अकेला अकेली स्त्री के साथ कथा कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु पानी के स्थान में, पानी लाने के रास्ते में, पानी के नेहर में, पानी का ऊंचा स्थान दगमल में, पानी के किनारे, पानी में बनाये स्थानों में, अकेला अकेली स्त्री के साथ कथा कहे. कहते को अच्छा जाने ॥४॥ जो साधु शुन्य घर में, शुन्य शाला में, फूटे घर में, फूटी शाला में कुटाकार (पर्वत के शिखर के आकार) स्थान में, धान्यादि के कोठार में अकेला अकेली स्त्री के साथ कथा कहे कहते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु तृण (घास) के घर में, तृण की शाला में, तुसों के घर में, तुस की शाला में, भूंसे के घर में,

सूत्र

जाव कहं कहेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥६॥ जे भिक्खू जाणसालंसि वा, जाणगिहंसि वा, जुगसालंसि वा, जुगगिहंसि वा, एगो एगइत्थियंतद्धिं जाव कहं कहेइ, कहंत वा, साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू पणियसालंसि वा, पणियगिहंसि वा, कुवियसालंसि वा, कुवियगिहंसि वा, एगो एगात्थियसद्धिं कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥८॥ जे भिक्खू गोण-सालंसि वा, गोणगिहंसि वा, महाकुलंसि वा, महागिहंसि वा, एगो एगित्थिए सद्धिं जाव कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू राओवा वियाले

अर्थ

भूसे की शाला में, अकेला अकेली स्त्री के साथ यावत् कथा कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु रथ शाला में, रथ के घर में, गाडे की शाले में, गाडे के घर में, अकेला अकेली स्त्री को कथा कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु किरियाने की दुकान में, किरियाना भरा हो उस घर में, लोहादि धातु की दुकान में, धातु संग्रह किया हो उस घर में, अकेला अकेली स्त्री के साथ कथा कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु बैलों की शाला में, बैलों के घर में, महा कुल-ईभपति आदि की कुल में महा कुलवाले के घर में अथवा विशाल मकान में अकेला अकेली स्त्री के साथ कथा कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु रात्रि को अथवा सन्ध्या समय स्त्रीयों से घेराया हुवा, स्त्रीयों के परि-

सूत्र

वा, इत्थिमज्झगए इत्थिसंसत्ते इत्थिपरिवुडे अपरिमाणए कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू सगणिज्जियाए वा, परिगणिज्जियाए वा, निग्गंथीए सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ गच्छमाणे पिट्ठओ रीयमाणे, उहत्त माण संकप्पे-चिंता सोगसागरं संपविट्ठे करतल पहत्थमुहे अट्टझाणोवगए विहारं वा करेइ जाव कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा, उवासयं वा, अणुवासयं वा, अंतो उवस्सयस्स अद्धवरायं कसिणंवरायं संवसावेइ,

अर्थ

वार से परिवरा हुवा अपरिमान अर्थात् विना गिनती की काल का या कथा का प्रमाण न रखे ऐसी धर्म कथा कहे, कहतेको अच्छा जाने ॥१०॥ जो साधु अपनी शिष्यनी [साध्वी] अपने गच्छकी साध्वी के तथा पर गच्छकी साध्वी के साथ ग्रामानुग्राम विहार करता हुवा कभी आगे चलाजावे कभी पीछे रहजावे. तब साध्वी के वियोग कर दुःखित हुवा मन में संकल्प विकल्प कर चिन्ता रूपी समुद्र में प्रवेश कर हस्त तल पर मुख स्थापन कर आर्त ध्यानोपगत हुवा-आर्त ध्यान में प्रवेश किया विहार करे, यावत् कथा कहे कहते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु अपने गृहस्थावास के स्वजनों श्रावक होवे अथवा श्रावक न भी हो किन्तु उन के साथ अपने उपाश्रय के-स्थानक के अंदर प्रतिपूर्ण रात्रि तक एक स्थान रखे. उन को कहे तुम

यह ११ कलमों साध्वी को पुरुष आश्रिय सब इस ही प्रकार कहना,

सूत्र

संवसावंता साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू तं न पडियाएक्खेइ, न पडियाइक्खंतं वा, साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू तं पडुच निक्खमेइ वा, पविसेइ वा, निक्खमंतं वा, पविसीतंवाइ साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू रण्णोखतियाणं मुदियाणं, मुदाभिसिताणं वा, पिंडमहेसु वा, समयमहेसु वा, जाव असणं वा, ४ पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खू रण्णोखत्तियाणं जाव भिसित्ताणं उत्तरसा-

अर्थ

रात्रिको मेरे पास शयन करो यों कह पास रखे पासमें रखे उनको अच्छा जाने ※॥१२॥ जो साधु के पास स्वजनादि रहते हुवे को अपने से दूर रहने का नहीं कहे, दूर रहने का नहीं कहते को अच्छा जाने ॥१३॥ जो साधु अपने संसारी सम्बन्धीयों के साथ उपाश्रय से बाहिर जावे, साथ ही पीछा आवे, साथ जाते आते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु राजा क्षत्रिय जाति का हो मातापिता की जाति का उत्तम पक्षवाला, राज्याभिषेक युक्त हो उनोंने गोत्रज को भोजन देने का उत्सव रचा इन्द्रोत्सवादि रचा उस के लिये अशनादि चारों प्रकार का आहार बनाया उस आहार में से ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने ※ ॥ १५ ॥ जो साधु क्षत्री राजा के बैठने के मंडप स्थान से अशनादि ग्रहण करे,

※उन के वस्त्रादि का संघटन हो पुनः मोह जाग्रत होवे, घर सम्बन्धी कार्यों का स्मरण हो विषाद प्राप्त होवे, लोकों में भी विरूद्ध देखावे परतु वे अलग रहकर धर्म ध्यान करे आप उनका परिचय न करे तो दोष नहीं.

※ क्यों कि बहुत मनुष्यो के समुह में आवागमन करते मर्यादा न रहे, स्त्री सचित्त वस्तु आदि का सघटा

लंसि वा, उत्तरगिहांसि वा, रायमाणाणं असणं वा, ४ पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं-हयसाल गयाणं वा, गयसाल गयाणं, मंतसाल गयाणं वा, गुझसाल गयाणं वा, रहससाल गयाणं वा, मेहुणसाल गयाणं वा, असणं वा ४ पडिग्गहेइ, पडिग्गाहेतं वा, साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू रण्णोखत्तियाणं जाव भिसीताणं-साणिहि सणिवियाओ खीरं वा, दहिं वा, नवणियं वा, सप्पिं वा, गुलं वा, खंडं वा, सक्करं वा, मच्छंडियं वा,

अर्थ

ग्रहण करनेको अच्छा जाने ॥१६॥ जो साधु क्षत्रि राजा माता पिताकी उत्तम जाति वाला राज्याभिषेक युक्त हो उस की घोडे की शाला में, हस्ति की शाला में, विचार करने की सम्मति शाला में, गुह्य-गुप्त कार्य करने की शाला में, रहस्य कार्य की शाला में, मैथुन सेवन करने की शाला में, इन स्थानों में अशनादि चारों प्रकारका आहार लेने जावे आहार ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने* ॥१७॥ जो साधु क्षत्री राजा अभिषेक युक्त उन के रहां-विन शि-(पक्वानादि) आविनाशिक (मेवादि) संग्रह करनेको जो द्रव्य एकत्र किये हो

होवे, भीड में अथडानें से वस्त्र पात्र शरीर की विराधना होवे, इत्यादि दोष स्थान जान कर वरजे.

* ऐसे स्थान में जाने से साधु की अप्रतीत होती है, राजा कोपित होवे तो महादोष उत्पन्न होता है.

सूत्र

अण्णयरं वा, भोयणं जायं पडिग्गहेइ, पडिग्गाहेतं वा, साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू रण्णोखत्तियाणं जाव भिसित्ताणं-उसट्ठपिंडं वा, संसट्ठपिंडंवा अणाहंपिंड वा, किविणंपिंडं वा, वणीमग पिंडं वा, पडिग्गहेइ पडिग्गहेतं वा, साइजइ ॥ ८ ९ ॥ तं सेवमाणेआवज्जइ चाउमासियं परिहारठाणं अणुग्घाइयं ॥ निसीह ज्झयण अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ८ ॥

अर्थ

मक्खन, घृत, गुड, शक्कर, मिश्री, बूरा, अन्य भी भोजन को ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु क्षत्री राजा अभिशेप युक्त उन का निशान्त आहार न्हखने को (डालने को) ले जाते हों वह आहार, खाते हुवे बचा हो वह आहार, अनाथ जीवों अबधव जीवों गरीबों के लिये निपजाया वह आहार, कृपन के लिये निपजाया आहार, रंक भिक्षु को के लिये निपजाया आहार, इत्यादि प्रकार के आहार में का आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ यह उन्नीस बोलों में का एकादि दोष सेवन करे तथा विशेप दोप सेवन करे, उसे गुरु चौमासिक प्रायःश्चित्त आता है. गुरु चौमासिक प्रायःश्चित्त—परवश्य पने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ छठ्ठ, उत्कृष्ट १२० उपवास, आतुरता से उपयोग सहित लगावे तो, जघन्य ४ छठ्ठ तथा ४ दिनका छेद, मध्यम ४ अठम तथा ६ दिन का छेद, उत्कृष्ट १२० उपवास तथा १०८ दिन का छेद, और मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ अठम तथा ६ दिन का छेद, मध्यम १६ अठाम तथा ६० दिन का छेद, उत्कृष्ट १२० उपवास पारणे आयंबिल तथा १२० दिनका छेद, इति निशीथ का आठवा उद्देशा संपूर्ण ॥ ८ ॥

॥ नववा—उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू रायपिंड गेण्हेइ, गेण्हंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खु रायपिंडं भुंजइ, भुंजतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू रायंतेपुरं पविसइ, पविसंतं वा, साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू रायंतेपुरं वएज्जा-आउसो ! रायंतेपुरए णो खलु अम्हं कप्पइ रायंतेपुरं णिखमित्तए वा, पविसितए वा, इमम्हं तुमं पडिग्गहंगहाय

अर्थ

जो साधु साध्वी चक्रवर्ती आदि राजाओं का पिंड (आहार) ग्रहण करे तथा ग्रहण करते को अच्छा जाने *॥ १ ॥ जो साधु साध्वी राजपिंड भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु राजा के अंतेपुर (रनवास) में प्रवेश करे प्रवेश करते को अच्छा जाने *॥३॥ जो साधु राजा के अंतेपुर के द्वारपाल आदि को कहे कि अहो आयुष्मन्त ! मेरे को तो राज्यंतेपुर म जाना आना कल्पता नहीं है. परंतु तुम

---

* राजा के अंग-१ सेनापति, २ प्रधान. ३ पुरोहित, ४ शेठ, और ५सार्थवाही यह पांच कहे. इन के यहां से चार प्रकार का आहार और ५ वस्त्र, ६ पात्र, ७ कम्बल, ८ रजोहरण यह आठ प्रकार का पिंड ग्रहण करने का निषेध किया है क्यों कि-खुशामगी करनी पडे, चढती वस्तु मिलने से मोह वृद्धि, मर्यादा भंग, अधिक संग्रह, असमाधिभाव, चोरादि का उपद्रव, लालच बडने से एषण समिति की घात, वगैरह दोषोत्पत्ति होती है.

* राज्ञीओं का रूप लावण्यता शृंगार राग यान भोग पदार्थ देखकर मोह वृद्धि का कारण तथा राजादि को संशय होने से आत्मघात सयम घात धर्म हीलना का प्रसंग आता है, इसलिये कोई प्रतितकारी स्त्री पुरुष औषधादि लिये म किसी धर्म वृद्धि लिये ले जावे तो आप मर्यादित स्थान मे ही खडा रहकर कार्य साधे.

सूत्र

रायंतेपुराओ असणं वा,४ अभिहडं आहट्टु दलयाहिं, जो तं एवं वदेइ, वदंतं वा, साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू रायाणं रायंतेपुरिया वएज्जा-अउसंते समणा ! णो खलु तुब्भं कप्पइ रायंतेपुरं णिक्खमितए वा, पविसितए वा, आहारेयं पडिग्गहं जायते अहं रायंतेपुराओ असणं वा, ४ अभिहडं आहट्टु, दलयामि, जो तं एवं वदइ पडिसुणेइ पडिसुणंतं, वा, साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू रण्णा खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं-दुवारिय भत्ते वा, पसु भत्ते वा, भयग भत्ते वा, बल भत्ते वा, कय भत्ते वा,

अर्थ

यह हमारे पात्रे ग्रहण करो और इस में राजा के अंतेपुर से अशनादि चारों प्रकार का आहार मुझे यहां सन्मुख लाकर देवो. इस प्रकार कहे या कहते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु को कोई अंतेपुर का रक्षक ऐसा कहे कि अहो साधु ! तुमारे को तो राज्यंतेपुर में जाना आना नहीं कल्पता है परंतु तुमारे पात्रे मुझे दो मैं राज्य के अंतेपुर में से अशनादि चारों आहार तुम को सन्मुख लाकर देता हूं. इस प्रकार वह कहे उस के वचन को माने, मानते को अच्छा जाने *॥ ५ ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा जिस का राज्याभिषेक हुवा हो यावत् उत्तम जातिवाला हो उस के वहां भोजन निष्पन्न हुआ हो उस में १ द्वारपाल का भाग, २ पशु-जानवरों का भाग, ३ नोकरों का भाग ४ देवता के बलीदान का भाग, ५ घर के दास

* उस के गमनागमन करने में जीव घात हो, अशुद्ध अनेषनी का आहार आवे, लघुता लगे इत्यादि दोष लगे.

सूत्र

हय भत्ते वा, गय भत्ते वा, कंतार भत्ते वा, दुभिक्ख भत्ते वा, दुकाल भत्ते वा, दुमग भत्ते वा, गिलाण भत्ते वा' वद्दलिया भत्ते वा, पाहुड भत्ते वा, पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं इमाइं छ दोसाइं आयतणायं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय, परं चऊरायं पंचरायाओ गाहावइकुलं पिंडवायं पडियाए, णिक्खमइतए वा, पविसइत्तए वा, णिक्खमंतं वा, पविसंतं वा, साइज्जइ तंजहा-कोठागार सालाणि वा, भंडागार सा

अर्थ

दासीयों का भाग, ६ घोडे का भाग, ७ हाथी का भाग, ८ आटवी उल्लंघन कर आये हो उन का भाग, ९ दुर्भिक्ष-जिन को भिक्षा न मिलती हो ऐसों का भाग, १० दुष्काल से पीडित गरीबों का भाग, ११ द्रुमक-भिखारीयों का भाग, १२ रोगीयों का-अशक्तों का भाग, १३ पानी की वर्षाद न होने से दान करने का भाग, १४ पाहूणे आये उन को जीमाने का भाग, यों १५ प्रकार के भाग में का आहार ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने * ॥ ६ ॥ जो साधु साध्वी राजा राज्याभिषेकिया हुवा उस के आगे कहेंगे वे छदोष स्थान को अनजाने अनपूछे विना गवेषना किये.चार रात्रि या पांच रात्रि उपरांत गृहस्थ के घर आहार लेने निकले उस गृहस्थ के घर में प्रवेश करे.प्रवेश करते को अच्छा जाने. उन दोष स्थान के नाम

* उन को अंतराय लगे उस से उन को द्वेष भी उत्पन्न होवे, साधु की अप्रतीत हो लघुता लगे इत्यादि दोष लगे.

सूत्र
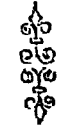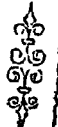
लाणि वा, खीर सालाणि वा, पाण सालाणि वा, गज सालाणि वा, महाण सालाणि वा, ॥ ७ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव मुद्धाभिसीताणं अइतिगच्छमाणाण वा, निगच्छमाणाण वा, पयमवि चक्खूदंसणं वडियाए-अभिसंधारेइ, अभिसंधारेतं वा, साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं इत्थीओ सव्वालंकार विभूसियाओ पयमवि चक्खूदंसण वडियाए-अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू रण्णोखत्तियाणं जाव भिसीत्ताणं मसकखायाण वा,

अर्थ

१ धान्य के कोठार की शाला, २ धन के भंडार की शाला, ३ दुग्ध दही आदि स्थापन करने की शाला ४ राजाजी के पानी पीने की शाला, ५ वस्त्र भूषण की शाला, और ६ भोजन की शाला ॥ ७ ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा राज्याभिषेक युक्त वह नगर में प्रवेश करता हो, नगर से बाहिर जाता हो उस को देखने का भी जो मन में विचार करे तथा विचार करते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा यावत् राज्याभिषेक युक्त राजा उस की स्त्रीयों सर्व प्रकार के श्रृंगार से सज हो आती जाती हो उन का पांव मात्र भी चक्षु से देखने का विचार करे, करते को अच्छा जाने * ॥ ९ ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा

१ कदाचित् चोरी हो जावे या विषादि प्रयोग हो जावे तो साधु का वेम आने से महा अनर्थ हो जावे.

* अपशकुनादि मान अपमान करे तथा कौतुक देखने से लघुता लगे.

मच्छवक्खायाण वा, छवियक्खायाण वा, बहिया निग्गयाणं असणं वा ४ जाव साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू रण्णोखत्तियाणं जाव भिसीताणं अण्णयरं उववूहणिहियं समिहियं पेहाए, ताए परिसाए, अणुट्टियाए अभिण्णाए अव्वोच्छिन्नाए, जो तं माणं असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू अहं पुण एवं जाणेज्जा-इहजराया खत्तिए परिवूसिए, जे भिक्खू ताए गिहाए ताएविहार ताए पएसाए ताए उवासंतराए, विहारं वा करेई, सज्झायं वा करेइ, असणं वा ४

यावत राज्याभिषेक युक्त राजा वह मृगादि का मांस भक्षण का अर्थी. जलचर मच्छादि भक्षणों का अर्थी या खेतों में वाडों में फली भुट्टे होले आदि खाने का अर्थी हो बाहिर निकला हो वहां. अशनादि चारों आहार निष्पन्न किये हों उसे ग्रहण करने की अभिलाषा करे, अभिलाषा करते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा राज्याभिषेक युक्त उसके कोई भेटना-नजराना आया हो उसकी सभा भराइ हो. राजा आदि सब लोग सभा में बैठे हों अभी तक कोई उठा नहीं है. कोई बाहिर आया नहीं. उस अवसर में जो साधु अशनादि चार प्रकारका आहार ग्रहण करने निकले, निकलतेको अच्छा जाने (पूर्वोक्त राजा पिंडादि का दोष लगे)॥११॥जो साधु साध्वीके ऐसा जानने में आवेकी इस स्थान राजा निवासकर रहा है, फिर जो साधु साध्वी वहां नजीकमें उसही स्थान के देश प्रदेशमें अवकासान्तरमें विचरते हो वे जो वहां स्वाध्याय

आहारेइ, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, अण्णयरं वा अणारियं असमण पाओगं कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू रण्णोखत्तियाणं जाव भिसीताणं बहिया जत्ता संपट्ठियाणं असणं वा ४ पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीताणं बाहिया जत्ता पडिनियत्ताणं असणं वा ४ पडिग्गाहेहि पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ एवं णदिजत्ता संपट्ठियाणं ॥ १५ ॥ एवं णदिजत्ता पडिणियत्ताणं ॥१६॥ एवं गिरिजत्ता संपट्ठियाणं ॥ १७ ॥ एवं गिरिजता पडिणियत्ताणं ॥ १८ ॥ जे भिक्खू रण्णो खतियाणं जाव भिसीताणं महाभिसियंसि वट्टमाणंसि निक्खमइ वा पविसइ वा, निक्खमंतं वा पविसतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव

अर्थ

करे अशनादि चारों आहार भोगवे, बडी नीत लघुनीत परीठवे, अन्य अनार्य लोगोंको साधु के अयोग्य कथा कहे, इतने काम आप करे और अन्य करते हों उन्हे अच्छा जाने॥१२॥ जो साधु क्षत्रीय राजा राज्याभिषेक युक्त वह बाहिर यात्र के लिये जाता हो वहां से अशनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥१३॥ जो साधु क्षत्रीय राजा का यावत् राज्याभिषेक होता हो उस वक्त आवागमन करे, करते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु क्षत्रीय राजा यावत् अभिषेक युक्त उस की आगे

भिसीताणं इमा दस अभिसेखाओ रायहाणीओ दिट्ठाओ, गणियाओ, वंजियाओ, अंतो मासस्स दुखूत्तो वा तिक्खूत्तो वा निक्खामइ वा पविसइ वा, निखमंतं वा पविसंतं वा साइज्जइ तंजहा—चंपा, महुरा, वणारसी, सावत्थी, साकेयं, कंपिल्ल, कोसंबी, मिहिला, हत्थिणापुरं, रायगिहं, ॥ २० ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीताणं असणं वा ४ परस्स णीहडं पडिग्गहेइ, पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ तंजहा-खत्तियाणि वा, रायाणि वा, कुरायाणि वा, रायपेसीयाणी वा, रायवासियाणि वा,

अर्थ

कहेंगे उन दश महा राज्याभिषेक की राज्यधानीयों में राज्योत्सव होता हो तब एक महिने में दो वक्त तीन वक्त प्रवेश करे निकले जाते आते को अच्छा जाने उन दश राज्यधानी नगर के नाम—१ चम्पा, २ मथुरा, ३ बानारसी, ४ श्रावस्ति, ५ साकेत पुरी, ६ कंपिलपुरी, ७ कोसंबी, ८ मिथिला, ९ हस्तिनापुरी, और १० राज्यगृही * ॥ २० ॥ जो साधु क्षत्री राजा यावत् राज्याभिषेक युक्त उस के वहां अशनादि चारों प्रकार का आहार आगे कहेंगे उन के लिये निपजा हो उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने. उन के नाम—१ क्षत्रीयों के लिये, २ राजाओं के लिये, ३ देशांतर में रहने वालों के लिये, ४ राजा के नोकरों के लिये और ५ राज वंसीयों

* जो वहां रहा हो और उत्सवारम्भ हुवा हो तो वहां से विहार कर जावे, इस लिये एक वक्त का नहीं कहा परन्तु दो तीन वक्त का कहा है.

साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं असणं वा ४ परस्सनिहडं पडिग्गहेइ पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ तंजहा—नडणावा, नट्टयाण वा, कडुयाण वा, जलायाण वा, मल्लाण वा, मुट्ठियाणि वा, वेलंवयाणि वा, कहगाणं वा, पवगाणं वा, लासगाणं वा, खेलाणं वा, छत्ताण वा ॥ २२ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीताणं असणं वा ४ परस्सनीहडं पडिग्गहेइ पडिग्गहेतं वा साइज्जइ; तंजहा- आसपोसयाण वा, हत्थिपोसयाण वा, महिस पोसयाण वा,

अर्थ

भाइ बेटाओं के लिये, यह भी राजापिंड ही जानना. ॥ २१ ॥ जो साधु क्षत्री राजा अभिपेछ युक्त उस के यहां अशनादि चारों आहार आगे कहेंगे उन दूसरों के लिये निपजे हों उसे ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने. उन के नाम—१. नट, स्वयं नाचने वाले, २ नटके-अन्य को नचाने वाले. ३ कच्छत्र-रमी पर खेलने वाले, ४ जाली ५-ऊपर नीचे कुंद ने वाले या बांस पर नाचने वाले. ५ मल-कुस्ती लडने वाले, ६ मुष्टी युद्ध करने वाले, ७ भांडकुचेष्टा करने वाले, ८ कथा कहनेवाले, ९ पवाडे जोडे २ कर गाने वाले, १० बंदरकी तरह कूदने, वाले, ११ खेल–तमाशा करने वाले, और १२ छत्र धारन करने वाले॥२२॥ जो साधु क्षत्री राजा यावत् अभिषेक युक्त उस के यहां अशनादि चारों आहार आगे कहेंगे उन दूसरों के लिये निपजा हो. उसे ग्रहण करे, करते को अच्छा जानें उन के नाम—१ घोडे को पालने वाले, २

सूत्र

वसह पोसयाण वा, सिह-वग्ग-अय,-मिग,-सुणह,-सुअरं,-मिंड, कुकुड,-तितर,-वट्टय,-लावय,-चरल्ल-हंस,-मयुर,सूय-पोसाण वा, एवं-आस मद्दाण वा, हत्थि मद्दाण वा, एवं आस मठाण वा, हत्थि मठाण वा, एवं आसरोहाण वा, हत्थिरोहाण वा, ॥ २३ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीनाणं असणं वा ४, परस्स निहडं पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ, तंजहा-सत्थवाहणा वा, संवाहया याणं वा,

अर्थ

हाथी को पालने वाले, ३ भैंसे को, ४ बैलों को, ५ सिंह को ६ व्याघ्र (चित्ते) को, ७ बकरे को, ८ मृग को, ९ कुत्ते को, १० सुअर को ११ मेंढे को, १२ मर्गे को, १३ तीतर को, १४ बटेर को, १५ लवबे को, १६ चील्ली को, १७ हंसको, मयुर को, १८ तोते का, इत्यादि पशू पक्षीयों के पोषकों के लिये निपजाया आहार ग्रहण करने से उन को अंतराय लगे आदि दोषोत्पत्ति होती है ऐसे ही हस्ती के मर्दन करने वाले (चकरटे) को, घोडे को मर्दन करने वाले (सहीस)के लिये ऐसे ही घोडे के सजने वाले के लिये, हाथी के सजने वाले के लिये, एमे ही घोडे के फिराने वाले के लिये, हाथी के फिराने वाले के लिये ॥ २३ ॥ जो साधु क्षत्री राजा यावत् राज्याभिषेक युक्त उस के यहां अशनादि चारों आहार आगे कहेंगे उन के लिये निपजा हो उसे ग्रहण करे ग्रहण करते को अच्छा जाने. उन के नाम—१ सार्थवाही के लिये, २ पांव दो शरीर दाबने वाले के लिये, ३ पीठी मर्दन करने वाले ४

सूत्र

अब्भंगावयाण वा,उवट्टणा वयाणवा,मज्जणा वयाणवा, मंडा वयाणवा,छत्तग्गहण वा, चमरग्गहाणवा, हडप्फग्गहाणवा, परियट्टया ग्गहणवा,दीविय ग्गहाण वा, असिस ग्गहण वा, धणु ग्गहणवा,सत्ति ग्गहणवा, कोंत ग्गहणवा,॥ २४॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीत्ताणं असणं वा ४ परस्स निहडं जाव साइज्जइ,तंजहा—पुरिसवाराणं वा, कंचेइ जाणवा, दोवारियाण वा, दंडरक्खियाणवा, ॥ २५ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीत्ताणं असणं वा ४, परस्स निहडं जाव पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं

अर्थ

लिये, ४ तेलादि का उगटना करने वाले के लिये, ५ स्नान कराने वाले के लिये, ६ सिंगार सजाने वाले के लिये, ७ छत्र धारक के लिये, ८ चामर धारक के लिये, ९ भूषण के करंड धारक के लिये, १० राजा के उतारे वस्त्र भूषणा के धारक के लिये, ११ दीपक धारक के लिये, १२ तरवार धारक के लिये, १३ धनुष्य धारक के लिये १४ शक्ति धारक के लिये, १५ भाला धारक के लिये, ॥ २४ ॥ जो साधु क्षत्री राजा यावत् अभिषेक युक्त उन के यहां निपजा अशनादि चारों आहार आगे कहेंगे उन के लिये बना उसे ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने. उन के नाम—१ भेद रहित हुवे स्थविर पुरुष के लिये, २ कनव नपुंसक-नाजरों के लिये, ३ द्वारपाल के लिये, ४ दंड धारक के लिये, ॥ २५ ॥ जो साधु राजा क्षत्री राज्याभिषेक युक्त उस के यहां अशनादि चारो आहार आगे कहेंगे उन के लिये निपजे

सूत्र

वा साइज्जइ तंजहा–खुज्जाणं, जाव पारसीणं वा ॥ २६ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउमासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥निसीहज्झयणे नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ९ ॥

अर्थ

उसे वे लेवे. लेते को अच्छा जाने उन के नाम-१ कुब्जा दासी के लिये. यावत् पारसदेश की दासी के लिये. इत्यादि दासीयों के लिये आहार निपजा वह ग्रहण करे. ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ इन छब्बीस काम करने वाले को अलग २गुरु चौमासिक प्रायश्चित्त आता है. गुरु चौमासिक प्रायश्चित्त-परवश्यपने विना उपयोग लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ छट, उत्कृष्ट १२० उपवास. आतुरता से उपयोग सहित सेवे तो जघन्य ४ छठ, तथा ४ दिन का छेद, मध्यव ४ अठम, तथा ८ दिन का केद, उ० १२० उपवास, तथा १०८ दिन का छेद, मोहनीयकर्मोदय मूर्च्छाभाव सहित लगावे तो जघन्य ४ छट. तथा ६ दिन का छेद, मध्यम १५ अठम तथा ६० दिन का छेद उत्कृष्ट १२० उपवास पारने अंबिल तथा १२० दिन का छेद. ॥इति नीशीथ सूत्र का नववा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ ९ ॥

॥ दशवा–उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू भदंतं आगाढं वदइ, वदंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू भदंतं फरुसं वदइ, वदंतं साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू भदंतं आगाढं फरुसं वदेइ, वदंतं साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू भदंतं अण्णयरीए अच्चासायणाए अच्चासाएइ, अच्चासायंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू अणंतकायमिसं संजुत्तं आहारं आहारेइ, आहारंतं वा, साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू आहाकम्मं भुंजइ, भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू लाभालाभं निमित्तं कहेइ, कहंतं वा

अर्थ

जो साधु साध्वी आचार्य को कठोर वचन कहे. कहते को अच्छा जाने ॥१॥ जो साधु साध्वी आचार्य को फरुसकर्कशकारी वचन कहे. कहते को अच्छा जाने॥२॥ जो साधु साध्वी आचार्य को कठोरकारी कर्कशकारी वचन कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु आचार्य की असातना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु अनंत काय (कंद मूल लीलन फूलन) से मिश्रित आहार करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु आधा कर्मी (साधु के निमित्त बनाया) आहार भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥६॥ जो साधु लाभालाभ सुख दुःख गत काल में हुवा जिस का निमित्त प्रकाशे, प्रकाशते को अच्छा जाने

सूत्र

साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू पडुप्पणं निमित्तं वागरेइ, वागरंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू अणागयं निमित्तं वागरेइ, वागरंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू सेहं विप्परिणामेइ, सेहं विप्परिणामंतं वा, साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू सेहं अवहरेइ, सेहं अवहरंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू दिसा विप्परिणामेइ, दिसं विप्परिणामंतं वा साइज्जइ॥ ११ ॥ जे भिक्खू दिसं अवहरेइ, दिसं अवहरंतं वा,

अर्थ

॥ ७ ॥ जो साधु लाभालाभ सुख दुःख वर्तमान काल में हो रहा हो उस का निमित्त कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु लाभालाभ सुख :ख अनागत काल में होगा, जिस का निमित्त कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु साध्वी किसी अन्य साधु साध्वी के शिष्य शिष्यनी को उस के आत्म परिणाम उन आचार्यादि के तरफ से पलटाकर अपनी तरफ लगाने के वास्ते आहार पानी वस्त्र पात्र सूत्र ज्ञान का लोभ बताकर विपरिणाम करे अर्थात् उसे भरमावे. अन्य उक्त प्रकार भरमाता हो उसे अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु साध्वी अन्य साधु साध्वी के शिष्य शिष्यणी को उक्त प्रकार ही भरमाकर अपहरण करे-अर्थात् लेकर भगजावे, अपहरते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु साध्वी किसी ग्रहस्थ ग्रहस्थनी को किसी आचार्य के पास दीक्षा

जैसे कोई आचार्य अपने शिष्य को ग्राम के बाहिर बैठा कर भिक्षा के वास्ते ग्राम में गये. पीछे से कोई साधु आकर उस शिष्य को वस्त्र सूत्र ज्ञान का लालच देकर भरमाकर अपने साथ लेगया.

साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू बहिया वासियं अएसं परं तिरायाओ अवफालेत्ता संवसावेइ, संवसावंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू साहिगरणं अविओस वियपाहुडं अकडपायछित्तं परं तिरायाओ विफालियं अविफालियं संभुंजइ संभुंजंतं वा, साइज्जइ ॥१४॥ जे भिक्खू उवग्घाइयं अणुग्घाइयं वदइ वदंतं वा, साइज्जइ ॥१५॥

लेने के परिणाम हो उस के परिणाम पलटाने उस को कहेकी तुझे इन के पास दीक्षा लेनी योग्य नहीं है क्यों कि यह तो वय में छोटे हैं, य वृद्ध हैं थोडे पडे हैं, प्रमादी हैं, हीनाचारी हैं वगैरा दोष बता कर कहे कि-जो तुझे दीक्षा लेनी है तो अमुक आचार्य गुनवान हैं उन के पास दीक्षा ले, यों परिणामों की दिशा पलटावे पलटाते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु किसी उक्त प्रकार ही किसी ग्रहस्थ ग्रहस्थनी को दिक्षा परिवर्तन करे अर्थात् अन्य साधु साध्वी के पास भेजे या आप स्वयं ले जावे. ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ प्रथम साधु साध्वी रहते हो वहां दूसरे साधु साध्वी आवे उन को किस लिये आये वगैरा आगमन पूछे विना तीन रात्रि उपरान्त अपने पास रखे, अन्य रखते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु साध्वी के आपस में क्लेश हुवा होवे क्लेश होने, का कारण प्रगट किये विना प्रायःश्चित्त लिये विना आपस में खमत खामना किये विना जो तीन रात्रि उपरान्त रहे उन के सामिल आहार पानी करे, करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु थोडे प्रायःश्चित्तवाले को बहुत प्रायःश्चित्तवाला कहे कहते क

सूत्र

जे भिक्खू अणुवग्घाइयं उवग्घाइयं वदइ वदंतं वा,साइज्जइ॥ १६॥ जे भिक्खू उवग्घा-इयं अणुवग्घ.इयं देइ,देयंतं वा,साइज्जइ ॥२७॥जे भिक्खू अणुवग्घाइयं उवग्घाइयं देइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ १८॥जे भिक्खू उवग्घाइयं सोच्चा नच्चा संभुंजइ, संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ १९॥ जे भिक्खू उवग्घाइयं हेउं सोच्चा नच्चा संभुंजइ, संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ २०॥ जे भिक्खू उवग्घाइयं संकप्प सोच्चा नच्चा संभुंजइ, संभुंजं तं वा साइज्जइ

अर्थ

अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु बहुत प्रायश्चित्त वाले को थोडा प्रायश्चित्तवाला कहे कहने को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु थोडे प्रायश्चित्तवाले को बहुत प्रायश्चित्त देवे. देते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु बहुत प्रायश्चित्त वाले को थोडे प्रायश्चित्त देवे देने को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु थोडा प्रायश्चित्त धारक यह है. ऐसा अन्य से सुनकर तथा स्वयं जानकर उस के साथ आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु थोडे प्रायश्चित्त की आलोचना करने योग्य है ऐसा हेतु (विचार) सुनकर जानकर उस के साथ आहार पानी करे. करते को अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु अमुक थोडा प्रायश्चित्त का धारक अमुक दिन आलोचना कर प्रायश्चित्त ग्रहण करेगा, ऐसा उस का संकल्प सुनकर जानकर वह शुद्ध न हो वहां तक उस के सामिल आहार पानी करे, करते को

॥ २१ ॥ जे भिक्खू अणुवग्घाइयं वा उवग्घाइयं हेउंवा उवग्घाइय संकप्प वा सोचा नचा संभुंजइ संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू अणुवग्घाइयं सोचा नचा संभुंजइ, संभुंजतं वा, साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू अणुवग्घाइयं हेउंवा सोचा नचा संभुजइ संभुंजतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू अणुवग्घाइयं संकप्पं वा, सोचा नचा संभुजइ, संभुंजतं वा, साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू अणुवग्घाइयं वा, अणुवग्घाइयं हेउं वा, अणुवग्घाइयं संकप्पं, सोचा नचा संभुंजइ,

अर्थ

अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु यह लघु प्रायश्चित्त का धनी है, लघु प्रायश्चित्त का हेतु है, यह लघु प्रायश्चित्त का संकल्पी है, ऐसा सुनकर जानकर उस के साथ आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु किसी को बहुत प्रायश्चित्त का धनी सुनकर जानकर उस के साथ आहार पानी करे, करते को अच्छा जा े ॥ २३ ॥ जो साधु अमुक बहुत प्रायश्चित्त की आलोचना करने योग्य है, ऐसा हेतु सुनकर जानकर उस के साथ आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु बडा प्रायश्चित्त का स्थान सेवन कर उस की अमुक दिन आलोचना करेगा ऐसा उस का संकल्प सुन-कर जानकर उस के सामिल आहार पानी करे, करते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ जो साधु बडा प्रायश्चित्तवाला है, बडा प्रायश्चित्त हेतु सेवन किया है बडा प्रायश्चित्त लेने का संकल्प किया है.

सूत्र

संभुंजं तं वा साइज्जइ॥२६॥ जे भिक्खू उवग्घाइयं वा अणुवग्घाइयं वा सोच्चा नच्चा संभुंजइ संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥२७॥ जे भिक्खू उवग्घाइयं हेउं अणुवग्घाइयं हेउं वा सोच्चा नच्चा संभुजइ, संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ २८ ॥ जे भिक्खू अणुवग्घाइयं वा उवग्घाइयं वा सोच्चा नच्चा संभुंजइ संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू उवग्घाइयं हेउं वा, अणुवग्घाइयं हेउं वा, सोच्चा नच्चा संभुंजइ संभुंजं तं वा साइज्जइ

अर्थ

ऐसा अन्य के पास श्रवण करके तथा स्वयं की मति बुद्धि करके जानकर उस के साथ आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ जो साधु किसी साधु को छोटा बडा दोनों प्रकार के प्रायःचित्त का धारक सुनकर जानकर, उस के साथ आहार पानी करे करते को, अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु थोडा प्रायःश्चित्त का हेतु वाला भी है और बहुत प्रायःश्चित्त का हेतुवाला भी है, ऐसा सुनकर जानकर उस के भेला आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥२९॥ जो साधु किसी को थोडा प्रायःश्चित्त के संकल्प वाला भी है और बहुत बडा प्रायःश्चित्तका भी संकल्पवाला भी है, ऐसा सुनकर जानकर उसके भेला आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ जो साधु गुरु (बडा) प्रायःश्चित्त, लघु (छोटा) प्रायःश्चित्त प्राप्त हुवा ऐसा अन्य के पास से सुनकर स्वयं की बुद्धि से जानकर उस के सामिल आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो कोई गुरु प्रायःश्चित्त का भी हेतु और लघु प्रायःश्चित्त का भी हेतु सूना

॥ ३० ॥ जे भिक्खू उवग्घाइयं संकप्पं वा, अणुवग्घाइयं संकप्पे वा, सोच्चा नच्चा संभुंजइ, संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू उवग्घाइयं वा अणुवग्घाइयं वा, उवग्घाइयं हेउं वा अणुवग्घाइयं हेउ वा, उवग्घाइयं संकप्पा वा अणुवग्घाइयं संकप्प वा, सोच्चा नच्चा संभुंजइ संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ ३२ ॥ जे भिक्खू उग्गयादित्ताए अणत्थमिय मणसंकप्पे संत्थाडिए णिवितिगिच्छा समावणेणं अप्पाणेणं

अर्थ

॥ ३० ॥ जो साधु गुरु प्रायःश्चित्त जाना उस के सामिल आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ ३१ ॥ जो साधु गुरु प्रायःश्चित्त लेने का संकल्पी है और लघु प्रायःश्चित्त लेने का भी संकल्पी है, ऐसा सुनकर जानकर उस के साथ आहार पानी करे, करते को अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ जो साधु गुरु प्रायःश्चित्त, लघु प्रायःश्चित्त, गुरु प्रायःश्चित्त का हेतु, लघु प्रायःश्चित्त का हेतु, गुरु प्रायःश्चित्त का संकल्प, लघु प्रायःश्चित्त का संकल्प अन्य से सुनकर स्वयं की मति से जान कर उस के सामिल आहार पानी करे करावे करते को अच्छा जाने ॥३२॥ जो साधु साध्वी सूर्य का उदय हुआ या नहीं हुआ ऐसा ही सूर्य अस्त हुआ या नहीं हुआ ऐसा निश्चय हुआ विना समर्था युक्त-निरोगी साधु तिगिच्छा-औषधी का ग्रहण करने वाला नहीं ऐसा साधु ४ क स्वभाव की चपलता कर सूर्योदय होगया अथवा अस्त नहीं हुवा ऐसा अपने मन से निश्चय कर या

सूत्र

असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, पडिग्गहेत्ता संभुंजमाणे अह पुणे एवं जाणेजा, आणुग्गए सुरिए अत्थमिए से जं च मुहं वा, पाणिसि से, जं च पडिग्गहंसी तं विगंचमाणे विसोहेमाणे वा, णाइक्कम्मइ, जाव जो तं भुंजइ भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खू उग्गएदिचिए अणत्थमियं संकप्पे असंत्थडिए निवितिगिच्छा समावण्णेणं

अर्थ

किसी श्रावकादि का कहना सुन आहार पानी पक्वान, मुख वास सोपारी आदि ग्रहण करे अथवा भोगवने लगे. फिर मालुम पडे की-सूर्य उदय नहीं हुवा या अस्त होगया है. तो उसही वक्त मूख का ग्रास बाहिर निकाल कर रखदे हाथ का ग्रास भी नीचे रखदे. पात्र में से भी निकाल डाले. मुख हस्थ पात्रा की विशुद्धी करे. उस आहार को एकांत में फासुक जगह में परिठादेवे तो तीर्थंकर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करे. और जो परिठावे तो नहीं परंतु उसे भोगव लेवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु सूर्योदय पहिले तथा सूर्य अस्त के पीछे सूर्योदय होगया या अस्त नहीं हुवा ऐसा मन में ही संकल्प विकल्प करता हुवा पूरा निश्चय हुवे विना शरीर सामर्थ हो औषधी आदि ग्रहण करने से रहित हो फक्त अपने मन की चपलता कर श्रावकादि के कहने से तथा अपने मन से बशनादि

सूत्र

अप्पाणेगं असणं वा ४, पडिग्गहे आहारं आहारमाणे, अहपच्छा जाणेजा अणुग्गए सूरिए, अत्थमिए वा, से जं च आसयंमि, जं च मुहे, से जं च पाणिसि, से जं च पडिग्गहयंसि तंविगिंचमाणे विसोहेमाणे तं परिठवमाणे णाइक्कमइ, जो तं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू उग्गए वित्तीए अणत्थमिए संकप्पे असंथडिएनि वितिगिच्छा समाणेणं, अप्पाणेणं असणं वा ४ पडिग्गाहेता आहारं आहारमाणे अह पच्छा जाणेजा अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा से जं च आसयंसि

अर्थ

चारों आहार ग्रहण करे वह आहार भोगवते हुवे फिर जाने की सूर्योदय हुवा नहीं है सूर्य अस्त होगया है तो उस ही वक्त मुखका ग्रास नीचे रखदे. हाथका ग्रास नीचे रखदे, मुख हाथ पात्रेको साफकर उस आहार को एकांत में परिठादेवे तो तीर्थंकर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करे. और जो उसे भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ३४ ॥ जो साधु सूर्य उदय हुअे बाद आहार आदि ग्रहण करना और सूर्य अस्त पहिले भोगव लेना ऐसी व्रती वाले हैं. वे शरीर कर समर्थ हो गिलानपना रहित हो वे दातारादि के कहने से अथवा स्वयं संकल्प कर अशनादि चारों आहार ग्रहण कर. आहार करने बैठे आहार करते हुवे फिर मालुम पडे की सूर्योदय नहीं हुवा है या सूर्य अस्त होगया है. तो उस ही वक्त मुख में जो हो सो

सूत्र

जं च मुहं, जं च पाणिसी, जं च पडिग्गहंयसी तं विगिंचमाणे विसोहेमाणे वा, णाइक्कम्मइ । तं अप्पणा भुंजमाणे, अणेसिं वा दलमाणे राइभोयण पडिसेवणपत्ते जो तं भुंजइ, भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जे भिक्खू राओ वा, वियाले वा, सपाणे सभोयणे उग्गाले आगच्छेज्जा, तं विगिंचमाणे वा, विसोहंमाणे वा, णाइक्कम्मइ. तं ओगिलित्ता पच्चोगिलमाणे राइभोयण पडिसेवण पत्तं, जो तं पच्चोगिलइ, पच्चोगिलं वा, साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू गिलाणं सोच्चा णच्चा णगवेसइ,

अर्थ

निकाल के रखदे, हाथ में का भी रखदे, जो पात्रे में हो वह भी निकाल हाथ मुह पात्रे को शुद्ध करे उसे एकांत में परिठा देवे तो तीर्थंकर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करे, और जो कदापि उसे आप भोगवे तथा अन्य को देवे तो उसे रात्रि भोजन करने वाला कहना. जो उसे भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ३५ ॥ जो साधु को रात्रिको अथवा श्याम को [सूर्य अस्त होते] आहार पानी की डकार आवे उस से आहार पानी मुख में आजावे उस को तुर्त यत्ना से थूक देवे, वस्त्रादि से मुख साफ कर लेवे तो तीर्थंकर की आज्ञा की उल्लंघन नहीं करे और जो उस उगाल को पीछा निगलजावे गले उतार लेवे तो रात्रि भोजन करेने के पाप से दोषित होवे. जो उसे पीछा गिले अथवा गिलते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ अब वैयावच आश्रिय कहते हैं-जो साधु साध्वी कोइ अन्य साधु साध्वी रोगी हैं, असुख

सूत्र

णगवेसे तं वा साइज्जइ ॥ ३७ ॥ जे भिक्खू गिलाणं सोच्चा णच्चा उमग्गं वा पडिपहंवा गच्छइ, गच्छंतं वा, साइज्जइ ॥ ३८ ॥ जे भिक्खू गिलाणं वेयावच्चं-अब्भुट्ठियस्स, गिलाणं पओगेणं दव्वजाएणं अलभमाणे, जो तं न पडियाइक्खेइ,

अर्थ

दुःख कर पीडा रहे हैं, गिल्यानी हो रहे हैं, उन के पास दूसरा कोइ नहीं हैं. ऐसा किसी पास सुनकर या स्वयं की मति से जानकर, उन की गवेषना नहीं करे. उन की खबर नहीं निकाले, खबर नहीं निकालते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु साध्वीं गिल्यानी साधु को सुनकर जानकर, वे हैं उस रास्ते नहीं जावे [जावूंगा तो उन की सेवा करनी पडेगा ऐसा जान] उन मार्ग—दूसरे रास्ते जावे जाते को अच्छा जाने* ॥ ३८ ॥ जो साधु साध्वी गिलानी तपस्वीं आदि के वैयावच्च में है वे उन गिलानी के लिये औषधादि द्रव्य याचने को जावे और अंतराय जोग उस की प्राप्ति नहीं होवे तो तुर्त आचार्यादि को आकर कहे परंतु विना कहे रहे नहीं+ जो कहे नहीं चुप बैठा रहे जावे, अन्य नहीं कहते को,

* क्यों कि रोग अवस्था में, उपसर्ग अवस्था मे या चक्षु आदि की हीनता की वक्त गिल्यानी साधु की संभाल नहीं करने से वह संयम से भृष्ट होवे, धर्म की हीलना होवे, अन्य वैरागीयों का वैराग्य का नाश होवे. विनय पथ में विघ्न होवे इत्यादि दोषोत्पन्न होते हैं.

+ आचार्यादि को कहने से वे बहु जान होते हैं. वे मिलती हो उस स्थान वतावे या दूसरे साधु को भेज मगादेवे.

सूत्र

न पडियाइक्खंतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू गिलाणे वेयावच्चं अब्भुट्ठियस्स सएणलाभेणं असंथरमाणस्स जो तं ण पडितप्पई, ण पडितप्पंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू पढमं पाउसंसी गामाणुगामं दुइज्जइ, दुइज्जंत वा, साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू वासावासं पज्जोसवियांसि गामाणुगामं दुइज्जइ, दुइज्जंत वा साइज्जइ ॥४२॥ जे भिक्खु अपज्जोसवणाए पज्जोसवइ, पज्जोसवंतं वा साइज्जइ ॥४३॥

अर्थ

अच्छा जाने *॥ ३९ ॥ जो कोई साधु साध्वी गिलयानी की वैयावच में रहा हुवा है, वह गिलयानी के लिये औषध आहार पानी लेने गया और चाहिये सो वस्तु पूरी न मिली तो जितनी मिली हो उतनी ला. करके उन को देवे, और फिर अन्य स्थान गवेषना कर उन की इच्छा तृप्त नहीं करे, चुप बैठ जावे, उस का पस्तावा नहीं करे, पस्तावा नहीं करते को अच्छा नहीं जाने ॥ ४० ॥ जो साधु साध्वी प्रथम वर्षाद ऋतुमें ग्रामानुग्राम विहार करे, विहार करते को अच्छा जाने +॥४१॥ जो साधु साध्वी वर्षाद का (चतुर्मास) बैठे बाद पर्युसन (संवत्सरी) पहिले विहार करे, विहार करते को अच्छा जाने + ॥ ४२ ॥ जो साधु साध्वी पर्युसन (संवत्सरी) के काल बिना ही संवत्सरी प्रतिक्रमण करे करते को अच्छा जाने ॥ ४३ ॥

* क्यों कि गिलानी को वेम आवे कि यह प्रमाद वश्य पूरा नहीं लाया उस से उन को पश्चाताप हो.

+ यह सूत्र २२ तीर्थकरों के वारे के साधु आश्रयी दिखाता है.

सूत्र

जे भिक्खू पज्जोसवणाए न पज्जोसवेइ, न पज्जोसवंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू पज्जोसवणाए गोलेमाइपि वालाइं उव्वायणावेइ, उव्वायणावंतं वा साइज्जइ ॥४५॥ जे भिक्खू पज्जोसवणाए इतिरियंपि आहारं आहारेइ,

अर्थ

जो साधु साध्वी पर्युसन (संवत्सरी) के काल में संवत्सरी प्रतिक्रमण नहीं करे, नहीं करने को अच्छा जाने + ॥ ४४ ॥ जो साधु साध्वी पर्युसन (संवत्सरी) को गौ के शरीर पर जितने बारीक बाल होते हैं उतने भी बाल मस्तक दाढी मूछ के रखे नहीं. ऐसी मर्यादा का उल्लंघन करे. उल्लंघन करते को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु साध्वी पर्युसन (संवत्सरी) को थोडा सा किंचित मात्र भी चारों प्रकार के आहार में का आहार भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ४६ ॥ जो साधु साध्वी अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थ श्रावक को संवत्सरी प्रति क्रमण करावे, करते को अच्छा जाने + ॥ ४७ ॥ जो साधु साध्वी प्रथम समोसरण अर्थात् चतुर्मासीक प्रतिक्रमण किये बाद-चौमासा बैठे बाद वस्त्र की याचना करे, वस्त्र की याचना करते को अच्छा जाने + ॥४८॥ उक्त यह ४८ बोल में से किसी एक दोषस्थान का सेवन करने वाले को गुरु चतुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है. गुरु चतुर्मासिक प्रायश्चित—परवश्य

+ समवायंग के सीत्तरवें समवाय में कहा है कि "समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराइ मास वइक्कते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइ" अर्थात्—श्रीश्रमण भगवंत महावीर स्वामी वर्षाकाल के चार महिने में से एक महिना और २० दिन बीते बाद और चतुर्मास के ७० दिन शेष रहते संवत्सरी प्रति क्रमण किया. जो अपने शासनाधिपतिने किया वही अपन को भी करना उचित है.

सूत्र

आहारंतं वा, साइज्जइ ॥४६॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएणवा, गारत्थिएणवा पज्जोसवेइ पज्जोसवंतं वा, साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू पढमसमोसरण उद्देसपत्ताइं चीवराइं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ ४८ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चउम्मासियं परिहार ठाणं अणुग्घइयं ॥ निसीह उज्झयणस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥

अर्थ

पने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ बेले, उत्कृष्ट १२० उपवास. आतुरता से उपयोग सहित लगे तो जघन्य ४ बेले तथा ४ दिन का छेद. मध्यम ४ तेले तथा ६ दिन का छेद उत्कृष्ट १२० उपवास तथा १०८ दिन का छेद. मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव कर लगावे तो जघन्य ४ तेले तथा ६ दिन का छेद, मध्यम १० तेले तथा ६० दिन का छेद. उत्कृष्ट १२० उपवास पारने में आयंबिल. तथा १२० दिन का छेद. इति निशीथ सूत्र का दशवा उद्देशा संपूर्ण ॥ १० ॥

+ क्यों कि उन को करावेगा तो अपना प्रतिक्रमण कब करेगा.

÷ यहां अर्थ कार लिखते हैं कि १ चौमासी प्रतिक्रमण किये बाद साधु को पाट पाटले वस्त्रादि याचना नहीं. इसलिये अन्य काल करते चौमासे मे वस्त्र पाटलादि दुगने रखे २ दो कोस जाना दो कोस आना एक कोस दिशा जंगल यों सवा योजन उपरांत गमनागमन का अभिग्रह ले, ३ विना कारन विगय का त्याग करे ४ पाट पाटले संथारा नवे (अच्छे अभग) ग्रहण करे, ५ उच्चारादि के भाजन अधिक ग्रहण करे, ६ दीक्षा नहीं दे, परतु प्रथम ग्रहण किये को रखे और ७ नील फूल आने योग्य मलीन वस्त्र को परिठावे. तथा धोकर साफ करे. इतने काम करना.

॥ इग्यारवा-उद्देशा ॥

जे भिक्खू अय पायाणि वा, करेइ, करंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू अय पायाणि वा, धरेइ, धरंतं वा, साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू अय पायाणि वा, परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू तंब पायाणि वा, करेइ, करंत वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू तंब पायाणि वा धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू तंब पायाणि वा, परिभुंजइ, परि भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ६ ॥ एवं तओ पायाणि वा, ॥ ९ ॥ एवं सीस पायाणि वा, ॥ १२ ॥ एवं

अर्थ

जो साधु साध्वी लोह के पात्र करे. करते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु लोह के पात्र रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु लोह के पात्र में भोजनादि भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥३॥ जो साधु ताम्बे के पात्र करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु ताम्बे के पात्र रखे. रखते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु ताम्बे के पात्र में भोजनादि भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥६॥ ऐसे ही तरुवे (कथीर) के पात्र के तीन सूत्र कहना. यथा—१ करे, करते को अच्छा जाने. २ रखे, रखते को अच्छा जाने, ३ भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ ऐसे ही सीसे के पात्र के तीन सूत्र ॥ १२ ॥

सूत्र

कंस पायाणि वा ॥१५॥ एवं रूप्प पायाणि वा,॥१८॥ एवं सोवण्ण पायाणि वा ॥२१॥ एवं जायरूव पायाणि वा,॥ २४ ॥ एवं मणि पायाणि वा, ॥ २७ ॥ एवं कणय पायाणि वा, ॥ ३० ॥ एवं दंत पायाणि वा, ॥ ३३ ॥ एवं सिंग पायाणि वा, ॥ ३० ॥ एवं चेलयं पायाणि वा, ॥ ३९ ॥ एवं चम्म पायाणि वा, ॥ ४२ ॥ एवं सेय पायाणि वा, ॥४५॥ एवं अंक पायाणि वा ॥४८॥ एवं संखपायाणि वा ॥ ५१ ॥ एवं वइर पायाणि वा ॥ ५४ ॥ जे भिक्खू अयबंधणाणि वा करेइ, करतं वा साइज्जइ ॥ ५५ ॥ जे भिक्खू अयबंधणाणि वा

अर्थ

ऐसे ही कांसी के पात्र के तीन सूत्र ॥ १५ ॥ ऐसे ही रूपे के पात्र के तीन सूत्र ॥१८॥ ऐसे ही सुवर्ण के पात्र के तीन सूत्र ॥२१॥ ऐसे ही मणि रत्न के पात्र के तीन सूत्र ॥२७॥ ऐसे ही कनक [आटे] के पात्र के तीन सूत्र ॥३०॥ ऐसे ही हस्ति आदि के दांत के पात्र के तीन सूत्र ॥३३॥ ऐसे ही महिषादि के शृंग के पात्र के तीन सूत्र ॥ ३६ ॥ ऐसे ही वस्त्र के पात्र के तीन सूत्र ॥ ३९ ॥ ऐसे ही चमडे के पात्र के तीन सूत्र ॥ ४२ ॥ ऐसे ही श्वेत [पत्थर] के पात्र के तीन सूत्र ॥ ४५ ॥ ऐसे ही अंक रत्न के पात्र के तीन सूत्र ॥ ४८ ॥ ऐसे ही शंख के पात्र के तीन सूत्र ॥ ५१ ॥ ऐसे ही वज्र के पात्र के तीन सूत्र ॥ ५४ ॥ [यों १८ जाति के पात्र के ५४ सूत्र हुवे.] जो साधु पात्रादि को लोह के तार का बन्धन बन्धे, बन्धते को

सूत्र

धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ ५६ ॥ जे भिक्खू अय बन्धणाणि वा परिभुंजइ परि-भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ५७ ॥ एवं तं बंधणाणि वा जाव वइर बंधणाणि वा परि-भुंजइ परिभुंजं तं वा साइज्जइ तिणि २ गमा णेयव्वा ॥ १०८ ॥ जे भिक्खू परं अद्ध जोयण मेराय पायवडियाए गच्छइ, गच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १०९ ॥ जे भिक्खू परं अद्ध जोयण मेराओ सपायपव्वांसि अभिहडं साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ, पडिग्गहं तं वा साइज्जइ ॥ ११० ॥ जे जिक्खू धम्मस्स अवण्णवदइ,

अर्थ

अच्छा जाने ॥ ५५ ॥ जो साधु लोह के बंधन के पात्रादि रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ५६ ॥ जो साधु लोह के बंधन के पात्रादि को भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ५७ ॥ ऐसे ही ताम्बे के बंधन के तीन सूत्र कहना यावत् ऐसे ही वज्र के बन्धन के तीन सूत्र कहना. यों १ लोह, २ ताम्बा, ३ तरुआ, ४ सीसा, ५ कांसा, ६ रूपा, ७ सुवर्ण, ८ रत्न, ९ मणि, १० आटा, ११ दांत, १२ शृंग, १३ वस्त्र, १४ चर्म, १५ पत्थर, १६ अंक, १७ शंख, और १८ वज्र. इन १८ ही बन्धन के ५४ सूत्र जानना ॥१०८॥ जो साधु साध्वी दो कोस उपरांत पात्र की याचना करने जावे, जाते को अच्छा जाने ॥१०९॥ जो साधु साध्वी दो कोस के उपरांत से पात्र लाकर देवे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ११० ॥ जो साधु साध्वी जिनेश्वर भणित द्वादशांगादि ज्ञान रूप सूत्र धर्म और साधु श्रावक के

सूत्र

अवण्ण वदंतं वा साइज्जइ ॥ १११ ॥ जे भिक्खू अधम्मस्स वण्णवदइ, वदंतं वा साइज्जइ ॥ ११२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा पाय० अमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, अमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥ ११३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा, संबाहंतं वा, पलिमद्दंतं वा साइज्जइ ॥ एवं जाव तइयो उद्देसो गमो णेयव्वो

अर्थ

व्रत रूप चारित्र धर्म के अवर्णवाद बोले निन्दा करे, अविनय अयश कहे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥१११॥ जो साधु साध्वी अधर्म-पाखण्डियों के शास्त्र जिस में अठारा पाप सेवन करने का उपदेश हो वह सूत्र अधर्म और १८ पाप के सेवन रूप को पाखण्डियों का आचार वह चारित्र अधर्म के गुणानुवाद करे कीर्ति करे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ११२ ॥ जो साधु साध्वी अन्य तीर्थिक तापसादि तथा गृहस्थ श्रावकादि के पांव रजोहरण वस्त्रादि करे प्रमार्जे-पूंजे झटके साफ करे ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ११३ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक तथा गृहस्थ के पांव मशले, मर्दन करे, मशलते मर्दन करते को अच्छा जाने. यों जिस प्रकार तीसरे उद्देशे में १६ वे सूत्र से ७१ वे सूत्र तक ५६ सूत्र कहे हैं वे सब यहां अन्य तीर्थिक तथा गृहस्थ आश्रिय कहना. यथा—१ प्रमार्जे, २ मर्दन करे, ३ तेलादि मशले, ४ लोद्रादि लगावे, ५ धोवे, ६ रंगे, ऐसे ही की काया (शरीर) आश्रिय ७ प्रमार्जे, ८ मर्दन

सूत्र

अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियसव्वा अभिलावो जाव जे भिक्खू गामाणुगाम दुइज्ज- माणे अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा सीसदुवारियं करेइ, करेतं वा साइज्जइ ॥ ११४—१६८ ॥ जे भिक्खू अप्पाणं विभावेइ विभावे तं वा साइज्जइ

अर्थ

करे, २ तेलादि मशले, १० लोद्रादि लगावे ११ धोवे १२ रंगे १३ ऐसे ही काया को कोइ गडगुम्बड हो उसे—१४ प्रमार्जे, १५ मर्दन करे, १६ तेलादि मशाले, १७ लोद्रादि लगावे. १८ धोवे १९ रंगे, २० [गुम्बडादि को] छेदावे. २१ रक्त रस्सी निकाले, २२ धोवे, २३ लेप करे, २४ मर्दन करे, २५ धूप देवे, २६ गुदा के क्रिमी निकाले, २७ नख सुधारे, २८ गुह्य स्थान के वाला छेदे, २९ भमुंह के ३० जंघा के, ३१ कांश के. ३२ दाढी मूंछ के. ३३ मस्तक के, ३४ कान के. ३१ नाक के. ३२ आंख के. इतने स्थान के बाल का छेदन करे. ३७ दांत घसे, २८ दांत धोवे, ३९ दांत रंगे. ४० होट घसे. ४१ होट का मेल निकाले, ४२ होट धोवे. ४३ खटाइ दे, ४४ रंग चडावे, ४५ लम्बा होट काटे, ४६ धांघे मूंछ काटे, ४८ आंख साफ करे, ४९ आंख का मैल निकाले. ४२ आंख धोवे, ५० शूामे से शुद्ध करे, ५१ काजल से से रंगे. ५२ भुंव के वाल सुधारे. ५३ आंख-कान-दांत-नख-का मैल निकाल विशुद्ध करे, ५४ शरीर का पशीना शुद्ध करे. और ५५ ग्रामानुग्राम विचरते हुवे. अन्य तीर्थिक का तथा गृहस्थ का मस्तक छत्र वस्त्रादि से ढके. ॥ १६८ ॥ जो साधु साध्वी अन्धकारादि भयोत्पातक स्थान में

॥ १६९ ॥ जे भिक्खू परं विभावेइ,विभावे तं वा साइज्जइ ॥ १७० ॥ जे भिक्खू अप्पाणं विम्हावेइ, विम्हावंतं वा साइज्जइ ॥ १७१ ॥ जे भिक्खू परं विम्हावेइ विम्हावं तं वा साइज्जइ ॥१७२॥ जे भिक्खू अप्पाणं विप्परियासइ. विप्परियासं तं वा साइज्जइ ॥ १७३ ॥ जे भिक्खू परं विप्परियासई विप्परियासंतं वा साइज्जइ ॥ १७४ ॥ जे भिक्खू मुहवण्णं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ १७५ ॥ जे भिक्खू वेरज विरूद्धरजंसि सज्जंगमणं सज्जंआगमणं सज्जंगमणागमणं करेइ, करंतं वा

अर्थ

जाकर भयभीत बने, बनते को अच्छा जाने ॥ १६९ ॥ जो साधु अन्य किसी को भयोत्पातक स्थान में लेजाकर भयभीत बनावे बनाने को अच्छा जाने ॥ १७० ॥ जो साधु अनेक प्रकारकी कौतुक कला के-लव कर आप विस्मित बने,बनाने को अच्छा जाने॥ १७१॥ जो साधु अन्य को विस्मित बनावे,बनातेको अच्छा जाने ॥१७२॥जो साधु साध्वी अपनी आत्माको विपरीतता प्राप्त करे. संयम धर्म से विपरीत बने,विपरीत बनतेको अच्छा जाने ॥१७३॥ जो साधु साध्वी दूसरेको संयम धर्म से विपरीत बनाकर विपरीत करे, अन्य करतेको अच्छा जाने ॥ १७४ ॥ जो साधु साध्वी अयोग्य स्त्री पुरुष की उन के मुह सामे स्तुति करे, करते को अच्छा जाने ॥ १७५ ॥ जो साधु किसी दो राजाओं के आपस में वैर विरोध उत्पन्न हुवा है उस वक्त

सूत्र

साइज्जइ ॥ १७६ ॥ जे भिक्खू दिया भोयणस्स अवण्ण वदइ, वदंतं वा साइज्जइ ॥ १७७ ॥ जे भिक्खू राइभोयणस्स वण्ण वदइ वण्ण वदंतं वा साइज्जइ ॥१७८॥ जे भिक्खू दिया असणं वा, ४पडिग्गाहित्ता दिया भुंजइ, दिया भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ १७९ ॥ जे भिक्खू दिया असणं वा, ४पडिग्गाहेत्ता राइभोइ भुंजइ भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ १८० ॥ जे भिक्खू रतिं असणं वा- ४ पडिग्गाहेत्ता दिया भुंजइ भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ १८१ ॥ जे भिक्खू रतिं असणं वा, ४ पडिग्गाहेत्ता रतिं

अर्थ

उस स्थान में आवागमन करे करते को अच्छा जाने ॥ १७६ ॥ जो साधु दिन के भोजन करने की निंदा करे, निंदा करते को अच्छा जाने ॥१७७॥ जो साधु रात्रि भोजन की प्रसंशा करे, प्रसंशा करतेको अच्छा जाने ॥ १७८ ॥ अब रात्रि के भोजन की चौभंगी कहते हैं. तद्यथा—१ जो साधु दिन का लाया भोजन दिन को भोगवे. ५ परंतु प्रथम प्रहर का लाया अन्तिम प्रहर में भोगवे तथा प्रमाण उल्लंघन कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने यह प्रथम भांगा ॥ १७९ ॥ जो साधु दिन को अशनादि चारों आहार ग्रहण कर रात्रि को भोगवे भोगवते को अच्छा जाने. यह दूसरा भांगा ॥ १८० ॥ जो साधु रात्रि को अशनादि चारों आहार ग्रहण कर दिन को भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने. यह तीसरा भांगा ॥१८१॥

क्यों कि उसे हेतु चोर विरोधी समझ तथा अपशकुन मान राज सूभटादि अपचेष्टा करे दुःख देवे.

भुंजइ भुंजइतं वा साइज्जइ ॥१८२॥ जे भिक्खू असणं वा, ४ अणागाढे परिसावेइ परिसा- वंतं वा, साइज्जइ ॥ १८३ ॥ जे भिक्खू परिसावियस्स असणं वा, ४ तयाप्पमाणं वा, भूइप्पमाणं वा, बिंदुप्पमाणं वा, आहारं आहारेइ आहारंतं वा, साइज्जइ ॥ १८४ ॥ जे भिक्खू मंसादियं वा, मच्छादियं वा, मंसखलं वा, मच्छखलं वा, आहेणं वा, पहेणं वा, समेलं वा, हिंगोलं वा, अण्णयरं वा, तहप्पगारं विरूद्धरूवं हारमाणं

जो साधु रात्रि को चारों आहार ग्रहण कर रात्रि को भोगवे भोगवते को अच्छा जाने. यह चौथा भांगा ॥ १८२ ॥ जो साधु गाढा गाढी कारण विना [भूल से या सीतादि रह जाय वह इत्यादि कारण छोड] बासी (रात्रि को) रखे. रखने को अच्छा जाने ॥ १८३ ॥ जो साधु वासी (रात्रि को) रहगया हुवा असनादि चारों आहार त्वचामात्र [किंचित] भूमी मात्र (लेप मात्र) बिन्दू मात्र (पानी आश्रिय) आहार को आहारे अर्थात् भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने* ॥१८४॥ जो साधु साध्वी मांसकी मिठाइ मच्छा की मिठाइ, मांस के भोजन के ढग किये हो. मच्छ के भोजन के ढग किये हों. किसी के घर से लेजाते हों, किसी के घर से लाते हों, जिस से स्वजनादि का सनमान करते हो, तथा यक्षादि की यात्रा

* १८४ वे पाठानुसार १८३ वे पाठ का येही अर्थ होना चाहिये कि विना उपयोग से-भूल कर रह जावे तो उस को दूसरे दिन परिठा देवे परतु भोगवे नहीं.

पेहाए ताएआसाए ताएपिवासाए ताएतरंयासि अण्णत्थ उवाइणावे उवायणावंतं वा, साइज्जइ ॥ १८५ ॥ जे भिक्खू निवेयणंपिंडं भुंजइ, भुंजइतं वा, साइज्जइ ॥ १८६ ॥ जे भिक्खू अहाछंदं पसंसइ, पसंसंतंवा साइज्जइ ॥ १८७ ॥ जे भिक्खू अहाछंद वंदइ, वंदइ तं वा साइज्जइ ॥१८८॥ जे भिक्खू णयगं वा, अणायगं वा, उवासगं वा, अणुवासगं वा, जे अणलं पव्वावेइ, पव्वावंतं वा, साइज्जइ ॥१८९॥

अर्थ

के लिये तैयारी करते हो उन के लिये तथा उक्त मांस मच्छादि कहा उस ही प्रकार का विरूप-खराब रूप वाले अन्य आहार को देखकर, तैसे ही कारण को देखकर; उसे ग्रहण करने की आसा से, उस को ग्रहण करने की पीपासा से. उस की तृष्णा से अपना स्थान छोड अन्य स्थान जावें, जाने को अच्छा जाने ॥ १८५ ॥ जो साधु साध्वी नैवद्य (देवादि का चढाने के लिये रक्खा हुवा) पिंड-भोजन भोगवे. भोगवते को अच्छा जाने ॥१८६॥ जो साधु तीर्थंकर की आज्ञा का उल्लंघन कर स्वच्छंदाचरीवन स्त्री आदि की विकथा कर स्थिलाचारका सवन करे और उस की ही परंशसा करे. स्वच्छंदाचार की प्रशंसा करते को अच्छा जाने ॥ १८७ ॥ जो साधु साध्वी स्वछन्दाचार के गुनानुवाद करे, करते को अच्छा जाने ॥ १८८ ॥ जो साधु अपने संसार पक्ष ज्ञातीयों तथा जो ज्ञाती बिना अन्य मनुष्य होवे उन को, तथा धर्म पक्ष के श्रावक को अथवा श्रावक नहीं अन्य मतावलम्बी उन को जो अपर्याप्त अर्थात् दीक्षा धारन करने की योग्य शांतादि गुण रहित हों उन को दीक्षा दे, देते को अच्छा जाने

सूत्र

जे भिक्खू अणलं उट्ठावेइ, उट्ठावंतं वा, साइज्जइ ॥ १९० ॥ जे भिक्खू अणलेणं वेयावच्चं करेइ, करंतं वा, साइज्जइ ॥ १९१ ॥ जे भिक्खू सचेले सचेलियाणं मज्झंसंवसइ, संवसंतं वा, साइज्जइ ॥ १९२ ॥ जे भिक्खू सचेले अचेलियाणं मज्झंसंवसइ संवसंतं वा साइज्जइ ॥ १९३ ॥ जे भिक्खू अचेले सचेलियाणं मज्झे-संवसइ, संवसंतं वा साइज्जइ ॥ १९४ ॥ जे भिक्खू अचेले अचेलियाणं मज्झे-

अर्थ

॥१८९॥ जो साधु वक्र प्रकार के गृहस्थ को कदाचित विना उपयोग से दीक्षा दी हो और पीछेसे गुणकी अपूर्णता जानने में आवे वाद महाव्रतारोपण करावे-बड़ी दीक्षा देवे. देते को अच्छा जाने ॥ १९० ॥ जो साधु अजोग साधु साध्वी को अर्थात्—जो चारों तीर्थ से विरुद्ध हों, भ्रष्टाचारी लोकीक विरुद्ध कार्य करता हो, उस की वैयावच्च करे करते को अच्छा जाने ॥ १९१ ॥ जो साधु अचेल वस्त्र रहित (जिन कल्पी) होकर जो सचेल-वस्त्रधारी (स्थविर कल्पी) साधु हैं, उन के सामिल रहे, रहतेको अच्छा जानें ॥ १९२ ॥ जो साधु सचेलक वस्त्र सहित होकर अचेलक-वस्त्र रहित हो उन के सामिल रहे, रहते को अच्छा जाने ॥ १९३ ॥ जो साधु अचेल, सचेल की भिन्नता विना एक ही से होकर रहे, रहते को अच्छा जाने ॥१९४॥ जो साधु साध्वी अचेलक होकर अचेलक साधु के सामिल रहे*॥१९५॥

*क्यों कि जिन कल्पी साधु किसी को सहाय नहीं चहते हैं इस लिये वे अकेले ही रहते हैं.

सूत्र

संवसइ संवसंतं वा साइज्जइ ॥ १९५ ॥ जे भिक्खू परियासिया पिप्पलं वा, पिप्पलिचुण्णं वा, सिंगवेरं वा, सिंगवेरचुण्णं वा, जाव पारियाणं विलंवालोणं उब्भियंवालोणं, आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ १९६ ॥ जे भिक्खू गिरि पडणाणि वा, मरु पडणाणि वा, भिग्गु पडणाणि वा, तरु पडणाणि वा, मरु-तरु-गिरि-भिग्गु-पखंदाणि वा, जल पवेसाणि वा, जल पखंदाणि वा, जलण पवेसाणि वा, जलण पखं-

अर्थ

जो साधु प्रथम पहरसी का लाया हुवा. पिप्पल, पिंपला का चूर्ण, अद्रक, अद्रक का चूर्ण, अचित्त लोन [निमक] समुद्र की खारी अचित्त. यावत् पर्याय तीन प्रहर पूरे हुवे बाद उस का आहार करे, करते को अच्छा जाने (अर्थान्तर उक्त पदार्थ को अचित्त किये परन्तु पूरे अचित्त नहीं हुवे हो, पर्याय नहीं पलटी हो वहां तक आहार करे)॥१२५॥ जो साधु साध्वी आगे कहेंगे उन बाल मृत्यु की प्रशंसा करे तद्यथा-१ पर्वत से पडकर, २ मरुस्थल की रेती में प्रवेश कर, ३ खड्डे में पडकर, ४ झाड से पडकर, ५ उक्त चारों प्रकार में तथा कीचड में फसकर, ६ पानी में प्रवेश कर, ७ पानी में कूदकर, ८ अग्नि में प्रवेश करे, ९ अग्नि में कूदकर पडे, १० जेहर का भक्षण करे, ११ सस्त्र से घात करे, १२ इन्द्रियों के वश में पड कर मरे, १३ ऐसा आयुष्य बंधकर मरे की आगे के भव में वैसा ही होवे अर्थात् मनुष्य मर कर मनुष्य, पशु मर कर पशु, तथा स्त्री मर कर स्त्री, पुरुष मरकर पुरुष होवे, १४ अन्तःकरणमें माया निदान मिथ्यात्व

सूत्र

दाणि वा, विस भक्खणाणि वा, सत्थ पडणाणि वा, वसट्ट मरणाणि वा, तब्भव मर-
णाणि वा, अंतोसल्ल मरणाणि वा, वेहांस मरणाणि वा, गिद्धपट्ठणाणि वा,
बालए मरणाणि वा, जाव अण्णयराणि वा तहापगाराणि वा बालमरणाणि वा
पसंसइ, पसंतं वा साइज्जइ ॥ १९७ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चउम्मासियं परिहार-
ठाणं अणुग्घाइयं ॥ इति निसीह ज्झयणस्स एग्गारसमं उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥

अर्थ

इन तीनों शल्य में के शल्य रख मरे, १५ गले में फासी ले मरे, १६ हस्ती ऊंटादिक मृतक कलेवर में
प्रवेश कर मरे. और १७ संयमादि शुभ योग से भ्रष्ट हो कर मरे. और भी इस प्रकार के अनेक बाल-
अज्ञान मृत्यु कर मरते हैं उस की परशंसा करे परशंसा करतेको अच्छा जाने ॥१९७॥ जो साधु साध्वी उक्त
१९७बोल में के किसी भी एक या अधिक बोल का सेवन करे, उसे गुरु चौमासिक प्रायश्चित्त आता है.
परवश्यपने विना उपयोग से उक्त दोष लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ बेले. उत्कृष्ट १२० उपवास,
आतुरता से उपयोग से लगे तो जघन्य ४ बेले तथा ४ दिनका छेद. मध्यम ४ तेले, तथा८ दिन का छेद,
उत्कृष्ट १२० उपवास. तथा १०८ दिन का छेद, और मोहनीय कर्मोदय मूर्छा भाव से दोष लगावे
तो जघन्य ४ तेले तथा ६ दिन का छेद, मध्यम १५ तेले तथा ६० दिन का छेद उत्कृष्ट १२० उपवास
पारने आंबिल तथा १२० दिन का छेद. इति श्री निशीथ सूत्र का इग्यारवा उद्देशा संपूर्ण हूवा ॥ ११॥

॥ बारवा-उद्देशा ॥

जे भिक्खू कोलुणं पडियाए अण्णयरियं तसपाण जायं-तणपासएण वा, मुंजपासएण वा, कट्ठपासएण वा, चम्मपासएण वा, वेतपासएण वा, रज्जुपासएण वा, सुत्तपासएण वा, बंधइ, बंधंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू बंधेल्लयं वा, मुयइ, मुयंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू अभिक्खणं २ पच्चक्खाणं भंजइ, भंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू परित्तकाय संजुत्तं आहारं आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू सलोमाइं चम्माइं धरेइ, धरंतं वा,

जो साधु करुणा अनुकम्पा लाकर अन्य कोइ भी त्रस प्राणी को तृण की डोरी के पास में बंधे मुंज के पास में बंधे, काष्ट के पास में बंधे, चमडे के पास में बंधे, बेत के पास में बंधे, डोरी के पास में बंधे, सूत के पास में बंधे, अन्य बंधते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु उक्त प्रकार के पास में बंधे हुवे त्रस जीवों को छोडे छोडते को अच्छा जाने* ॥ २ ॥ जो साधु नोकारसी आदि प्रत्याख्यान का बारम्बार भंग करे, भंग करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु प्रत्येक वनस्पतिकाय से मिश्रित मिले हुवे आहार को भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु रोम सहित चमडे को रखे, रखते

* अग्नि आदि प्रसंग से मरण शरण होते जीव को छोडे छोडावे छोडते को अनुसिदे तो प्रा० नहीं.

साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू तण पीढयं वा, पालाल पीढयं वा, छणग पीढयं वा, कट्ठपीढयं वा, वेतपीढयं वा, परवत्थेणच्छण्णं अहिट्ठेइ, अहिट्ठंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू निग्गंथीणं संघाडि अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, सीवावेइ, सीवावंतं वा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू पुढविकायस्स कलमायमवि समारंभइ समारंभंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ एवं जाव वणस्सइकायस्स ॥ १२ ॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खं दूरुहइ, दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू

अर्थ

को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु तृण का बना हुवा पीढ (पाट-बाजोट) पराल का पीढ, छान गोबर का पीढ, काष्ट लकडे का का पीढ, वेंतका पीढ, गृहस्थ के वस्त्र कर ढका हुवा. अच्छादित किया हुवा हो, उसपर वैठे. वैठते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु साध्वी, साध्वी की पछोडी (चद्दर) अन्य तीर्थिक तथा गृहस्थ-श्रावक के पास सींवावे, सीवाते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु पृथवीकाय चिरमी जितनी भी विराधे, विराधते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ पृथ्वी के जैसे ही वनस्पति काय तक आलापक कहना अर्थात् पांच ही स्थावर की किंचित्त मात्र भी विराधना करे. करते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु साध्वी सचित्त वृक्ष पर चढे, चढते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥

सूत्र
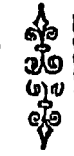
गिहिमत्ते भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू गिहवत्थं परिहेइ, परिहंतं वा, साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खू गिहिणिसेज्जे वाहेइ, वाहंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू गिहितिंगिच्छं करेइ, करंतं वा, साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू पुरेकडेण वा, हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्विएण वा, भायणेण वा, असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू गिहत्थाण वा, अणण्उत्थियाण वा, सीउदगं परिभोयण वा हत्थेण वा, मत्तेण वा दव्विएण वा, भायणेण वा, असणं वा, ४ पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं

अर्थ

जो साधु गृहस्थ के भाजन (थाल कटोरा दि में) भोजन करे. करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु गृहस्थ के वस्त्र (धोती कुडता अंगरखी आदि) पहने. पहनते को अच्छा जाने ॥२५॥ जो साधु गृहस्थ की शैय्या (पिलंग पाथरने आदि) पर शयन करे. करते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु गृहस्थ की औषधी करे, करते को अच्छा जाने ॥१७॥ जो साधु गृहस्थने प्रथम हाथ धोये हो, पात्र, कुडछी, भाजन आदि साधु के लिये बनाये हो. या सचित्त वस्तु से मांज कर धो कर साफ कर रखें हों, इत्यादि पूर्व कर्म दोष युक्त हों उन से अशनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करतेको अच्छा जाने॥१८॥जो साधु गृहस्थके तथा अन्य तीर्थिक के सचित्त पानी से भराये हुमे हाथ पात्र कुडछी भाजन हो उन कर अशनादि चारों आहार ग्रहण

सूत्र
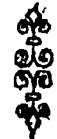
वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू कट्ठकम्माणि वा, चित्तकम्माणि वा, पोत्थकम्माणि वा, लेपकम्माणि वा, दंतकम्माणि वा, मणिकम्माणि वा, सेलकम्माणि वा, गंथीमाणि वा, वेढिमाणि वा, पुरिमाणि वा, संघायमाणि वा, पत्तछेदाणि वा, विहमाणि वा, विविहमाणि वा, चक्खू दंसण वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, उप्पालाणि वा, पच्चुलाणि वा, उज्झराणि वा, निज्झराणि वा, वावीणि वा, पोक्खराणि वा,

अर्थ

करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु काष्ठ के कर्म कर बनाये हुवे पूतले अश्व, गजादि चित्र कर्म कर बनाये हुवे पूतले, पोत (चीडों) के कर्म कर बनाये हुवे पूतले आदि, लेपनादि कर बनाये हुवे पूतले आदि, दांत के बनाये हुवे, मणि चन्द्र कांतादि के बनाये हुवे, गांठों लगाकर बनाये हुवे, गूंथन कर बनाये हुवे, पूरकर-ढाल कर बनाये हुवे, वस्त्र के खंडकर बनाये हुवे, केलादि के पत्र को छेदकर बनाये हुवे, इन सिवाय और भी विविध प्रकार की कोरणी आदि से बनाये हुवे पूतले चित्रादि को आंखों से देखने के लिये मन में धारन करे, धारन करते को अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु कांकडी आदि के कच्छ, केलादि के घर, गुप्त घर, एक जाति के वृक्षों का समूह होवे ऐसा वन, वन की दुगमन-

सूत्र

दीहाणि वा, गुज्झालियाणि वा, सराणि वा, सरपंतियाणि वा, चक्खुदंसण वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारतं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू कच्छाणि वा, गेहाणि वा, णुमाणि वा, वणाणि वा, वणविदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयविदुग्गाणि वा, चक्खूदंसण वडियाए अभिसंधारेइ, संधारंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू गामाणि वा, णगराणि वा, खेडाणि वा, कब्बडाणि वा, मंडवाणि वा, दोणमहाणि वा, पट्टणाणि वा, आगराणि वा, संबाहाणि वा, संन्निवेसाणि वा, चक्खुदंसण वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू गाम महाणि वा, जाव संन्निवेस महाणि वा, चक्खूदंसण वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसधारंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू गामवहाणि वा, जाव संनिवेस

अर्थ

विषम जगह, पर्वत, पर्वत के गुफादि विषम स्थान, इत्यादि वन स्थान को आंखों से देखने की अभिलाषा करे, करते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु ग्राम, नगर, खेडा, कबड, मंडप, द्रोण मुख, पाटन आगर, संवाह, संन्नीवेस, इत्यादि वस्ती को आंख का विषय पोषने देखना मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु गाम यावत् संन्नीवेस में जो किसी प्रकार का उत्सव होता हो उसे चक्षू का विषय पोषने देखना मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु ग्राम का वध (घात)

सूत्र

वहाणि वा, चक्खूदंसण वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू गाम पहाणि वा, जाव संन्निवेस पहाणि वा, चक्खू दंसण वडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू गामदाहाणि वा, जाव सान्निवेसदाहाणि वा, चक्खूदंसण वडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेइत्ता साइज्जइ ॥२७॥ जे भिक्खू आसकरणाणि वा,हत्थिकरणाणि वा,जाव सुक्करकरण चक्खूदंसण वडियाए जाव साइज्जइ ॥२८॥ जे भिक्खू आघायाणि वा, चक्खूदंसण वडियाए जाव साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू आसजुधाणि वा, जाव सुक्करजुधाणि वा, चक्खुदंसण

अर्थ

संग्रामादि प्रसंग से होता हो यावत् संन्नीवेस का वध होता हो उसे देखने की इच्छा मन में धारे धारतेको अच्छा जाने ॥ २५ ॥ जो साधु ग्राम के पंथ (सडकादि की मनोहरता) यावत् संन्नीवेस के पंथ देखना मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ जो साधु ग्राम का दाहा-ग्राम जलता हो यावत् संन्नीवेस का दाहा होता हो जिस को देखने के लिये मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु घोडे की क्रीडा,हस्ति की क्रीडा, यावत् सुव्वर की कीडा आंखों से देखने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ जो साधु चौरादिक की घात के स्थानक देखने की इच्छा करे, इच्छा करते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो साधु घोडे की लडाइ, यावत् सुव्वर की लडाइ देखने का मन में धारे, धारते को

सूत्र

वडियाए जाव साइज्जइ॥ ३०॥ जे भिक्खु गाउजुहियठाणाणि वा. हयजुहिय ठाणाणि वा,
जाव चक्खूंदसण वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ ३१॥ जे भिक्खू
अभिसेय ठाणाणि वा, अक्खाइय ठाणाणि वा, माणुमाणय ठाणाणि वा पमाणि
य ठाणाणि वा, महया णट्ट गीय वाइयं तंती ताल तुडिय पडुप्पवाइय ठाणाणि वा
चक्खूदंसण वडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ ३२ ॥ जे

अर्थ

अच्छा जाने ॥ ३० ॥ जो साधु गौ का समूह रहता हो ऐसे स्थान (गौशाला) घोडे के समूह रहते हो
ऐसे स्थान (पायगा) हस्ति के समूह रहते हो ऐसे स्थान (फीलखाना) को देखना मन में धारे, धारते
को अच्छा जाने !! ३१ ॥ जो साधु राजादि का अभिषेकोत्सव होता हो, अल्याइका-कथा समाप्ती का
उत्सव होता हो, मानानुमान-तोलने के मापने के स्थान, प्रमान-लम्बाइ चौडाइ जानने के स्थान,
महा जवर वादिंत्रों का वजना, नृतिकी को नाचना, गायंत्री का गायन, वीनादि तंत्रिक का वजाना,
ताल तुटितादिक का सुनना. यह कार्य कौशल्यता के होते हैं उसे देखने का मन में धारे. धारते को

जैसे कि पुरुष प्रमान लोह की कोठी में पानी भर उस में मनुष्य को वैठावे उस में से आधा पानी निकले वह
उन्मान और उत्तम पुरुष १०८ अगुल ऊंचे मध्यम ९६ अगुल ऊचा वह प्रमान. ऐसे ही प्रत्येक वस्तु के उन्मान प्रमान
मापने के स्थान जानना.

सूत्र

भिक्खू डिमाणि वा, डमराणि वा, खाराणि वा, वेराणि वा, महाजुद्धाणि वा, महासंगामाणि वा, कलहाणि वा, बोलाणि वा, चक्खूदंसण वडियाए अभिसंधारेइ जाव साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खू विरूवरूवेसु महुस्सवेसु इत्थिणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, मज्झिमाणि वा, डहराणि वा, अणलंकियाणि वा, सुअलंकियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चताणि वा, रमताणि वा, हंसंताणि वा, विपुलं असणं वा ४ परि भायंताणि वा, परि भुंजंताणि वा, चक्खूदंसण वडियाए जाव साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू इहलोएसु वा रूवेसु, परलोएसु वा रूवेसु,

अर्थ

अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ जो साधु डिमर बच्चे का किया उपद्रव, डमर बडे पुरुषों का किया उपद्रव, खार क्रोध से हुवा उपद्रव, वैरविरोध से हुवा उपद्रव, महा मनुष्यों का युद्ध, महा चतुरंगनी सेना का संग्राम, क्लेश से उत्पन्न हुवे कलकलाट शब्द देखने को मन में धारे धारते का अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु विचित्र प्रकार के महोत्सव के लिये सज्ज हुवे स्त्री, पुरुष, बुड्ढे, युवान, बालक, कितनेक अलंकार रहित, कितनेक अलंकार सहित, गाते हुवे, वादित्र बजाते हुवे, नाचते हुवे, हसते हुवे, क्रीडा करते हुवे, परस्पर मोहा उत्पन्न करते हुवे, विस्तीर्ण असनादि चारों आहार परस्पर विभाग कर भोगवते हुवे-खाते पीते हुवे प्रवर्तते हों, उन को देखने का मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ ३४ ॥ जो साधु इस लोक के

सूत्र

दिट्ठेसु वा रूवेसु, अदिट्ठेसु वा रूवेसु, सुएसु वा रूवेसु, असुएसु वा रूवेसु, विण्णाएसु वा रूवेसु, अविण्णाएसु वा रूवेसु, सज्जइ रज्जइ गिज्झइ अज्झोववज्जइ, सज्जमाणं वा, रज्जमाणं वा, गिज्झमाणं वा, अज्झोववज्झमाणं वा साइज्जइ ॥ २५॥ जे भिक्खू पढमाए पोरसीए असणं वा ४ पडिगाहेत्ता पच्छिमापोरसी उवायणावेइ, उवायणावेंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू परं अद्ध जोयण मेराओ परेणं असणं वा ४ उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू दिया गोमयं पडिगाहेत्ता, दियाकायंसिवण्णं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं

अर्थ

रूप में अर्थात् मनुष्य मनुष्यने के रूप में. परलोक के रूप मे अर्थात् देवता के या पशु के रूप में, देखे रूप में, विना देखे रूप में सुने रूप में, विना सुने रूप में, देखने को सज होवे, रंजित–खुशी होवे, गृद्धित होवे, आसक्त बने, सज होते को. रंजित होते को, गृद्धि होते को, मात वस्तु पर आसक्त होते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ जो साधु प्रथम पोरसी में ग्रहण किया हुवा अशनादि चारों आहार पश्चिम-चौथी पोरसी तक रखे. रखते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ जो साधु आधे योजन (दो कोस) के उपरांत आहार ले जावे. लेजाते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ अब किसी कारण निमित्त गोवर चाहिये तो उस आश्रिय चौभंगी कहते हैं—१ जो साधु दिन को गोवर ग्रहण करके दूसरे दिन काम लेवे (गुमडे आदि को) लगावे, विलेपन करे, लगाते को

सूत्र

वा साइज्जइ ॥ ३८ ॥ जे भिक्खू दिया गोमयं पडिग्गहेत्ता रत्तिं कायंसिवण्णं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा, आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू रत्तिं गोमयं पडिग्गाहेत्ता दिया कायंसिवण्णं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा, आलिंपंतं वा विलिप्पतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जेभिक्खू रत्तिं गोमयं पडिग्गाहेत्ता रत्तिं कायंसिवण्णं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा, आलिंपंतं वा विलिंपंवं वा साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू दिया आलेवणं जायं पडिग्गाहेत्ता दिया कायंसिवेण्णं आलिंपेज्ज वा विलिपेज्ज वा आलिपं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू दिया आलिवणं जायं पडिग्गहेत्ता रति कायं-

अर्थ

विलेपन करते को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ २ जो साधु दिन को गोबर ग्रहण कर रात्रि को शरीर के वर्णादि को लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ३९ ॥ ३ जो साधु रात्रि को गोबर ग्रहण कर दिन को शरीर के फोडा पुन्सी को लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ ४ जो साधु रात्रि को गोबर ग्रहण करके रात्रि को ही शरीर के गुम्बडे आदि को लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु लेप लगे ऐसी वस्तु [मलम आदि] १ दिन को ग्रहण कर दूसरे दिन शरीर के गुम्बडा आदि को लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ २ जो साधु दिन को विलेपन की जाते ग्रहण कर रात्रि को शरीर के

सूत्र

सिवण्णं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा, आलिंपंतं वा विलिंपंत वा साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू रातिं आलेवणजायं पडिग्गहेत्ता दिया कायंसिवण्णं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू रातिं आलेवणं जायं पडिग्गाहेत्ता रात्तिं कायंसिवण्णं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा, अलिंपंतं वा विलिंपंतं वा साइज्जइ ॥४५॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उवहिं-वहावेइ, वहावंतं वा साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू तं णीसाए असणं वा ४,

अर्थ

गुम्बडादि को लगावें, लगाते को अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ ३ जो साधु रात्रि को विलेपन की वस्तु ग्रहण करके दिन को शरीर के वर्णादि को लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ ४ जो साधु रात्रि को विलेपन ग्रहण कर रात्रि को ही शरीर के गुमडादि को लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक के व गृहस्थी के पास अपने उपकरण उठवाकर ले जावे, लेजाते को अच्छा जाने ॥४६॥ जो साधु गृहस्थ के पास या अन्य तीर्थिक के पास काम कराकर उस के बदले में उसे आहार पानी देवे, देते को अच्छा जाने * ॥ ४७ ॥ जो साधु पांच महा नदी [समुद्र समान नदीयों] जो संख्या

* धर्म की हीनता लागे गृहस्थ की खुशामदी होवे, उपकरणादि खराब हो जावे. पडकर फूट जावे तो क्लेश उत्पन्न होवे. गृहस्थ निकम्मे साधु को देखकर हर के वक्त काम भोलवे जिस से संयम तप ज्ञान ध्यान में व्याघात होवे. इसलिये गृहस्थ के पास कोइ भी काम साधु को करना उचित्त नहीं है.

सूत्र

देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू पंच इमाओ माहणवाओ महाणादिओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वंजियाओ अंतोमासस्स दुक्खुतो वा तिक्खुत्तो वा उत्तारित्तए वा संतरित्तए वा, उतरंतं वा संतरंतं वा साइज्जइ तंजहा-गंगा, जउणा, सरत्तु, एरावए, मही ॥ ४८ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारठाणं उग्घाइयं ॥ निसीह ज्झयणस्स बारसम उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ * * *

अर्थ

सहित कही है उन को एक महिने के अंदर दो वक्त अथवा तीन वक्त उतरे उतरकर पार होवे, उतरते को पार होते को अच्छा जाने, उन पांच महा नदी के नाम—१ गंगा, २ जमना, ३ सरजु, ४ एरावती, और ५ मही ॥ ४८ ॥ उक्त ४८ सैंतालीस दोष स्थान में से किसी एक दोष स्थान सेवन करे उन साधु साध्वी को लघु चौमासिक प्रायःश्चित्त आता है. ॥ उक्त दोष-परवशपने बिना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ आयंबिल, मध्यम ६० निवि, उत्कृष्ट १०८ उपवास, आतुरता से उपयोग युक्त लगावे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ६ छठ (बेले) उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारणे में धार विगय बंध. और जो मोहनीय कर्मोदय-मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ छठ [बेले] मध्यम ४ अठम [तेले] उत्कृष्ट १०८ उपवास पारणे में आयंबिल. इति निशीत सूत्र का बारवा उद्देशा संपूर्ण ॥ १२ ॥ *

॥ तेरवा-उद्देशा ॥

॥ तेरवा-उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू अणंत्तरहियाए पुढविए ठाणं वा, सेजं वा, निसीहियं वा, चेएइ, चेयंतं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू ससरक्खाए पुढवीए ठाणं वा, सेजं वा; णिसीहियं वा चेइए, चेयंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू ससणिद्धाए पुढवीए ठाणं वा, सेज्ज वा, निसीहियं वा, चेयइ, चेयंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू चित्तमंताए सिलाए चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा, दारुए जीव पइट्ठिए, सअंडे सपाणे, सबीए, सहरिए, सउस्से, सउत्तिंग, पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणयं

अर्थ

जो साधु सचित्त पृथ्वी काया से लगती हुई निरंतर पृथ्वी काय पर शयन करे, बैठे, स्वाध्याय करे, करते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु सचित्त रज से भरी हुई सिला आदि पर शयन करे बैठे स्वाध्याय करे, करते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु सचित्त पानी से भरी हुई पृथ्वी पर शयन करे बैठे स्वाध्याय करे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥३॥ जो साधु सचित्त सिला पर, तथ जिस में सडकर कीडे पड गये मकडी आदि के जाले बंध गये ऐसे लकड के पाट बाजोट पर जहां बेइन्द्रिय-तेइन्द्रिय-चौरिन्द्रिय प्राणी हो, गोधूमादि बीज हो, हरित काया हो, ओस का पानी पडता हो, कीडे के नगरे हो, पांचों वर्ण की फूलन हो, पानी भरा हो, सचित्त मट्टी पडी हो, मकडी के जाले हो, भूंई फोडे, जीव पर बना के

सी ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा, चेइए, चेयंतं वा, साइज्जइ ॥ ४ ॥
जे भिक्खू थुणंसि वा, गिहेलुयंसि वा, उसुकालंसि वा, कामजलंसि वा, ठाणं वा,
सेज्ज वा, णिसीहियं वा, चेएइ, चेयंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू कुलियंसि वा
भित्तिंसि वा, सिलंसि वा, लेलुंसि वा, अंतरिक्ख जायंसि वा, ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा, चेएइ, चेयंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू खधंसि वा, दुबंधे
दुनिखित्ते चलावचले ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहं वा चेएइ, चेयंतं वा, साइज्जइ

अर्थ

रहो हो या उदाइ (दीमक) के घर हो. ऐसे स्थान में शयन करे बैठे स्वाध्य करे, करते को अनुमोदे ॥४॥
जो साधु घर की देहली पर, घर के ऊंबरे [घोडले] हर, ऊखल पर स्नान करने के स्थान पर, शयन करे
बैठे स्वध्याय करे करते को अनुमोदे ॥ ५ ॥ जो साधु नदी पर, भीत पर, बांटने की सिला पर,
पाषान खंड बिछाये हों वहां अधर अथवा ऊपर छत्त विना खुल्ली आकाश की जगह में शयन, करे बैठ
स्वध्याय करे, करते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु ग्राम की चारों तरफ खंधक-खाइ होवे उस पर
जो लकडे आदि का स्थाना [मंडप] बनाया हो उस के काष्टादि जो मजबूत बंधन से बंधे नहीं हो.
जो पाट पाटले पटिये आदि बराबर जमाकर रखे न हो. ऐसे स्थान में शयन करे, बैठे, स्वध्याय करे करते

॥ ७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा, गारात्थियं वा, सिप्पं वा, सिलोगं वा, अठाप दं वा, कक्करयं वा, वूयाहं वा, सलाहं वा, सलाहत्थयं वा, सिक्खावेइ, सिक्खावंत वा, साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा, गारात्थियं वा, आगाढं वदइ, वदंतं वा, साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारात्थियं वा, फरुसं वदइ वदंतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा, गारत्थियं वा, आगाढं फरुसं वदइ, वदंतं वा, साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा, गारात्थियं वा अण्णयरिए आचासइ आच्चासाएइ, अच्चासायंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा,

अर्थ

को अनुमोदे ॥ ७ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थ को सिल्प-कला वस्त्रादि बुनने की, श्लोक-श्लघारूप जोडकला, चौपड आदि जूवा खेलने की कला, ज्योतिष निमित, की कला, क्लेश करने की-युद्ध करने की रिति, काव्यरचन की कला, काव्यादि कर स्तवन करने की कला पढावे पढाते को अच्छा जाने * ॥ ८ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक अथवा गृहस्थ पर कोप करे, जोर २ से बोले, बोलते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थ को कठोर वचन कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थी को जोर २ से पुकार २ कर कठोर वचन कहे, कहने को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक की अथवा गृहस्थ की

* क्यों कि गृहस्थ के हाथ काला लगने से वह आगे अनेक अनर्थ पापारंभ निपजावे.

सूत्र

गारत्थियाणं वा, कोउग्ग कम्मं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा, भूइकम्मं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू अण्ण उत्थियाणं वा, गारत्थियं वा, पसिणापसिणं करेइ, करंतं वा साइज्जइ॥ १५॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, पसिणं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १६॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाण वा पसिणं कहेइ, कहंत वा साइज्जइ ॥ १७॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं पसिणा पसिणं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, तीतंनिमंतं कहेइ,

अर्थ

अन्य किसी प्रकार अच्छादना करे (सद्गुण ढके दुर्गुण प्रकट करे) करते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक की तथा गृहस्थ को कौतुक कर्म (औषध स्नानादि) करावे, कराते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थी को भूति कर्म (राखादि की पोटली बंधन आदि) करे करावे करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक का अथवा गृहस्थी से प्रश्न करे (अमुक कार्य होगा कि न होगा ?) करने को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थ से उक्त प्रकार के प्रश्न उत्तर लेवे, लेने को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थ को उक्त प्रश्न विद्या कहे कहते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु उक्त प्रकार के प्रश्न का उत्तर देने को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिकर

यह ज्योतिष विद्या सम्बन्धी प्रश्नोत्तर जानना चाहिये न की शास्त्र सम्बन्धी,

सूत्र

कहंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं पडिपण्णं निमंतं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, आगमिसं निमंतं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू अण्ण-उत्थियाणं वा, गारत्थियणं वा लक्खणं कहेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, सुमिणं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा विज्जं पउंजइ पउंजतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा मंतं पउंजइ, पउंजंतं

अर्थ

को अथवा ग्रहस्थ को गत काल का निमित्त कहे (कि तेरे ऐसा हुवा था) कहते को अच्छा जाने ॥१९॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थ को वर्तमान काल का निमित्त कहे कि [तेरे ऐसा हो रहा है] कहते को अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थ को आगामिक काल का निमित्त कहे (तेरे ऐसा होगा) कहते को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को व ग्रहस्थ को हस्तादि शरीर के लक्षण (रेखा) आदि का फलाफल बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थी को स्वप्न का फलाफल कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक व ग्रहस्थ को रोहिणीयादि विद्या बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु

सूत्र

वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा जोगं पउंजइ, पउजंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा णट्ठाणं मूढाणं विप्परियासियाणं मग्गवा पवेदइ, सिंद्धिपवेदइ, मग्गाणं वा सिद्धिपवेदेइ, सिद्धिउ वा मग्गंपवेदेइ, पवेदंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाण वा, धाउपवेदेइ, पवेयंतं वा साइज्जइ ॥ २८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियं वा, णिहिपवेएइ, पवेयंतं वा साइज्जइ

अर्थ

अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थ को यंत्रादि का सर्पादिका मंत्र बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥२५॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को ग्रहस्थ को वसीकरणादि योग [तंत्र विद्या] बतावे, बताते को अच्छा जाने॥२६॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को व ग्रहस्थ को जो पंथ से नष्ट हुवा हो अटवी में पड दिग मूढ बना हो उसे विपरीतता प्राप्त हुवे को रास्ता बतावे, सीधा रास्ता बतावे, मार्ग के सन्धी [रास्ता फटता हो वह] बतावे बताते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थ को धातु विद्या-सोना रूपा बनाने की (कीमीया) बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थी को धरती में गडा हुवा द्रव्य का निधान बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो साधु ज्ञानी

सूत्र

॥ २९ ॥ जे भिक्खू मत्तए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥
जे भिक्खू अद्दाए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू असीए
अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३२ ॥ जे भिक्खू मणीए अप्पाणं देहइ,
देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खू उडूपाणे अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ
॥ ३४ ॥ जे भिक्खू तेले अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जे भिक्खू
फाणिए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू वसीए अप्पाणं
देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३७ ॥ जे भिक्खू वमणं करेइ, करंतं वा साइज्जइ

अर्थ

भरे हुवे पात्र में अपना मुख देखे देखते को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ जो साधु आरीसा [कांच] में अपना
मुख देखे, देखते को अच्छा जाने ॥ ३१ ॥ जो साधु तरवार में अपना मुख देखे, देखते को
अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ जो साधु चन्द्रकान्तादि मणि में अपना मुख देखे, देखते को
अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु तलावादि के ऊंडे पानी में अपना मुख देखे, देखते को अच्छा जाने
॥ ३४ ॥ जो साधु तेल में अपने मुख को देखे देखते को अनुमोदे ॥ ३५ ॥ जो साधु पतले
गुल [काकब] में अपने मुख को देखे, देखते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ जो साधु चरबी में अपना मुख
देखे देखते को अच्छा जाने+ ॥ ३७ ॥ जो साधु शरीर की आरोग्यता के लिये वमन [उलटी] करे,

+ उक्त स्थानों में अपना रूप अवलोकन करने से शरीर पर मोह उत्पन्न होवे, दुर्बल देख पुष्ट बनाने निस्तेज

सूत्र

॥ ३८ ॥ जे भिक्खू विरेयणं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू वमणाविरेयणं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू आरोगिय पडिकम्मं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू पासत्थं वंदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू पासत्थं पसंसंति, पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू उसणं वंदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू उसणं पसंसेइ, पसंसंतं वा साइज्जइ

अर्थ

करते को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ जो साधु विना कारण शरीर की आरोग्यता के लिये जल्लाब लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥ ३९ ॥ जो साधु वमन और विरेचन दोनों करे. करते को अच्छा जाने* ॥ ४० ॥ जो साधु आरोग्य (रोग रहित) हो कर बलादि वृद्धि निमित औषधी का सेवन करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु पासत्थे-शिथिलाचारी को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु पासत्थे की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ जो साधु उसन्ना-मूल गुन उत्तर गुन में दोषित साधु को वंदना करे. करते को अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ जो साधु उसन्ना साधु की प्रशंसा करे प्रशंसक

देखसतेज बनाने माल खाना तेलादि लगाने का उपाय करता हुवा संयम से भृष्ट बनेगा.

* ऐसा करने से त्रस जीव की घात, दस्त वमन की आतुरता से इर्या आदि समिती का भंग. परिणामों की विकलता वगैरे दोषोत्पत्ती होती है.

सूत्र

॥ ४५ ॥ जे भिक्खू कुसीलं, वंदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू कुसीलं पसंसइ पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू णितियं वंदेइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू णितियं पसंसइ, पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ४९ ॥ जे भिक्खू संसातं वंदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्खू संसंतं पसंसइ, पसंसंतं वा साइज्जइ ॥५१॥ जे भिक्खू काहियं वंदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ५२ ॥ जे

अर्थ

को अच्छा जाने ॥४५॥ जो साधु कुशीलीये-भृष्टाचारीको वंदना करे, करतेको अच्छा जाने॥४६॥ जो साधु कुशी-लीयों साधु की प्रसंशा करे करते को अच्छा जाने ॥ ४७ ॥ जो साधु नित्य पिंड सदैव एक ही घर से आहारादि लेनेवाले को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४८ ॥ जो साधु नित्य पिंड लेनेवाले की प्रसंशा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु संसक्ता [जो भांड वहु रूपे समान मुख मंगलिक बोलकर जिस में रहे जैसा बन जाय, जिन का फक्त लौकीक व्यवहार ही शुद्ध है, परंतु अंतःकरण में पोला ऐसे] को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५० ॥ जो साधु संसक्त की परसंशा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५१ ॥ जो साधु कथायिक (स्वध्यायादि छोड स्त्री आदि की विकथा करने वाले) को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५२ ॥ जो साधु कथायिक की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने

भिक्खू काहीयं पसंसइ, पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ५३ ॥ जे भिक्खू पासणियं वंदइ वंदंतं वा वा साइज्जइ ॥ ५४ ॥ जे भिक्खू पासणियं पसंसइ, पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ५५ ॥ जे भिक्खू ममायं वंदइ, वंदंतं साइज्जइ॥५६॥ जे भिक्खू ममायं पसंसइ पसंसंतं वासइ ॥ ५७ ॥ जे भिक्खू संपसारियं वंदइ, वदंतं वा साइज्जइ ॥ ५८ ॥ जे भिक्खू संपसारियं पसंसइ पसंतं वा साइज्जइ ॥ ५९ ॥ जे भिक्खू धाइपिंडं

अर्थ

॥ ५३ ॥ जो साधु प्रश्नेनिक [जनपद देश के व्यवहार में कुशल तथा नाटकियें को कथा कर लोकों को रिंजाने वाले] को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५४ ॥ जो साधु प्रश्नेनिक की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५५ ॥ जो साधु ममत्वी [यह शस्त्र मेरा, यह वस्त्र मेरा यह पात्र मेरा यह शिष्य सूत्र मेरा यों मेरा २ करने वाले] को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५६ ॥ जो साधु ममत्वी की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५७ ॥ जो साधु संप्रसारिक [अव्रत के कार्य में सम्मत्ती दत्ता युक्ती बताने वाले] को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५८ ॥ जो साधु संप्रसाधिक की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने ॥५९॥ जो साधु धात्री पिंड (गृहस्थ के बाल बच्चे को

* जो साधु के वापरने में वस्त्र पात्रादि आते हैं उन को यह मेरी नेसरायं में है ऐसा कहते हैं.

सूत्र

जे भिक्खू दुईपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ
भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ६० ॥ जे भिक्खू
॥ ६१ ॥ जे भिक्खू निमित्तपिंड भुंजइ. भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ६२ ॥ जे भिक्खू वणीमय- पिंडं
आजीवियपिंड भुंजइ भुंजतं वा साइज्जइ ॥ ६३ ॥ जे भिक्खू तिगिच्छा पिंडं भुंजइ, भुंजंतं
भुंजइ, भुंजंतं वा वा साइज्जइ ॥ ६४ ॥ जे भिक्खू कोहपिंड भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ६६ ॥
वा साइज्जइ ॥ ६५ ॥ जे भिक्खू मायापिंडं
जे भिक्खू माणपिंड भुंजइ, भुंजतं वा साइज्जइ ॥ ६७ ॥

अर्थ

जो साधु दूती पिंड
रमा-क्रीडा कराकर आहार) लेके भोगवे, ऐसे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६० ॥
(ग्रहस्थ के गृहान्तर, बजारान्तर, ग्रामान्तर समाचार कहकर आहार) ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा
जाने ॥ ६१ ॥ जो साधु निमित्त पिंड (दाताग को ज्योतिष निमित्त प्ररूप कर आहारादि) ग्रहण कर
भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६२ ॥ जो साधु आजीविका पिंड [ज्ञाति सम्बन्ध मिलाकर आहार]
ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६४ ॥ जो साधु तिगिच्छा पिंड (औषधोपचार कर
आहार आदि) ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६५ ॥ जो साधु क्रोध कर-झगडे कर
आहारादि ग्रहण कर भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६६ ॥ जो साधु अभिमान कर-अपनी उत्तमता
बता आहार ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६७ ॥ जो साधु माया-दगलबाजी कर आहार

भुंजइ, भुजंतं वा साइज्जइ ॥ ६८ ॥ जे भिक्खू लोभपिंडं भुंजइ भुजंतं वा साइज्जइ ॥ ६९ ॥ जे भिक्खू विज्जापिंडं भुंजइ भुजंतं वा साइज्जइ ॥ ७० ॥ जे भिक्खू मंतपिंडं भुंजइ भुजंतं वा साइज्जइ ॥ ७१ ॥ जे भिक्खू जोगपिंडं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ७२ ॥ जे भिक्खू चूण्णयपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ७३ ॥ जे भिक्खू तं ठाणं सेवमाणे आवज्जइ चउम्मासियं परिहारठाणं उग्घाइयं ॥ इति निसीहज्झणयस्स तेरसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥

अर्थ

ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६८ ॥ जो साधु लोभ कर योगायोग विचारे विना जो आवे सो ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६९ ॥ जो साधु विद्या फोडकर अर्थात् विद्या से ग्रहस्थ को भस्म में डाल आहार ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ७० ॥ जो साधु मंत्रादि कर आहार ग्रहण कर भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ७१ ॥ जो साधु गर्भोत्पत्ति, वशीकरणादि योग ग्रहस्थ मिला आहार ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ७२ ॥ जो साधु पाचनादि चूर्ण ग्रहस्थको बनादे या युक्ति बता आहार ग्रहणकर भोगवे, भोगवतेको अच्छा जाने ॥ ७३ ॥ उक्त ७३ बोल में से किसी भी दोष के सेवक को लघु चातुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है. उक्त दोष परवशपने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ एकासने, मध्यम ६० नीवि, उत्कृष्ट १०८ उपवास. आतुरता से उपयोग सहित लगावे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ६ बेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारने में विगय त्याग और मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ बेले, मध्यम ४ तेले उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में आंबिल इति निशीथ सूत्र का तेरवा उद्देशा संपूर्ण ॥ १३ ॥

॥ चउदवा-उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू पडिग्गहं-किणइ, किणावेइ, कीयं साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं-पामिच्चेइ, पामिच्चावेइ, पामिच्चं साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं-पडियट्टेइ, परियट्टावेइ, परियट्टिय साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं-अच्छिज्जं, अणिसिट्ठं, अभिहडं, साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू अइरेगं

अर्थ

जो साधु साध्वी पात्रे स्वयं मोल लेवे दूसरे पास मोल लेवावे, दूसरा मोल लेकर देता हो उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु साध्वी पात्रे-उधारे लेवे, लेवावे, लेकर देते को ग्रहण करे. ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु साध्वी पात्रे-अदल बदल कर लेवे, दूसरे को लेवावे, अदल बदल कर लेकर देने को ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु साध्वी पात्रे-किसी के पास से बलात्कार कर छीन कर लेवे, मालक की आज्ञा विना लेवे, सन्मुख लाकर दे उसे ग्रहण करे. ऐसे ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु परिमाण उपरांत पात्रे गणका उद्देश [सांप्रदाय]की मर्यादा कर अथवा यह अधिक पात्र अन्य साधुओं को देवूंगा. अथवा गण

पडिग्गाहं-गणिंउद्देसियं, गणिसमुद्देसियं गणिअणापुच्छियं, गणि अणामंतियं, अण्णमण्ण-स्स वियरइ, वियरंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू अइरेगं पडिग्गाहं-खुड्डगस्स वा, खुड्डियाए वा, थेरगस्स वा, थेरियाए वा, अहत्थछिण्णस्स, अपायछिण्णस्स, अकण्णछिण्णस्स अनासछिण्णस्स अहोट्टछिण्णस्स सक्कस्स देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू अइरेगं पडिग्गहं-खुड्डगस्स वा, खुड्डियाए वा, थेरगस्स वा, थेरियाए वा, हत्थछिण्णस्स, पायछिण्णस्स, कण्णछिण्णस्स, णासछिण्णस्स, होठछिण्णस्स अरसक्क-

के अमुक साधु को देवूंगा, इस विचार से गणिवर-जो मुख्य साधु होवें उन को आमंत्रे, अन्यको देने का पूछे. जो वे गणिवर की आज्ञा बिना अपनी इच्छा प्रमाणे देवे. देते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु अधिक पात्र छोटा साधु. छोटी साध्वी. स्थविर साधु. स्थविर साध्वी जिन के हाथ पांव कान नाक छेदन नहीं हो अर्थात् अंगोपांग पूर्ण हो समर्थ हों उन को देवे देते को अच्छा जाने क्यों कि ऐसों पास प्रथम पूर्ण सामाग्री होने का संभव है. ये ममत्व कर अधिक रखे तथा सशक्त हो याचना करने का प्रमाद करें ॥ ६ ॥ जो साधु अपने पास अधिक पात्र हो वह छोटे साधु को छोटी साध्वी को स्थविर साधु साध्वी को कि-जिन के हाथ पांव कान नाक होठ छेदित हुवे हो अर्थात् अंगोपांग कर हीन अशक्ति असमर्थ हुवे हों उन को न देवे न देते को अच्छा जाने । क्यों कि वे किसी भी प्रकार

सूत्र

रस णदेइ, णदेयंतं वा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहगं-अणलं, अथिरं, अधूवं, अधारणिज्जं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं-अलं, थिरं, धूवं, धारणिज्जं, ण धरेइ, ण धरंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खु वण्णमंतं पडिग्गहं विवण्णं करेइ करंतं वा साइज्जइ॥ १०॥ जे भिक्खु विवण्णं पडिग्गहं, वण्णमंतं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥११॥ जे भिक्खू णवेंइमे पडिग्गहेणं लद्धे त्तिकट्टु,तेलेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाएज्ज वा, मंखेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा, मक्खंतं वा,

अर्थ

का कार्य करने असमर्थ हैं उन की हरेक तरह साहायता करना साधु का कृतव्य है] ॥ ७ ॥ जो साधु पात्र-संपूर्ण नहीं हो अर्थात् खण्डित हो अस्थिर बहुत दिन चलने कैसा नहीं हो, अथवा-खडथविखड हो, रखने लायक न हो, ऐसे पात्र को रखे, रखते को अच्छा जाने* ॥ ८ ॥ जो साधु पात्रा संपूर्ण बहुत काल चलने जैसा स्थिर साधु के रखने योग्य हो ऐसे पात्र को नहीं रखे, नहीं रखते को अच्छा जाने ॥९॥ जो साधु अच्छा वर्णवंत पात्रा हो उसे विवर्ण(खाराब)करे,करतेको अच्छा जाने ॥१०॥ जो खराब पात्र है उसे [शोभनीक] अच्छा करे. अच्छा करते को भला जाने ॥ ११ ॥ जो साधु मुझे

* क्यों कि ऐसे पात्र सफा नहीं होने से उस की सन्धी में कुच्छ रह जावे तो रात्रि वासी रखने का दोष लगता है.

भिलिंगंतं वा, साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू णवे इमे पडिग्गहं लद्धे त्तिकट्टु लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, ण्हाणेण वा, जाव साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू णवे इमे पडिग्गहं लद्धे त्तिकट्टु, सीउदग वियडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा, उच्छोलंतं वा, पधोवंतं वा, साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू णवे इमे पडिग्गहं लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसिएण, तेलेण वा घएण वा, जाव साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खू णवे इमे पडिग्गहं लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसिएणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, ण्हाणेण वा, पउमचुण्णेण वा, वणेण वा, जाव साइज्जइ

अर्थ

नवा पात्रा मिला है ऐसा विचार कर उसे तेल घृत मक्खन चरबी एक वक्त लगावे, वारम्वार लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु नवा पात्र मिला है. ऐसा विचार कर उस लोद्र कोष्टक पद्म चूर्ण आदि द्रव्य कर रंगे. रंगते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु मुझे नवा पात्र मिला है ऐसा विचार कर उसे अचित्त (धोवण) ठंडे पानी कर, अचित्त गरम पानी कर धोवे वारम्वार धोवे. धोते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु मुझे नवा पात्र मिला है ऐसा विचार कर, उसे बहुत दिनों के बाद खराब हुवे पहिले लोद्र कर, ककेत कर पद्म चुर्ग कर, वर्ण कर रंगे यावत् रंगते को अच्छा जाने॥ १६ ॥

सूत्र

॥ १६ ॥ जे भिक्खू णवे इमे पडिग्गहे लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसिएण सीउदग
वियडेण ,वा, उसिणोदग वियडेण वा, जाव साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू
सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे त्तिकट्टु दुब्भिगंधे करेइ, करंतं वा, साइज्जइ ॥ १८ ॥
जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे त्तिकट्टु सुब्भिगंधे करेइ करंतं वा साइज्जइ
॥ १९ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे त्तिकट्टु तेलेण वा, घएण वा,
णवणीएण वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे त्तिकट्टु

अर्थ

जो साधु मुझे नवा पात्रा मिला है ऐसा विचार कर उसे बहुत दिन के बाद या तीन पसली उपरांत अचित्त थंडे
पानी कर, अचित्त गरम पानी कर धोवे यावत धोते को अच्छा जाने॥१७॥जो साधु मुझे सुरभिगंध पात्रा मिला
है ऐसा विचार कर उसे दुरभिगंधी बनावे, बनाते को अच्छा जाने॥१८॥जो साधु मुझे दुरभिगंध पात्र मिला
है ऐसा विचार कर उसे (शोभा निमित्त) सुरभिगंध बनावे बनावे बनवाते को अच्छा जाने + ॥१९॥ जो
साधु सुरभिगंध पात्र मिला है ऐसा विचार कर उसे तेल घृत मक्खन लगावे, लगाते को अच्छा जाने

+ अच्छे को बुरा बनाने का हेतु अपन को आचारवन्त बताने के लिये और बुरे का अच्छा बनाने का हेतु शोभा निमित्त जानना परतु प्रयोजन से बनावे तो दोष नहीं "बहु दिवसिणं" इस पाठ का अर्थ तीन पसली उपरान्त या तीन लेप उपरान्त का भी लिखा है.

सूत्र

लोद्धेण वा, जाव साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे त्तिकट्टु सीउदग वियडेण वा जाव साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे पडिगहे लद्धे तिकट्टु बहुदिवसिएण तेलेण वा घएण वा जाव साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे पडिगहे लद्धे तिकट्टु बहुदिवसिएण लोद्धेण वा जाव साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू सूब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे तिकट्टु बहु दिवासिएण, सीउदगं वियडेण वा जाव साइजइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गह लद्धे तिकट्टु तेलेण वा

अर्थ

॥२०॥ जो साधु मुझे सुगंधी पात्र मिला है ऐसा विचार कर लोद्र कर कर्कतादि द्रव्य लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥२२॥ जो साधु मुझे सुरभिगंध पात्र मिला है ऐसा विचार कर अचित्त थंडे पानी से गरम पानी से धोवे, धोते को अच्छा जाने ॥२२॥ जो साधु मुझे सुगंधी पात्र मिला है ऐसा विचार कर बहुत दिन बाद तथा तीन पसली उपरांत ते [illegible] घृतादि लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥२३॥ जो साधु मुझे सुगंधी पात्र मिला है ऐसा विचार कर उसे बहुत दिन बाद या तीन लेप उपरांत लोद्रादि द्रव्य लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥२४॥ जो साधु मुझे सुगंधी पात्र मिला ऐसा विचार कर बहुतादिन बाद तथा एक दो तीन पसली उपरांत ठंडे पानी कर यावत् धोते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे सुगंधी पात्र मिला है उसे तेल घृतादि लगावे
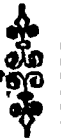
सूत्र

घाएणवा जाव साइज्जइ ॥२६॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे तिकट्टु लोद्देणवा कक्केणवा जाव साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे तिकट्टु सीदउग वियडेण वा, उसिण उदग वियडेण वा, जाव साइज्जइ ॥२८॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे तिकट्टु बहु दिवसिएण तेलेणवा जाव साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे तिकट्टु बहुदिवसिएणं लोद्देणवा जाव साइज्जइ ॥ ३० ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे तिकट्टु बहु दिवसिएणं सीउदगं वियडेणवा, उसिणोदग वियडेणवा जाव साइज्जइ ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू अणंतर

अर्थ

कर यावत् अच्छा जाने ॥ २६ ॥ जो साधु दुर्गंधी पत्र मिला है ऐसा विचार कर लोद्रादि लगावे यावत् अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु ऐसा विचारे मुझे दुर्गंधी पात्र मिला है उसे तीन पसली उपरांत अचित्त ठंडे पानी कर धोवे, धोते को अच्छा जाने ॥२८॥ जो साधु दुर्गंधी पात्र मिला ऐसा विचार कर बहुत दिन से तीन पसली उपरांत तेल घृतादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥२९॥ जो साधु दुर्गंधी पात्र मिला ऐसा विचार कर तीन लेप उपरांत लोद्रादि द्रव्य लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ जो साधु दुर्गंधी पात्र मिला है ऐसा कर तीन पसली उपरांत अचित्त ठंडे पानी कर गरम पानी कर धोवे, धोते को अच्छा जाने

सूत्र
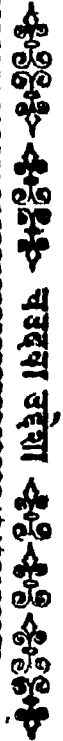
हियाए पुढविए पडिग्गहगं-आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा, आयावंतं वा जाव साइज्जइ ॥३३॥ जे भिक्खू ससरक्खाए पुढविए पडिग्गहं-आयावेज्जवा पयावेज्जवा, आयावंतं वा साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खू ससणिद्धाए पुढविए पडिग्गहगं आयावेज्ज वा जाव साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलूए, कोलावासंसि वा दारुइ जीव पइठए सअंड सपाणे, सबीए, सहरीए, सउस्से सउत्तिंग पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा संताणाएपडिग्गहगं-आयावेज्जा वा, पयावेज्ज वा आयावतं वा, पयावतं वा, साइज्जइ

अर्थ

॥३१॥ जो साधु अन्तर रहित सचित पृथ्वी काया पर पात्र को आताप में दे बारम्बार आताप में देवे देते को अच्छा जाने ॥३२॥ जो साधु सचित्त रज से भरी पृथ्वी पर पात्रेको आताप में दे विशेष आताप दे, आताप में देतेको अच्छा जाने॥३३॥जो साधु सचित पानीसे भींजे हुइ पृथ्वी पर पात्रको आताप में देवे विशेष आतापमें देवे आताप में देते को अच्छा जाने ॥ ३४ ॥ जो साधु सचित्त सिला सचित्त कंकर सडा हुवा लकडा यावत् प्रतिष्ठ हुवे जीवों के अंडे सहित. प्राणी-बेइन्द्रिय आदि जीवों सहित, गोधूमादि धान्य सहित, हरित काया सहित ओस के पानी सहित. कीडि नगरे सहित. फूलन सहित. पानी सहित. मट्टी सहित, करोलि-मकडी सहित, मकडी के जाले सहित स्थान पर पात्रे को आताप में देव विशेष आताप देवे, आताप में देते को,

सूत्र

कामजलंसि ॥ ३५ ॥ जे भिक्खू थुणांसि वा, गिहेलुयंसि वा, उसकालंसि वा, वा, पडिग्गहं आयावेज्ज वा, जाव साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू कुट्टंसि वा, भित्तिंसि वा, सेलुंसि वा, अंतरिक्खजायंसि वा, पडिग्गहं आयावेज्जा वा, जाव साइज्जइ ॥ ३७ ॥ जे भिक्खू खंधंसि वा, थूभंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, -दुबद्धे पासायंसि वा, हमियतलंसि वा, अण्णयरंसि वा अंतरिक्खजायंसि वा, पयावेज्ज वा जाव साइज्जइ ॥ ३८ ॥ जे भिक्खू दुनिक्खित्ते पडिग्गहगं-आयावेज्ज वा, खंधंसिवा थुभंसिवा मंचंसिवा मालंसिवा पासयंसिवा हमियतलंसि वा अण्णयरंसिवा

अर्थ

किसी भी अच्छा जाने ॥ ३५ ॥ जो साधु पृथ्वी के स्तुभ पर, घर के छत पर, ओस के पानी कर पदार्थ से भीना हुवा पात्र को आताप में दे विशेष आताप में दे, देते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ जो साधु घर के भींत पर घर की वरंडी आदि आकाशिक जगह में पात्रे को आताप में देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु किसी वस्तु के ढग पर स्तूभ पर मचान पर माले पर प्रसाद पर छपरे पर और भी इस प्रकारके अन्य आकाशमें ऊपर रही हुई जगह जो मजबूत बन्धे नहीं होवे, पाटिये आदि बराबर स्थापन किये नहीं होवे वहां पात्र को आताप में दे यावत् अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ जो साधु ढग पर स्थंभ पर मचान पर माले पर प्रसाद पर छपरे पर ऐसे अन्य

मूल

अंतरिक्ख जायंसिवा पडिग्गहगं-आयावेज्जवा जाव साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ-पुढवीकायं णीहरेइ, णीहरावेइ, णीहरीयं साहट्टु, दिज्जमाणे पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ-आउकायं णीहरेइ, णीहरावेइ, णीहरीय साहट्टु, दिज्जमाणे पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ-तेउकायं णीहरेइ, जाव साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ-कंदाणिवा, मूलाणिवा, पत्ताणिवा, पुप्फाणिवा, फलाणिवा, बीयाणिवा, हरियाणिवा, णीहरेइ, जाव साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ-उसह

अर्थ

भी आकाश स्थान पर पात्र को आताप में दे, देते को अच्छा जाने ॥३९॥ जो साधु पात्र में पृथ्वी काया भरी हो उसे निकाले अन्य के पास निकलावे, निकलाकर पात्र देते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ जो साधु पात्र में से सचित्त पानी निकाले, निकलावे, निकालकर पात्र देते को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु पात्र में से अग्नि निकाले, निकलावे, निकालकर पात्र देते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु पात्र में से वनस्पति काय-कन्द मूल पत्र फल फूल बीज हरित काया स्वयं निकाले अन्य के पास निकलावे, यह निकालकर पात्र देता हो उसे अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ जो साधु पात्र में अनाज बीज भरे हो उसे निकाले,

सूत्र

कायाए णीहरइ, णीहरावेइ, णीहरियं साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ-तसपाणजायं णीहरेइ जाव साइज्जइ ॥ ४५ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं-कोरेइ, कोरावेइ, कोरियं साहट्टु दिज्जमाणे पडिग्गहइ जाव साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू णायगं वा, अणायगं वा, उवासगं वा, अणउवासगं वा, गामंतरंसि वा, गामपहंतरंसि वा, पडिग्गहं उभासियं उभासियं जायइ, आयंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू णायगं वा, अणायगं वा, उवासगं वा, अणउवसगं वा, परिसामज्झाओ उट्ठित्ता

निकलावें, निकालकर देते को अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ जो साधु पात्र में से त्रस प्राणी—बेइन्द्रि आदि हो उसे निकाले, निकलावे, निकालकर देते को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु लकडादि से पात्रा कोर कर स्वयं बनावें, अन्य के पास कोरावे, कोर कर सन्मुख लाकर देवे उसे अच्छा जाने ॥ ४६ ॥ जो साधु ज्ञातिजन स्वजन मातपितादि, अथवा ज्ञातिजन स्वजन बिना अन्य जन, श्रावक श्राविका अथवा श्रावक श्राविका बिना अन्य के पास दो ग्राम के मध्य पथमें ग्राम के रास्ते के अन्तरमें उनसे विशिष्ट वचनकर पात्र याचे याचते को अच्छा जाने ॥ ४७ ॥ जो साधु, ज्ञाति स्वजन अथवा ज्ञाति स्वजन बिना, अन्य श्रावक श्राविका

* पात्र सडकर उसमें जीवों, त्रस उत्पन्न हुए हों, उन्हें निकालने का निषेध है. नाकि पडे हुए का.

सूत्र

पडिग्गहं उभासिय उभासियं जायइ, जायंतं वा, साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं णिसीए उडुबंधं वसइ वसंतं वा साइज्जइ ॥ ४९ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं णि ीए वासावासं वसइ, वसंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ तं ठाणं सेवमाणे आवइ चाउम्मासियं परिहारठाणं उग्घातियं निसीह उज्झयणइ चउद्दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥१४॥ * * * * *

अर्थ

से परिषदा के बीच में से उठे उठकर विशिष्ट वचन कर पात्रा याचे, याचे को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु पात्रा की निश्राय ग्राम कल्पादि योग्य स्थान छोडकर जहां पात्र मिले वहां रहे, रहते को अच्छा जाने ॥ ५० ॥ जो साधु पात्र की नेश्राय से अर्थात् यहां पात्र मिलेगा ऐसे विचार से चतुर्मास करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५० ॥ यह ५० दोष स्थान में से किसी एक दोष स्थान का सेवन करे. करावे करते को अच्छा जाने उस साधु को लघु चतुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है. परवशपने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ आयंबिल. मध्यम ६० निवी. उत्कृष्ट १०८ उपवास. आतुरता से उपयोग सहित लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ६ छठ, उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारने में विगय त्याग. मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ छठ, मध्यम ४ अठम, उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारने में आयंबिल. इति निशीथ सूत्र का चउदवा उद्देशा संपूर्ण ॥ १४ ॥ ० ० ०

मूल

॥ पन्दरवा-उद्देशा ॥

जे भिक्खू भिक्खूणं आगाढं वदइ, वदंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू भिक्खूणं फरुसं वदइ, वदंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू भिक्खूणं आगाढं फरुसं वदइ, वदंत वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू भिक्खूणं अण्णयरीए अच्चासायणाए अच्चासइए, अच्चासाइतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू सचित्तं अंबं भुंजइ, भुजंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू सचित्तं अंबं विडंसइ, विडंसंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू सचित्तं अंबं वा, अंब भित्तिं वा, अंबं सालगं वा,

अर्थ

जो साधु किसी साधु को आक्रोश युक्त जोर जोर से बोले, बोलते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु किसी साधु को कठोर वचन कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु किसी साधु को आक्रोश युक्त कठोर वचन कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु किसी साधु की अन्य किसी भी प्रकार की अशातना करे [गुणो को अच्छादे] ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु सचित्त आम्र खावे, खाते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु सचित्त आम्र को मसले मसलते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु सचित्त आम्र अथवा आम्र की गुठली, आम्र का टुकडा,

सूत्र

अंबं डालगं वा, अंबं चोयगं वा, भुंजइ भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू सचित्तं अंबं वा, अंब पेसियं वा, अंबं भित्तिं वा, सालगं वा, अंबडालगं वा, अंबं चोयगं वा, विडंसइ विडंसंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खु सचित्तं पइट्ठियं अंबं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइट्ठियं अंब विडंसइ विडंसंतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू सचित्त पइट्ठियं अंबं वा, अंबं पेसियं वा, अंबभित्ति वा, अंबसालगं वा, अंबडालगं वा, अंबं चोयगं वा, भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइट्ठियं अंबं वा, अंबं पेसियं वा, अंब-

अर्थ

आम्ब की शाखा, आम्ब की डाली, आम्ब का चूंथा [कचुमरादि] भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु सचित्त आम्ब, आम्ब की गुठली, आम्ब का टुकडा आम्ब की छाल, आम्ब की शाखा, आम्ब का चुंथा इन को मशले मशलते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु अचित्त हुवा आम्ब (गुठली रहित पका हुवा रस निकाला हुवा) सचित्त वस्तु पर [गुठली पर या धान्य पानी आदि ऊपर] प्रतिष्ट हो उस आम्ब को भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु सचित्त प्रतिष्ट आम्ब को चूसे, चूंसते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु सचित्त वस्तु प्रतिष्ट आम्ब, आम्ब की गुठली, आम्ब का टुकडा, आम्ब की छाल, आम्ब की शाख, आम्ब का चुंथा [अचित्त] उसे भोगवे भोगवतेको अच्छा

सूत्र

जाव पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, अप्पाणो कायंसीवण्णं अमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, जाव मंखंतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, अप्पाणो कायंसी वणं-गडं वा, पलियं वा, अरियं वा असियं वा, भगंदलं वा, अण्णयरेण वा तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिंदेइ विछिंदेइ अच्छिंदंतं वा, विछिंदंतं वा, साइज्जइ ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, अप्पाण कायंसि वणं गडं वा, जाव भगंदलं वा, अण्णयरेण वा, तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिंदिए वा,

अर्थ

जो साधु अन्य तीर्थिक तथा ग्रहस्थ के पास अपनी काया-१ प्रमार्जन करावे २ दबावे ३ तेलादि मशलवावे ४ लोद्रादि लगवावे ५ धोवावे और ६ रंगावे उक्त प्रकार ही छ गमा कायाश्रिय कहना ॥ २९ ॥ उक्त प्रकार ही छ मूत्र काया के वर्ण गडगुम्बड आश्रिय कहना ॥ ३० ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक तथा ग्रहस्थ के पास अपनी काया (शरीर) का वर्ण गड गुम्बडादि किसी भी तीक्ष्ण शास्त्र कर छेदन भेदन करावे छेदन भेदन कराते को अच्छा जाने ॥ ३१ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक तथा ग्रहस्थ के पास अपने शरीर के वर्ण गड गुम्बड मादतू भगंदरादि को किसी भी तीक्ष्ण शस्त्र कर छेदन भेदन करा-रस्सी रक्त निक-

विछिंदित्ता वा, पुयं वा, सेणियं वा, णिहरेज्ज वा, जाव विसोहंतं वा, साइज्जइ ॥ ३२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, अप्पाणो कायंसि गडं वा, जाव अण्णयरेण सत्थजाएण जावं विसोहियाएज्ज वा, सीउदग वियडेण वा, जाव पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, अप्पणो कायंसि गडं वा, जाव विसोहियाएज्ज वा, अण्णयरेण वा, आलेवणजाएण आलिंपेज्ज वा जाव विलिपंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, अप्पणो कायंसि गंडं वा, जाव विसोहियाएज्ज

लावे निकलाते को अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक तथा ग्रहस्थ के पास अपने शरीर का गड गुम्बड किसी भी तीक्ष्ण शस्त्र से छेदन करा रस्सी रक्त निकला कर अचित्त सीतल जल या उष्ण जल कर धोवे धोते को अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक तथा ग्रहस्थ के पास अपने शरीर के गडगुम्बडादि किसी भी तीक्ष्ण शस्त्र से छेदन भेदन करा रस्सी रक्त निकला अचित्त पानी से धो किसी भी प्रकार का मल्हम आदि विलेपन लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ३४ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक तथा ग्रहस्थी के पास अपने शरीर के गडगुम्बड को छेदा भेदा रस्सी रक्त निकला धोवा शुद्ध

वा, अण्णयरेण आलेवण जाएणं तेलेण वा, जाव भिलगंतं वा साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, अप्पणो कायंसि गंडं जाव विसोहियाए ज वा, अण्णयरेण वा धुवेण जाएण धुयाएज वा, जाव पधुयावंतं वा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू अप्पणो पालुकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा, अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अंगुलिए निवेसियाए जाव णिहसवंतं वा साइज्जइ ॥ ३७ ॥ जे भिक्खू अप्पणो णहसीहाओ दीहाइ—वत्थिरोमाइं—जंघरोमाइं—सीसकेसाइ—कण्णरोमाईं—गुनयरोमाइं—अत्थिपत्ताइं—चक्खूरोमाइं—णासारोमाइं—मंसुरोमाइं—

अर्थ

कर तेल घृतादि लगवावे, लगवाते को अच्छा जाने ॥ ३५ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक तथा ग्रहस्थ के पास गड़गुम्बड छेदा भेदा रस्सी रक्त निकला धोवा कर विशुद्ध कर किसी भी प्रकार का धूप देवावे धूप देवातेको अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ जो साधु अपने गुदा द्वार के किसी जीव कुक्षी के किमी को किसी अन्य तीर्थिक स ग्रहस्थ के पास अंगुली आदि कर निकलावे निकलाने को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु अपने १ नख शिखाः दीर्घ बडे हुवे-२ गुह्य स्थान के रोम, ३ जंघा के रोम, ४ मस्तक के बाल ५ कान के रोम, ६ भमुर के रोम, ७ कांपन के रोम, ८ आंखों अंदर के रोम, ९ नाक के रोम, १० दाढी मूछ के

सूत्र

कक्खरोमाइं—पासरोमाइं—उत्तरोट्ठाइं—अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पंतं वा, संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो दंताइं आघसीयेज्ज वा पघसीयेज्ज वा जाव पघसीयंतं वा साइज्जइ ॥ ५१ ॥ एवं अप्पणो दंताइं सीओदग वीयडेण वा जाव पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ ५२ ॥ एवं अप्पणो दंताइं फुमावेज्ज वा जाव मखंतं वा साइज्जइ ॥ ५३ ॥ एवं अप्पणो होट्ठे अमज्जावेज्ज वा—संबाहेज्जावेज्ज वा—तेल्लेण वा जाव भिलिंगेज्जावेज्ज वा—लोद्देण वा जाव उवट्ठावेज्ज वा—सीओदग वियडेण वा

अर्थ

रोम, ११ कांख के रोम, १२ पार्श्व के रोम, १३ लम्बा बढा होठ, किसी भी अन्य तीर्थिक व गृहस्थ के पास कटावे सुधरावे, कटाते सुधराते को अच्छा जाने ॥ ३८-५० ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक व गृहस्थ के पास अपने दांत घसावे, विशेष घसावे, घसाते को अच्छा जाने ॥ ५१ ॥ ऐसे ही जो साधु अपने दांत अन्य तीर्थिक व गृहस्थ के पास अचित्त ठंडे पानी से गरम पानी से धोवावे, धोवाते को अच्छा जाने ॥ ५२ ॥ ऐसे ही अपने दांत को खटाइ देवावे रंग लगवावे लगवाते को अच्छा जाने ॥ ५३ ॥ ऐसे ही अपने होठ १ साफ करावे, २ मसलावे, ३ तेलादि लगवावे ४ लोद्रादि लगवावे, ५ अचित्त पानी से धोवावे, और ६ खटाइ से रंग से रंगवावे

सूत्र

जाव पधोवेवेज्ज वा—फुमेज्जवेज्ज वा जाव साइज्जइ ॥ ५९ ॥ जे भिक्खु अण्ण-उत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो अत्थिणी—अमज्जावेज्ज वा—संवाहावेज्ज वा—तेलेण वा जाव—भिलंगेज्जावेज्ज वा—लोद्देण वा जाव उवट्टावेज्ज वा—सीउदग वियडेण वा जाव पधोवेज्ज वा—फुमज्जावेज्ज वा जाव साइज्जइ ॥ ६५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो होट्टमलं वा, अत्थिमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा, णीहारावेज्ज वा निहारावंतं वा साइज्जइ ॥ ६६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा अप्पणो कायाओ सेयं वा जलं वा पंकं वा मलं वा णिहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा, णिहरावंतं वा विसोहावंतं वा साइज्जइ

अर्थ

इतने काम करते को अच्छा जाने ॥ ५९ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक व गृहस्थ के पास अपनी आंखों १ साफ करावे, २ मशलावे, ३ तेलादि लगवावे. ४ लोद्रादि कगवावे. ५ धोवावे. और ६ अंजन सुरमादि कर रंगवावे. इतने काम करने को अच्छा जाने ॥ ६५ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक के व गृहस्थ के पास-होट का मैल. आंख का मैल. दांत का मैल. नख का मैल. निकलावे. निकलाते को अच्छा जाने ॥ ६६ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक व गृहस्थ के पास अपने शरीर का स्वेद [पशीना] जल [मैल युक्त पशीना] मैल शरीर का. मलादि निकाल कर विशुद्ध करावे, निकलाते विशुद्ध कराते

सूत्र

॥ ६७ ॥ जे भिक्खू गामाणुगामं दुइज्जमाणं अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, अप्पणो सीसदुवारय करावेइ, करावं।ं वा साइज्जइ ॥ ६९ ॥ जे भिक्खू आगंतारेसु वा, आरामगारेसु वा, गाहावइकुलेसु वा, परियावसहेसु वा, उच्चारप.सवणं परिट्ठवेइ; परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ६९ ॥ जे भिक्खू उज्जाणंसि वा, उज्जाणगिहंसि वा, उज्जाणसालंसि वा, निज्जाणंसि वा, निज्जाणगिहंसि वा, निज्जाणसालंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ७० ॥ जे भिक्खू अट्टंसि वा, अट्टालयंसि वा, चरियंसि वा, दारगंसि वा, गोपुरंसि वा, उच्चारपासवणं परिट्ठवइ

अर्थ

को अच्छा जाने ॥ ६७ ॥ जो साधु ग्रामानुग्राम विहार करता हुवा अन्य तीर्थिक व गृहस्थ के पास अपना शिर वस्त्र छत्रादि कर ढकावे ढकाते को अच्छा जाने ॥ ६८ ॥ जो साधु मुसाफरखाने में, बगीचे में, बगीचे के बंगले में, गृहस्थ के घर में, तापसों के आश्राम में, बडीनीत लघुनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ६९ ॥ जो साधु एक जाति के वृक्ष विशेष हों ऐसे उद्यान में, उद्यान के घर में, उद्यान की पडसाल में, लोगों के निकलने रास्तेमें, रास्ते के गृह में, रास्तेकी पडशालामें, लघुनीत बडीनीत परिठावे परिठ.तेको अच्छाजाने॥७०॥जो साधु कोट पर, कोटपर की अटा ऊपर, कोटकी फिरनी पर, छोटे

परिठ्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ७१ ॥ जे भिक्खू दगंसि वा, दगमग्गंसि वा, दगवहंसि वा, दगतीरंसि वा, दगठाणंसि वा, उच्चारपासवणं परिठ्ठवेइ, परिठ्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ७२ ॥ जे भिक्खू सुण्णगिहंसि वा, सुण्णसालंसि वा, भिण्णगिहंसि वा, भिण्णसालंसि वा, कुडागारंसि वा, कुडागारगिहंसि वा, कुडागारसालंसि वा, कोठागारगिहंसि वा, कोठागारसालंसि वा, उच्चारपासवणं परिठ्ठावेइ, परिठ्ठावंतं वा साइज्जइ ॥ ७३ ॥ जे भिक्खू तणगिहंगिहंसि वा, तणसालंसि वा, तुसगिहंसि वा, तुससालंसि वा, भुसगिहंसि वा, भुससालंसि वा, उच्चारपासवणं परिठ्ठावेइ

अर्थ

द्वार (कोट की खिड की) में, नगर के द्वार में लघुनीत बडीनीत परिठावे ॥ ७१ ॥ जो साधु पानी के रास्ते में, पानी रखने के रास्ते में, पानी लाने के रास्ते में, पानी के किनारे, पानी के स्थान में, लघुनीत बडीनीत परिठावे परिठातेको अच्छा जाने ॥७२॥ जो सुन्य गृहमें सुन्य शालामें, फुटे घर में फूटी शाला में कूटाकार स्थान में, कूटाकार गृह में, कूटाकार शाला में, कोष्टाकार गृह में, कोष्टाकार शाला में, लघुनीत बडीनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७३ ॥ जो साधु तृण [घांस] के घर में, तृण की शाला में, फोतरे के घर में, फोतरे की शाल में, भूसे के घर में, भूसे की शाल में, लघुनीत बडीनीत परिठावे,

सूत्र

परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥ ७४ ॥ जे भिक्खू जाणं गिहंसि वा, जाण सालंसि वा, जुग्ग गिहंसि वा, जुग्ग सालंसि वा, वुस गिहंसि वा, वुस सालंसि वा, उच्चारपासवणं परिठावइ, परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥ ७५ ॥ जे भिक्खू पणिय गिहंसि वा, पणिय सालंसि वा, कुविय गिहंसि वा, कुविय सालंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा, साइज्जइ ॥ ७६ ॥ जे भिक्खू गोण गिहंसि वा, गोण सालंसि वा, महाकुल गिहंसि वा, महाकुल सालंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा, साइज्जइ ॥ ७७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा असणं वा, ४ देयइ, देयंतं वा,

अर्थ

परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७४ ॥ जो साधु यान-रथ साकटादि स्थापन करने के घर में, यान की शाला में, युग धूंसरादि स्थापन करने के घर में, युग की शाला में, वुस- साकटादि का सराजम रखने के घर में, वुस-शाला में, लघुनीत बडीनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७५ ॥ जो साधु किरियाने के घर में, किरियाने की शाला में, धातु के व तनादि रखे हों उस घर में, धातु की शाला में, लघुनीत बडीनीत परिठावे परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७६ ॥ जो साधु बैलों गायों के घर में, बैलों की शाल में, बडे मनुष्यों के घर में, बडे मनुष्यों बैठते हों उस शाल में लघुनीत बडीनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७७ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को व गृहस्थ को अशन पानी पकवान, स्वादिम देवे, दूसरा साधु देता हो उसे अच्छा जाने

सूत्र

साइज्जइ ॥ ७८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पायपुच्छणं वा, देयइ, देयतं वा, साइज्जइ ॥ ७९ ॥ जे भिक्खू पासत्थं असणं वा, ४ देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ८० ॥ जे भिक्खू पासत्थस्स असणं वा, ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा, साइज्जइ ॥ ८१ ॥ जे भिक्खू पासत्थं वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पायपुच्छणं वा, देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ८२ ॥ जे भिक्खू पासत्थस्स वत्थंवा वा, ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ८३ ॥ जे भिक्खू उसणं असणं वा ४ देयइ,

अर्थ

॥ ७८ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को व गृहस्थको वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण दे. अन्य साधु देता हो उसे अच्छा जाने ॥ ७९ ॥ जो साधु पास्थे शिथलाचारी (लोक विरुद्ध आचार के पालनेवाले साधु) को अशनादि चारों आहार दे, अन्य देते को अच्छा जाने ॥ ८० ॥ जो साधु पास्थे साधु का अशनादि चारों आहार ग्रहण करे. ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ८१ ॥ जो साधु पास्थे को वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण दे. देने का अच्छा जाने ॥ ८२ ॥ जो साधु पास्थे के वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा माने ॥ ८३ ॥ जो साधु उसन्ने [मूल व्रतों के भंग करनेवाले साधु] को अश-

सूत्र

देयंतं वा, साइज्जइ ॥ ८४ ॥ जे भिक्खू उसण्णस्स, असणं वा ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ८५ ॥ जे भिक्खू उसण्णं वत्थं वा ४ देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ८६ ॥ जे भिक्खू उसणस्स वत्थं ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ८७ ॥ जे भिक्खू कुसिलियं असणं वा, ४ देयइ, देयंतं वा, साइज्जइ ॥ ८८ ॥ जे भिक्खू कुसिलस्स असणं वा, ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ८९ ॥ जे भिक्खू कुसीलियं वत्थं ४ देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ९० ॥ जे भिक्खू कुसिलस्स वत्थं वा, ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ९१ ॥

अर्थ

नादि चारों आहार दे, देते को अच्छा जाने ॥ ८४ ॥ जो साधु उसन्ने के अशनादि चारों आहार ग्रहण करे ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥८५॥ जो साधु उसन्ने को वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण दे देते को अच्छा जाने ॥८६॥ जो साधु उसन्ने के वस्त्रादि ग्रहण करे ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥८७॥ जो साधु कुशीलीये (भ्रष्टाचारी) को अशनादि चारों आहार दे, देते को अच्छा जाने ॥ ८८ ॥ जो साधु कुशीलीये का अशनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ८९ ॥ जो साधु कुशीलीये को वस्त्रादि दे. देते को अच्छा जाने ॥ ९० ॥ जो साधु कुशीलीये के वस्त्रादि ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ९१ ॥

सूत्र

जे भिक्खू णितियं असणं वा४ देयइ, देयंतं वा साइज्जइ॥ ९२ ॥ जे भिक्खू णितियंस्स असणं ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ॥ ९३ ॥ जे भिक्खू णितिय वत्थंव ४ देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ९४ ॥ जे भिक्खू णितियंस्स वत्थं वा ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ९५ ॥ जे भिक्खू संसत्तस्स असणं वा ४ देयइ, देयंतवा साइज्जइ ॥ ९६ ॥ जे भिक्खू संसत्तस्स असणं वा ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ९७ ॥ जे भिक्खू संसत्तं वत्थं वा, ४ देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ९८ ॥ जे भिक्खू संसत्तं स्स वत्थं वा ४ जाव पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ९९ ॥ जे

अर्थ

जो साधु नित्यक [सदैव एक ही घर से आहार ग्रहण करनेवाला साधु] को अशनादि चारों आहार दे, देते को अच्छा जाने ॥ ९२ ॥ जो साधु नित्यक का अशनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ९३ ॥ जो साधु नित्यक को वस्त्रादि दे, देते को अच्छा जाने ॥ ९४ ॥ जो साधु नित्यक के वस्त्रादि ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ९५ ॥ जो साधु संसक्त [इन्द्रियों सुख में लुब्ध विनयादि मर्यादा का भंग करनेवाला साधु] को अशनादि दे, देते को अच्छा जाने ॥ ९६ ॥ जो साधु संसक्त का अशनादि ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ९७ ॥ जो साधु संसक्त को वस्त्रादि दे, देते को अच्छा जाने ॥ ९८ ॥ जो साधु संसक्त के वस्त्रादि ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने॥९९॥

सूत्र
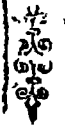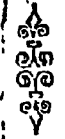
भिक्खू जाणया वत्थं वा णिमंतणा वत्थं वा, अजाणिय अपुच्छियं अगवेसियं पडिग्गाहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १०० ॥ जे भिक्खू सेयवत्थे चउण्हं अण्णयरेसिया तंजहा—णिच्छंगियमणि, मंज्जणिए, उसविए, रायदुवारियं. पडिग्गहेइ, पडिग्गाहतं वा साइज्जइ ॥ १०१ ॥ जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणोपाए अमाजेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, अमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥ एवं जाव जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणोपाए मखतं वा साइज्जइ ॥ १०७॥ जे भिक्खू विभूसावडियाए

अर्थ

जो साधु के जान-पैछानवाला ग्रहस्थ वस्त्र का आमंत्रण करे, वह किस लिये लाया किस हेतु से देता है. इत्यादि कारण जाने विना पूछे विना, गवेषणा-चौकस किये विना ग्रहण करे. ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १०० ॥ साधु को श्वेत वस्त्र धारन करना कल्पता है परंतु वह भी ग्रहस्थ के चार कामों में नहीं आता हो उसे ग्रहण करे तद्यथा—१. सदैव धारन करने का. २ स्नान किये बाद धारन करने का, ३ उत्सव के समय धारन करने का, और ४ राज्य सभादि में जाते धारन करने का, जो साधु इन चार प्रकार के वस्त्र में का वस्त्र ग्रहण करे ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १०१ ॥ जो साधु अपने शरीर की विभूषा [शोभा] करने के लिये अपने पांव-१ प्रमार्जे, २ मसूले, ३ तेलादि लगावे, ४ लोद्रादि लगावे, ५ धोवे और ६ रंगे. अन्य इतने काम करते को अच्छा जाने ॥ १०७ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने

पडिकमणासूत्र-निशिथ सूत्र-तृतीय

सूत्र
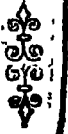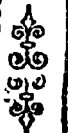
अप्पणो कायं संवाहेज्ज वा, एवं जाव मखंतं वा साइज्जइ ॥ ११३ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायसीवण्णं अमज्जेज वा जाव मखंतं वा साइज्जइ ॥ ११९ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायसी वण्णं गंडं वा, पलियं वा, अरियं वा, भगंदलं वा, विच्छिदिज्जज्ज वा, जाव साइज्जइ ॥ १२० ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायसी वण्णं जाव विच्छिदित्तं पुयं वा, सोणियं वा णिहरेज्ज वा, जाव विसोहेतं वा साइज्जइ ॥ १२१ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायसि वण्णं जाव विच्छिदितं वा, पुयं वा सोणियं वा, विसोहिज्ज वा सीउदग वियडेणं वा उसिणोदग वियडेण वा जाव पधोयंतं वा

अर्थ

शरीर को १ प्रमार्जे २ मसले ३ तेलादि लगावे ४ लोद्रादि लगावे ५ धोवे और ६ रंगे. इतने काम करते को अच्छा जाने ॥ ११३ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर के वर्ण गुम्बडादि को प्रमार्जे यावत् रंग लगावे ॥ ११९ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर के वर्ण-गुम्बडादी को छेदन भेदन करे करते को अच्छा जाने ॥ १२० ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर के वर्ण गुम्बडादि को छेद भेद कर रस्सी रक्त निकाले. निकालते को अच्छा जाने ॥ १२१ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर के वर्ण गुम्बडादि को छेद भेद रस्सी रक्त निकाल अचित्त शीत उष्ण

सूत्र

साइज्जइ ॥ १२२ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायसी वण्णं जाव विच्छिदितं वा पुयं वा जाव विसोहेज्ज वा, अण्णयरेण वा आलेवणं जाएणं आलिंपेज्ज वा जाव विलिप्पंतं वा, साइज्जइ ॥ १२३ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायसी वण्णं जाव आलेवण जाएणं विलिप्पे तंवा तेलेणवा घएण वा जाव मखतं वा साइज्जइ ॥ १२४ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायसी वण्णं जाव, आलेवणं जाएणं विलिंपेज्जवा, अण्णयरेण वा, धूवेण जाएणं धूवेज्जवा जाव साइज्जइ ॥ १२५ ॥ जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो पाउकिमियं वा कुत्थिकिमियं वा

अर्थ

पानी कर धोवें, धोते को अच्छा जाने ॥ १२२ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर का वर्ण गुम्मडादि छेद भेद रस्सी रक्त निकाल धो कर मलम आदि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ १२३ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर के वर्ण को छेद भेद रक्त रस्सी निकाल धो मलमादि लगा, तेलादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ १२४ ॥ जो साधु अपने शरीर के गुम्मडादि का छेद भेद रक्त रस्सी निकाल धो मलमादि लगा तेलादि लगा अन्य किसी प्रकार का धूप देवे, धूप देते को अच्छा जाने ॥ १२५ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने गुदा के कूक्षी के किमी अपनी अंगुली कर

सूत्र

अप्पणो अंगुलियाए निवेसिय २ णिहरेइ, निहरंतं वा साइज्जइ ॥ १२६ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो णहसिहाओ-दीहाओ वत्थीरोमाइं, जंघरोमाइं, सीसकेसाइं, कण्णरोमाइं, भूयरोमाइं अच्छिपत्ताइं, चक्खूरोमाइं, णासारोमाइं, मंसुरोमाइं, [illegible] उत्तरोट्ठाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ १३९ ॥ जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दंते आघसेज्ज वा पघसेज्ज वा जाव साइज्जइ ॥ १४० ॥ जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दंते सीउदगवियडेणवा जाव पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ १४१ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो दंतं तेल्लेणवा जाव

अर्थ

निकाले निकालते को अच्छा जाने ॥ १२६ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने-१ नख, लम्बे बढे, २ गुह्य स्थान के रोम ३ जंघा के रोम, ४ मस्तक के बाल, ५ कान के रोम, ६ भुंव के रोम, ७ आंपण के रोम, ८ आंख के रोम, ९ नाक के रोम १० दाढी मुछ के रोम ११ कांख के रोम, १२ पार्श्व के रोम १३ ऊपर का होट. इन को काट साफ करे, काटते साफ करते को अच्छा जाने ॥ १३९ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने दांत को घसे, घसते को अच्छा जाने ॥ १४० ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने दांत अचित्त ठंडे पानी से गरम पानी से धोवे, धोते को अच्छा जाने ॥ १४१॥ जो सा-

सूत्र

फुमेज्जवा जाव साइज्जइ ॥ १५२ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो उट्ठे अब्भज्जेज्जवा जाव जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे विभूसा वडियाए फुमंतं वा मखंतं वा साइज्जइ ॥ १५३ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो अच्छिणी अमज्जेज्ज वा जाव मखंतं वा साइज्जइ ॥१५४॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो अच्छिमलं वा—कण्णमलंवा—दंतमलंवा—णहमलंवा—णिहरतं वा साइज्जइ ॥ १५५ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायाओ सेयंवा—जलंवा—पंकंवा—मलंवा—णिहरेइ, णिहरंतंवा साइज्जइ ॥ १५६ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए गामाणुगामं दूइज्जमाणं सीसदुवारियं

अर्थ

विभूषा के लिये अपने दांत को खवाइ दे [illegible] जाने ॥१५२॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने होठ को-१ प्रमार्जे, २ मसले ३ तेलादि लगावे, ४ लोद्रादि लगावे ५ धोवे और ६ रंगे. ऐसे करने को अच्छा जाने ॥ १५३ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपनी आंख को-१ प्रमार्जे २ मसले. ३ तेलादि लगावे, ४लोद्रादि लगावे, ५ धोवे और ६ रंगे. ऐसे करते को अच्छा जाने ॥ १५४ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने-आंख का मैल. कान का मैल दांत का मैल. नख का मैल निकाले, निकालते को अच्छा जाने ॥ १५५ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर का स्वेद जल कर्दम मैल निकाले, निकालने को अच्छा जाने ॥ १५६ ॥ जो साधु विभूषा के लिये ग्रामानुग्राम फिरता मस्तक ढक कर चले. चलते

॥ सोलवा-उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू सागरियं सेज्जं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसंतं वा साइज्जइ ॥१॥ जे भिक्खू सउदगंसेज्जं अणुप्पाविस्सइ, अणुप्पाविसंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू सगणियं सेज्जं अणुप्पविस्सइ, अणुप्पविसंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू सचित्तं उच्छु भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू सचित्तं उच्छू विडंसइ, विडंसंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू सचित्तं उच्छूं वा, उच्छुभित्तियं वा उच्छु भित्तिं वा, उच्छुसालगं वा, उच्छुडालगं वा, उच्छुचोयगं वा भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू सचित्तं उच्छुं वा, उच्छुपेसियं, उच्छु भित्तिं वा,

अर्थ

जो साधु साध्वी जिस स्थान दंपती (स्त्री भरतार) शयन करते हों ऐसे शयन स्थान में प्रवेश करे प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु पानी का घर (पेंडे) में प्रवेश करे, प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु अग्नि का घर (रसोडा तथा भट्टी आदि के स्थान) में प्रवेश करे, करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु सचित्त (जीव सहित गांठवाला) इक्षु (सांठा) भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु सचित्त इक्षु चूंसे, चूंसते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु सचित्त इक्षु, इक्षु की पेली, इक्षु का खण्ड, छोता-छाल, छोला हुआ टुकडा भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो

उच्छुसालगं वा, उच्छुडालगं वा, उच्छुचोयगं वा, विडंसइ, विडंसंतं वा, साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइठियं उच्छुभुंजइ भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइठियं उच्छु विडंसइ विडंसंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू सचित्त पइठियं उच्छुं वा, जाव उच्छु चोयगं वा, भुंजइ, भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइठियं उच्छुं वा, जाव उच्छुचोयगं वा, विडंसइ, विडंसंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू अरण्णयाणं, वणयाणं अडवीजत्ता संपट्ठियाणं असणं वा, ४ पडिग्गाहइ पडिग्गाहंतं वा, साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू

अर्थ

साधु सचित्त इक्षु, इक्षु पर्वी, टकडा, छोता, छोला हुवा टुकडा चूंसे, चूंसते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु साधु सचित्त पृथ्वी आदि पर स्थापन किया हो उसे भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु सचित्त वस्तु पर स्थापन किया इक्षु चूंसे चूंसते को अच्छा जाने ॥९॥ जो साधु सचित्त प्रतिष्ठ इक्षु, इक्षु पर्वी, इक्षु खण्ड, इक्षु छाल, इक्षु का छोला टुकडा भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु सचित्त प्रतिष्ठ इक्षु पर्वी खण्ड छाल टुकडा चूंसे चूंसते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु अटवी अरण्य में विहार करने अपने साथ में रहे हुवे मनुष्यों के पास से तथा कठियारे आदि वन से उपजीविका करने वाले मनुष्यों के पास से आहार आदि ग्रहण करे ग्रहण करतेको अच्छा जाने *॥१२॥ जो साधु बूसी हैं

* उनोने अपने काम में आते जितना ही रखा हो वह कमी होने से नवा आरंभ हो फलादि की चाव हो उन्हे अटवी उल्लंघन करना मुशल हो वगैरा दोषोत्पन्न होवे.

मूल

वुसीराबइ अवुसराइयं वंदइ, वदंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू अवूसराइयं वूसराइयं पओगणओ वूसराइयं वदइ, वदंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू वुसराइय पओगणओ अवुसराइयंगणं संकम्मइ, संकमंतं वा साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खु वूग्गह अवुसराइयंगणं संकम्मइ, संकमंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खु वुग्गह व० व कत्ताणं असणं वा ४ देयइ देयंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खु वुग्गह व० व कत्ताणं असणं वा ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू कत्ताणंस्स असणं वा ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू वुग्गह व कत्ताणं वत्थं वा, पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू वुग्गहवकत्ताणंस्स वत्थं वा पाडिग्गहं वा कंबलं वा

अ.४

अर्थात् शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र के धारक दमितेन्द्रिय जैन दीपक हैं उन को अवूसी कहे, वह दुराचारी है ॥ १३ ॥ जो साधु अवूसी ज्ञानादि के विराधक विषय लम्पट हैं उन वगैरा निन्दा करे करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु वूसीगण उत्तम सम्प्रदाय को छोडकर अवूसी को वूसी अच्छे कहे कहते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु क्लेश-झगडा कर सम्प्रदाय से दोषितों की सम्प्रदाय में जावे, जाते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु क्लेश कर निकल गया हो उसे जो साधु अशनादि चारों आहार देवे, देते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु क्लेश कर सम्प्रदाय से निकले का आहार पानी ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु क्लेश कर सम्प्रदाय से निकले साधु को वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण देवे, देते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो

सूत्र

पायपुच्छणं वा, पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू वुग्गहव-
कत्ताणं वसहं देयइ, देयंतं वा साइजइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू वुग्गहव कंत्ताणं
वसहं पविसइ, पविसंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू वुग्गहव कत्ताणं
सज्झायं देयइ देयंतं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खु वुग्गहवकत्ताणंस्स सज्झायं पडिच्छइ,
पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू अडविंहं अणेगाह गमाणिजंसंती
लाटविहाराए संथरमाणे जणवएसु विहार वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं

अर्थ

साधु क्लेश कर निकल गया हो उस के वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा
जाने ॥१९॥ जो साधु क्लेश कर सम्प्रदाय से निकल कर आया हो उसे वस्ती (रहने को स्थानक) देवे.
देने को अच्छा जाने॥२०॥जो साधु क्लेश कर सम्प्रदाय से निकल कर अन्य स्थान रहता हो उस के मकान
में प्रवेश करे, प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु क्लेश कर निकले साधु को शास्त्र पढावे.
पढाते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु क्लेश कर निकले साधु के पास शास्त्र पढे. पढते को अच्छा
जाने ॥ २३ ॥ जो साधु अन्य विचरने के लिये ग्रामों होते, आहार वस्त्र पात्र शय्यादि का सुख से संयोग
मिलते, सुख से संयम पलते भी बहुत दिनों में उल्लंघन हो ऐसी विषम अटवी अरण्य में प्रवेश करने की इच्छा करे

मूल

वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू विरूवरूवाइं देसुयायं आयतणाइं अणारियाइं मिलखाइं पच्चंतियाइ संति लाटविहाराए संथरमाणेसु जणवएसु विहार वडियाए अभिसधारेइ, अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू दुगंछियं कुलेसु असणं वा ४ पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू दुगंछियं कुलेसु वत्थं वा पायंवा कंबलं वा पायपुच्छणं वा पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू दुगुच्छियं कुलेसु वसहिं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ

अर्थ

इच्छा करते को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु उक्त प्रकार सुख से संयम पाले ऐसे देश विचरने को होते भी विविध प्रकार के जो अनार्य मनुष्यों के रहने के देश हैं जहां हिंसादि कर्म बन्ध के कारण बहुत होते हैं जहां चोरी आदि अनार्य कर्म के करने वाले बहुत रहते हैं. जहां मलेछ-भिल्लादि लोगों रहते हैं. ऐसे देशों में विचारने का विचार करे, विचार करते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ जो साधु दुगंछनीक कुल-कलाल खटीक मलेच्छ भील्लादि के वहां का अशनादि चारों आहार ग्रहण करे. ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥२६॥ जो साधु दुगुंछनीक कुल का वस्त्र पात्र कम्बल रजो हरण ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु दुगंछनीक कुल की वस्ती (शय्या-स्थानक) ग्रहण करे,

॥ २८ ॥ जे भिक्खू दुगुंछियं कुलेसु सज्झायं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू दुगुंछियं कुलेसु सज्झायं उद्दिसिता उद्दिसंतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥ जे भिक्खू दुगुंछिए कुलेसु सज्झायं समुद्देसेइ, समुद्दिसंतं वा साइज्जइ ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू दुगुंछियं कुलेसु सज्झायं अणुजाइ, अणुजाइंतं वा साइज्जइ ॥ ३२ ॥ जे भिक्खू दुगुंछियं कुलेसु वायइ, वायंतं वा साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खू दुगुंछियं कुलेसु सज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू दुगुंछियं कुलेसु सज्झायं परियट्टइ, परियट्टंतं वा साइज्जइ

अर्थ

ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ जो साधु दुगंछनीक कुल [घर) में शास्त्र पढे, पढते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो साधु दुगंछनीक कुल वाले को शास्त्र पढावे, पढाते को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ जो साधु दुगंछनीक कुल वाले को विशेष शास्त्र पढावे, पढाते को अच्छा जाने ॥ ३१ ॥ जो साधु दुगंछनीक कुल वाले को शास्त्र पढाने की प्रशंसे, प्रशंसने को अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ जो साधु दुगुंछनीक कुल वाले को शास्त्र का, अर्थ पढावे, अर्थ पढाने को अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु दुगुंछनीक कुल वाले से शास्त्र पढे, पढते को अच्छा जाने ॥ ३४ ॥ जो साधु दुगुंछनीक कुल में शास्त्र की परि पट्टना [फिराना]

॥ ३५ ॥ जे भिक्खू असणं वा ४ पुढविए णिक्खिवेइ, णिक्खिवंतं वा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू असणं वा ४ संथारए निक्खिवेइ, निक्खिवंतं वा साइज्जइ ॥ ३७ ॥ जे भिक्खू असणं वा ४ वेहासे णिक्खिवेइ णिक्खिवंतं वा साइज्जइ ॥३८॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सद्धिं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥३९॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सद्धिं आवेढिय परिवेढिय भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू आयरिए उवज्झायाणं सेज्जा संथारयं

करे, करते को अच्छा जाने * ॥ ३५ ॥ जो साधु अशनादि चारों आहार पृथ्वी—जमीन पर रखे रखते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ जो साधु अशनादि चारों आहार बिछौने पर रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु अशनादि चारों आहार अधर स्थापन पर रखे अर्थात् खींच कर खूंटी आदि को लटकावे इत्यादि, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥३८॥ जो साधु अन्य तीर्थिक तापसादि के साथ व गृहस्थ-श्रावकादि के साथ-भेले बैठ कर अशनादि चारों आहार भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥३९॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थों से चारों तरफ घेराया हुवा उन के मध्य में बैठ कर आहार आदिक भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ जो साधु आचार्य उपाध्याय आदि बडे

* दुगुंछनीक कुल के परिचय से धर्म की लघुता होवे, अप्रतीत उत्पन्न होवे, निन्दा होवे, इत्यादि दोष लगते हैं.

सूत्र

थाएणं संघट्टेत्ता, हत्थेणं अणुवाव धारेमाणे गच्छइ, गच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू पमाणइरित्त वा गणाणाइं रत्तिं वा उवहिं धारेइ, धारंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू अणंतरहियाए पुढवीए उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू ससरक्खाए पुढवीए उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू ससणिद्धाए पुढवीए उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४५ ॥ जे भिक्खू सचित्तमंताए सिलाए,

अर्थ

साधु के बिछौने आदि उपकरण को पांव लग जावे, तो उस को हाथ कर संभारे बिना-खमावे बिना, क्षमाये विना आगे चला जावे, चले जाते को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु शास्त्र के प्रमाण से अधिक प्रमाण वाले तथा कल्पद्रादि के मर्यादा से अधिक गिनती वाले उपकरण (वस्त्र पात्रादि उपधिक और पट पाटलादि उपग्राहिक उपधी) रखे रखने को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु सचित्त पृथ्वीकाय के नजदीक बडीनीत लघुनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ जो साधु सचित्त वस्तु से भरे हुवे स्थान में बडीनीत लघुनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ जो साधु स्निग्ध चिकनी पृथ्वी पर बडीनीत लघुनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु

सुत्त

चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुएजीव पइट्ठिए स अंडे, स पाणे स बीए, स हरी, स ओसे सउत्तिंग, सपणग-दग-मट्टी-मकडा-संताणए-उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥४६॥ जे भिक्खू थुणंसि वा, गिहलूयंसि वा, उसकालंसि वा, कामजलंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू कुड्डयंसि वा, भित्तिंसि वा, सेलंसि वा, लेलुंसि वा, अंतरिक्खजायंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू खंधंसि वा, थंभंसि वा, दुबद्धे, दुनिक्खित्ते चलाचलंठाणं उच्चार पासवणं

अर्थ

सचित्त-शिला-कंकर, मकरी आदि के जाले, जीवों से भरा लक्कड़, चींटी आदि के अण्डे सहित, बेन्द्रि आदि प्राणि सहित, धान्यादि बीज सहित, ओस के पानी वाले, चींटी के नगरे वाले, फूलन वाले, पानी वाले, मट्टी वाले, करोलीये वाले, इत्यादि सजीव स्थान पर बड़ीनीत लघुनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ४६ ॥ जो साधु घर की देहली में, घर के द्वार में, ऊखलादि स्थान में, स्नान करने के स्थान में, लोगों के खड़े रहन के स्थान में, शयन करने के स्थान में, बैठने के स्थान में, पठन करने के स्थान में, ज्ञानाभ्यास के स्थान में, बड़ीनीत लघुनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ४७ ॥ जो साधु तट्टा पर, भीत पर, शिला पर, पाषन पर, आकाशिक स्थान पर बड़ीनीत लघुनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ४८ ॥ जो साधु ईंटो लकड़ी आदि के ढग पर, स्तंभ पर, इत्यादि जो

सूत्र

परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४९ ॥ जे भिक्खू खंधंसि वा, थंभंसि वा, मचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरंसि वा, अंतरिक्ख जायंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउमासियं परिहारठाणं उग्घाइयं ॥ इति निसीहज्झयणस्स सोलसम उद्देशो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ * * *

अर्थ

अच्छी तरह से रस्सी आदि कर बन्धे न हो. जो बराबर जमाये नहीं. जो चलविचल-डगमग करते हों ऐसे स्थान में लघुनीत बडीनीत परिठावे परिठाते को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु ईंटों आदि के ढग पर, खंभों पर, मचानों पर, प्रमादों पर, हवा खाने के घरों पर. और भी इस प्रकार के जो अन्तरिक्ष-आकाशिक स्थान हैं वहां बडीनीत लघुनीत परीठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ५० ॥ उक्त ५० दोषों में का किसी भी दोष के सेवन करने वाले को लघु चौमासिक प्रायश्चित्त आता है. जो उक्त दोष परवशपन बिना उपयोग लगे तो जघन्य ४ आंबिल, मध्यम ६० नीवी, उत्कृष्ट १०८ उपवास जो आतुरता से उपयोग सहित लगावे तो जगन्य ४ उपवास मध्यम ६ बेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में चार विगय के त्याग और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ बेले, मध्यम ४ तेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास पारनेमें आयंबिल॥ इति निसीथ सूत्र का सोलवा उद्देशा संमाप्तम् ॥१६॥

॥ सत्तरवा-उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू कोऊहल्लवडियाए अण्णयरं तसपाणजाति तणपासएण वा, जाव सुत्तपासएण वा, बंधति बंधंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू कोऊहल्ल वडियाए बंधल्लयं वा, मुयति मुयंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू कोऊहल्ल वडियाए तणमालियं वा जाव हरियमालियं वा, करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ एवं धरेति धरंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ एवं परिभुंजति परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ एवं पिणद्धइ पिणद्धंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू कोऊहल्ल वडियाए अयलोहाणि वा जाव

अर्थ

जो साधु कितुहल करने के लिये अन्य किसी भी प्रकार के बेन्द्रियादि त्रस प्राणि जीव को तृण की पास कर के यावत् सूत की पास कर के बंधे बंधते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु कितुहल के लिये बंधे त्रस प्राणि को छोडे छोडते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु कितुहल के लिये तृण की विचित्र प्रकार के घारा की यावत् हरितकाय की माला बनावे बनाते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु उक्त प्रकार की माला रखे, रखने को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु उक्त प्रकार की माला भोगवे भोगवते को अच्छा ॥ ५ ॥ जो साधु उक्त प्रकार की माला पहने, पहनते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥

सूत्र

सुवण्णलोहाणि वा करेति, करंतं वा साइज्जइ ॥ ७ ॥ एवं धरेति धरंतं वा साइज्जइ ॥८॥ एवं परिभुंजति परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥९॥ जे भिक्खू कोऊहल्ल वडियाए हाराणि वा, जाव सुवण्णसुत्ताणि वा करेति करंतं वा साइज्जइ ॥१०॥ एवं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥११॥ एवं परिभुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू कोऊहल्ल वडियाए आइणाणि वा जाव आभराणी वा विचित्ताणि वा करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥१३॥ एवं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ एवं परिभुंजइ परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥ १५ ॥

अर्थ

जो साधु कितुहल के लिये लोह के यावत् सुवर्ण सूत के खिलोने [चित्रों] बनावे बनाते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ उक्त प्रकार के खिलोने रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ उक्त प्रकार के खिलोने भोगवे (उन से खेले) भोगवते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु कितुहल के लिये हार यावत् सोने का कंदोरा बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ उक्त प्रकार के हार धारन करे धारन करते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ उक्त हार भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु कितुहल के लिये अजनक चर्म के यावत् विचित्र प्रकार के आभरण भूषण बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ उक्त भूषण रखे रखते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ उक्त भूषण भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥

सूत्र

जे भिक्खू णिग्गंथे निग्गंथस्सपाए अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आमज्जेज्ज वा पामज्जेज्ज वा, आमज्जं तं वा पामज्जं तं वा साइज्जइ, एवं तत्तिय उद्देसगा गमओ णेयव्वो जाव जे भिक्खू निग्गंथे निग्गंथस्स गामाणुगाम दूइज्जमाणे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सीसदुवारियं करेति करंतं वा साइज्जइ ॥ ७० ॥ जे भिक्खु णिग्गंथे निग्गंथीएपाए अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएणवा आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्जवा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा, साइज्जइ एवं पढमिल्लगमम्मं सरिस णेयव्वं जाव णिग्गंथी निग्गंथीए गामाणुगाम दूइज्जमाणी अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा, सीसदुवारियं करेंति,

अर्थ

जो साधु निर्ग्रन्थ अन्य किसी निर्ग्रन्थ के पांव अन्य तीर्थिक के पास व गृहस्थ के पास प्रमार्जावे पूंजते को अच्छा जाने. यों जिस प्रकार तीसरे उद्देश में १६ सूत्र से ७१ वे सूत्र तक ५९ गमे कहे हैं वे सब यहां कहना यावत् जो साधु निर्ग्रंथ को ग्रामानुग्राम विचरते हुए अन्य तीर्थिक व गृहस्थ के पास मस्तक ढकावे ढकाते को अच्छा जाने ॥ ७० ॥ जो साधु निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थीभी साध्वी के पांव अन्य तीर्थिक व गृहस्थी के पास पूंजावे यावत् पूंजते को अच्छा जाने. यों पीछे कहे सो सब ५९ गम्मे यहां भी कहना यावत् जो साधु निग्रन्थ निग्रन्थनी को ग्रामानुग्राम विचरते अन्य तीर्थिक व गृहस्थ के पास उन का मस्तक

सूत्र

करंतं वा, साइज्जइ ॥ १२५ ॥ जे भिक्खू निग्गंथे निग्गंथस्स सरिसगस्स संतेउवासे अंतेउवासं न देइ. न देयंतं वा साइज्जइ ॥ १२६ ॥ जे भिक्खूणि णिग्गंथी णिग्गंथीए सारिसयाए संतेउवासे णदेइ णदंतं वा साइज्जइ ॥ १२७ ॥ जे भिक्खू मालोहडं वा, असणं वा ४ दिज्जमाणं पडिगाहेति पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १२८ ॥ जे भिक्खू कोट्ठउत्तं असणंवा ४ उकुडियाणिउ उकुज्जियाणि कुज्जियः दिज्जमाणं पडिग्गहेति, पडिग्गहंतंवा साइज्जइ ॥ १२९ जे भिक्खू कोठ उत्तं असणंवा४ उकुज्जिय णिकुज्जिय

अर्थ

रुकावे, रुकाते को अच्छा जाने ॥ १२५ ॥ जो साधु निर्ग्रन्थ अपने सरीसे आचार वाले निग्रन्थ को अपने नेश्राय में उन के रहने जैसा उपाश्रय है, वह उन को नहीं देवे, नहीं देने वाले को अच्छा जाने ॥ १२६ ॥ जो साध्वी अपने जैसे आचार वाली विद्या ज्ञान संयम साध्वी को अपने नेश्राय के उपाश्रय में रहने की जगह होवे वह उन्हे नहीं दे, नहीं देती को अच्छी जाने ॥ १२७ ॥ जो साधु ऊंच स्थान से कोइ अशनादि चारो आहार लाकर उतार कर देवे, उसे ग्रहण करे अथवा ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १२८ ॥ जो साधु ऊंडी कोठी आदि नीचे स्थान में अशनादि चारों आहार पडे हैं उन्हे निकालते बहुत कठिणता से ऊंचा नीचा हो निकाल कर देवे, उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १२९ ॥ जो साधु कोठा बंदा मेध आदि विषम स्थान कि जहां प्रवेश करते निकलते ऊंचा

सूत्र

दिज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १३० ॥ जे भिक्खू मट्टिउलित्तं असणं वा, ४ उब्भिदिय णिब्भिदिय दिज्जमाणं पडिग्गहेति, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १३१ ॥ जे भिक्खू असणं वा ४ अण्णयरं वा पुढवि पतिट्ठियं पाडिग्गाहेति, पाडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ १३२ ॥ एवं आउपत्तिट्ठियं ॥ १३३ ॥ एवं तेउपतिट्ठियं ॥ १३४ ॥ एवं वणस्सइ कायं पतिट्ठियं ॥ १३५ ॥ जे भिक्खू अच्चुसिणं वा, असणं वा, ४ मुहेण वा सुप्पेण वा, विहुणेण वा, तालियंट्टण वा, पत्तेण वा, पत्तभंगेण वा, सहाए वा, साहाभंगेण वा, इयादि साहट्टु दिज्जमाणं

अर्थ

नीच होना पडे ऐसी कठिनता से अशनादि चारों आहार लाकर देवे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १३० ॥ जो साधु मट्टी आदि लेपकर जिस की मुद्राकी हो लीपं छाब कर रखा हो, ऐसा आहार आदि निकाल कर देवे, वह लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥१३१॥ जो साधु अशनादि चारों आहार किसी भी प्रकार की सचित्त पृथ्वी पर रखा हो उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १३२ ॥ ऐसे ही पानी पर रखा, अग्नि पर रखा, वनस्पति पर रखा हुआ आहार पानादि ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १३५ ॥ जो साधु को अत्यन्त ऊष्ण गरमागरम अशनादि चारों आहार को मुख की फूंक कर, सूंप कर, ताड के पंखे कर, पत्र कर, पत्र के टुकडे कर, शाखा कर,

पडिग्गहेति, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १३६ ॥ जे भिक्खू असणं वा ४ उसीणोसिणं पडिग्गहेति, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ १३७॥ जे भिक्खू उस्सेयमं वा, संसेयमं वा, चाउलोदगं वा, बोरोदग वा, तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, भूसोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, अंबकंजितं वा, सुद्धवियडं वा, अहुणोधोयं अणांत्रिलं अपरिणतं अविधत्थं अवक्कंतं जाव पडिग्गाहेति, पडिग्गहंता साइज्जइ ॥ १३८ ॥ जे भिक्खू अप्पणो आयारियत्ताए लक्खाणाइं वागरेइ वागरंतं

अर्थ

शाखा [डाली] कर इत्यादि से हवा प्रयुंज कर उसे शीतल कर देवे, उसे ग्रहण करे, ऐसे ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १३६ ॥ जो साधु अशनादि चारों आहार गरमागरम ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने+ ॥ १३७ ॥ जो साधु ओसामन का पानी, कठोटी आदि का धोवण, चांवल का धोवन, गुड आदि के वासन का धोवन, तिलों का धोवन, तुसों का धोवन, जवों का धोवन, भूसा का धोवन, लोह गरम कर बुझाया वह पानी, छाछकी आछ, कांजी आम्र की, शुद्ध अचित पानी तत्काल का (जिसे बनाये एक मुहूर्त प्रमाने काल न हुवा हो) उस का स्वाद न पलटा हो, उस में अन्य शस्त्र नहीं परिणमा हो, जीवों के प्रदेश रहित नहीं हुवा हो, जीव से अलग न हुवा हो उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥१३८॥ जो साधु अपने (गुरु) आचार्य के अपलक्षण हो उसे किसी के आगे

+ गरमागरम आहार की वाफ से अकर्षा कर त्रस जीव उस में पडकर घात प्राप्त होने का संभव है.

सूत्र

वा साइज्जइ ॥ १३९ ॥ जे भिक्खू गाएज्ज वा, वाएज्ज वा, णच्चेज्ज वा, अभिणच्चेज्ज वा, हयहिसियं वा, हत्थिगुलगुलायं वा, तं उक्किट्ठं सीहणायं वा करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ १४० ॥ जे भिक्खू भेरीसद्दाणि वा, पडहसद्दाणि वा, मुरवसद्दाणि वा, मुइंगसद्दाणि वा, एवं नंदीसद्दाणि वा, झल्लरिसद्दाणि वा, वल्लरिस-डमरुय, मड्डुय धातु-पएसु-गोलिकसद्दाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि वा, सद्दाणि वा कण्णसोय पडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधरंतं वा साइज्जइ ॥ १४१ ॥ जे भिक्खू वीणासद्दाणि वा, विपंचि-तुणव-एवच्चीसय-वीणाइय-तुंबवीणा-संकोयसद्दाणि

अर्थ

प्रगट करे, प्रगट करते को अच्छा जाने ॥ १३९ ॥ जो साधु गीत गावे, वाजिंत्र वजावे, नृत्य करे [नाचे] थइ २ कूदे, घोडे के जैसा हंकार करे, हाथी जैसा गुलगुलाट करे. वैसे ही उत्कृष्ट सिंहनाद शब्द करे ऐसा करता हो उसे अच्छा जाने ॥ १४० ॥ जो साधु भेरी के शब्द, पडह के शब्द, मुख के शब्द, मृदंग का, नेरी का: झालर का, पल्लरी का, डिमरू का, मड्डुया का, सांक का, पेटा का, गोलिका का, और भी इए प्रकार अन्य शब्द कान से सुनने के लिये मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ १४१ ॥ जो साधु वीणा का शब्द, विपंची का शब्द, कुणाका शब्द, चवची का शब्द, तार की वीणा, तुम्बी

सूत्र

रुरुयसद्दाणि वा, ढंककुणसद्दाणि वा, अण्णयराणि वा, तहप्पगाराणि वा, तंताणि सद्दाणि वा कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ १४२ ॥ जे भिक्खू तालसद्दाणि वा, कंसालसद्दाणि वा, गोहिय-मकरीय-कछभि-समहंतिसिणालिय-सीयासद्दाणि वा, आवालीया सद्दाणि वा, अण्णयराणि वा, तहप्पगाराणि वा, सुसराणिवा सद्दाय कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेति, धारंतं वा, साइज्जइ ॥ १४३ ॥ जे भिक्खू संखसद्दाणि वा, वंसु-वेणु-खरमुही-पडिलि-सचेव सद्दाणि वा, जाव अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि वा, झुसिराणि वा, सद्दाणिवा कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेति

अर्थ

की वीणा, कोडालीं-सतार का शब्द, ढांक का शब्द, अन्य और भी इस ही प्रकार के तांत-तार के वादिंत्र के शब्द कान से सुनने का मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ १४२ जो साधु ताल का शब्द, कांस की ताल-कंसताल का शब्द, लितीका का शब्द, गोहीया-गोजिन्हा का शब्द, मकरी का शब्द, कछभीका शब्द, मारुती, सालकी, वालिका और भी इस प्रकार के टकोरा लगाकर वजाये जावे ऐसे वादिंत्र के शब्द कान से सुननेका मनमें धारे, धारतेको अच्छा जाने ॥१४३॥ जो साधु शंखका, वंशलीका, वीणा का, खर मुखी का, परिली का, इत्यादि मुख की हवा से बजने वाले पोले वादिंत्र का शब्द कान से

सूत्र

धारंतं वा साइज्जइ ॥ १४४ ॥ जे भिक्खू वप्पाणि वा फलिहाणि वा, जाव सरपंति-याणि वा, कण्णसोय वडियाए अभिसंधारे धारंतं वा, साइज्जइ ॥ १४५ ॥ जे भिक्खू कच्छाणि वा, गेहाणि वा जाव पव्वयदुग्गाणि वा कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ १४६ ॥ जे भिक्खू गामाणि वा, णगरा-णि वा, जाव सन्निवेसाणि वा, कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेइ, धारंतं वा साइज्जइ ॥ १४७ ॥ जे भिक्खू गाममहाणी वा, जाव सन्निवेस महाणी वा, कण्णसोय वडियाए जाव साइज्जइ ॥ १४८ ॥ जे भिक्खू गामवहाणि वा जाव सन्निवेस वहा-

अर्थ

सुनने का मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥१४४॥ जो साधु क्यारे का खाई का यावत् सरपंक्ति में से पानी की परनालादि धोंध पडता हो उसे सुनने का मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ १४५ ॥ जो साधु ककडि आदि के कच्छ का, एक जाति के वृक्ष का वायु आदि प्रसंग से शब्द होते हैं. उन को श्रवण करने की इच्छा करे, करते को आच्छा जाने ॥ १४६ ॥ जो साधु ग्राममे होता हुआ शब्द यावत् सन्नीवेश में होता शब्द सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १४७ ॥ जो साधु ग्राम में जल प्रलयादि प्रसंग से महा हानी होती हो उस का शब्द यावत् सन्नीवेश में महा हानी होती हो जिस का शब्द सुजने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १४८ ॥ जो साधु ग्राम में यावत्

सूत्र

णि वा, कण्णसोय वडियाए जाव साइज्जइ ॥१४९॥ जे भिक्खू गामदाहाणि वा जाव सन्निवेस दाहाणि वा, कण्णसोयवडियाए जाव साइज्जइ॥१५०॥जे भिक्खू आसकरणाणिवा जाव सुकरा णिवा कण्णसोय वडियाए जाव साइज्जइ॥१५१॥जेभिक्खू आघायाणे वा,कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेइ जाव साइज्जइ॥१५२॥जे भिक्खू आसजुद्धाणिवा जाव सुकर जुद्धाणि वा कण्णसोय वडिए जाव साइज्जइ ॥१५३॥ जे भिक्खू अभिसेयठाणाणि वा जाव पडुप्पवायठाणाणिवा कण्णसोय वडियाए जाव साइज्जइ

अर्थ

सन्नीवेश में संग्रामादि प्रयोग से महा घात होती हो उस का शब्द सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १४९ ॥ जो साधु ग्राम में यावत् संनीवेश में अग्नि प्रकोप से दाहा उत्पन्न हुआ (अंगार लगी) उस से लोगों के शब्द होते हों उसे सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १५० ॥ जो साधु घोडे को क्रिडादि कलाभ्यास कराते जो शब्द होवे यावत् सुव्वार को कलाभ्यास कराते जो शब्द हों उन को सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १५१ ॥ जो साधु चोरादि जीवों के घात स्थान में होते शब्द सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १५२ ॥ जो साधु अश्व के युद्ध स्थान में होते शब्द यावत् सुव्वर के युद्ध स्थान में होते शब्द सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १५३ ॥ जो साधु राजादिक के अभिशेषोत्सव की वक्त होते हुवे शब्द कथादि की समाप्ति की वक्त होते शब्द, तोल माप के स्थान के शब्द, अनेक प्रकार के वादित्रों के शब्द, सुनने की इच्छा

सूत्र

॥ १५४ ॥ जे भिक्खू डमाणिवा जाव बोलाणिवा कण्णसाय वडियाए जाव साइज्जइ ॥ १५५ ॥ जे भिक्खू विरूवरूवेसु महुसव्वेसु जाव असणं वा ४ परिभायताणिवा परिभुंजता कण्णसोय वडियाए जाव साइज्जइ ॥ १५६ ॥ जे भिक्खू इहलोएसु वा सद्देसु जाव अज्झोववज्जवाणा साइज्जइ ॥ १५७ ॥ तं सेवमाणे

अर्थ

करे, करते को अच्छा जाने ॥ १५४ ॥ जो साधु बाल को से हुअे उपद्रव के शब्द यावत् बहुत मनुष्यो के बोलने से उत्पन्न हुअे शब्द सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १५५ ॥ जो साधु जगत् में होते हुअे अनेक प्रकार के उत्सव महोत्सव में स्त्री पुरुष युवा वृद्ध बाल अलंकृत हो गाते बजाते नाचते कूदते हंसते खेलते हों विस्तीर्ण अशनादि भोगवते हों उन का शब्द सुनने की इच्छा करे, ऐसी इच्छा करते को अच्छा जाने ॥ १५६ ॥ जो साधु इस लोक सम्बन्धी मनुष्य मनुष्यनी से उत्पन्न हुअे शब्द, परलोक के देवता तथा तिर्यंच से उत्पन्न हुअे शब्द उन में तथा प्रथम सुने शब्द पीछे से सुने शब्द प्रथम जाने शब्द नवे शब्द उन में सज्ज होवे रंजित होवे गृद्धित होवे, अन्य सज्ज होते को रंजित होते को गृद्धिवनते को अच्छा जाने, ॥ १५७ ॥ इन १५७ दोष स्थान में का किसी भी दोष स्थान सेवन करने वाले साधु को लघु चौमासिक प्राय-श्चित आता है ॥ उक्त दोष परवशपने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ आयंबिल, मध्यम ६० नीवी, उत्कृष्ट १०८ उपवास, आतुरता से उपयोग सहित लगे तो जघन्य ५

सूत्र

आवज्जइ चउमासियं परिहारठाणं उग्घातियं, इति निसिहज्झयणस्स सत्तरस्समं उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥

अर्थ

उपवास, मध्यम ६ बेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारने में चार विगय का त्याग और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ बेले, मध्यम ४ तेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में आयंबिल. इति निशीथ सूत्र का सतरवा उद्देशा संपूर्ण ॥ १७ ॥ ० ०

॥ अठारहवा—उद्देशा ॥

जे भिक्खू अणट्ठाए णावं दुरुहाति. दुरुहंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू णावं किणइ, किणावेइ, कियंसाहट्टु दिज्जमाणं दुरुहंति, दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू णावं पामिंचेइ, पामिच्चावेति, पामिच्चसाहट्टु दिज्जमाणं दुरुहाति, दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू णावं परियाट्टइ परियट्टावेइ परियाट्टिय साहट्टु दिज्जमाणं दुरुहात्ति दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू णावं अच्छिज्जं अणिसिट्टं अभिहडं साहट्टु दिज्जमाण दुरुहाति, दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू थला-

अर्थ

जो साधु विना कारण नाव में बैठे, बैठते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु नाव मूल्य लेवे, अन्य के पास मूल्य लेवावे, कोइ नाव मोल्य ले कर साधु को देवे. उस में बैठे, बैठते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु नाव उद्धारी लेवे, अन्य पास उद्धारी लेवावे, कोइ उद्धारी ले कर देवे उस में बैठे, बैठते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु नाव का बदला करे. बदला [पलटा] करावे, अन्य कोइ नावा बदल कर देता हो उस में बैठे. बैठते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु नाव बलात्कार से छीन कर लेवे, मालक की आज्ञा विना लेवे, सन्मुख लाकर दे उसे ग्रहण करे, उस में बैठे. बैठते को अच्छा जाने

सूत्र

ओ णावं जले उकसावेइ, उकसावंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू जलाओ णावं थले उकसावेइ, उकसावंतं वा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू पुण्णंणावं उस्सिंचइ, उस्सिचंतं वा साइज्जइ॥८॥जे भिक्खू सण्णंणावं उप्पिलावेति, उप्पिलावंतं वा साइज्जइ ॥९॥ जे भिक्खू पडिणाविियकट्टू णावाएदुरुहइ दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥१०॥जे भिक्खू उड्ढगामिणिवा णावं अहो गामिणीवा णावं दुरुहति, दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥११॥ जे भिक्खू जोयणवेला गामिणी वा अद्धजोयणावेला गामिणी वा णावं दुरुहती, दुरुहंतं

अर्थ

॥ ५ ॥ जो साधु स्थल (जमीन) पर पडी हुइ नाव को पानी में डलावे, डलाते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु जलाशय में रही नाव को स्थाल पर मंगावे. मंगाते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु नाव में पानी भराया हो उसे उलिचे, उलीचते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु कीचड में गडी हुई नाव को बाहिर निकलावे. निकालते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु किसी भी स्थान पडी हुई नाव को अपने इच्छित स्थान मंगा कर उस में बैठे, बैठते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु ऊर्ध्वगामिनी (श्रोत के सन्मुख चडती) नाव पर तथा अधोगामिनी नदी के प्रवाह की तरफ नीचे जाती नाव पर बैठे, बैठते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु एक योजन या आधा योजव तक जानेवाली

सूत्र

वा साइज्जक ॥ १२ ॥ जे भिक्खू णावं उक्कसावेति, उक्कासावंतं वा सातिज्जइ ॥ १३ ॥ जेभिक्खू णावं खेवावइ, खेवावंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू रज्जूणावं कढावेति कढावंतं वा साइज्जाति ॥ १५ ॥ जे भिक्खू णावं अवित्ताएवा पहिएणवा, दंडएणवा, वसेणवा, वलेणवा, बाहेइ, वाहंतं वा, साइज्जव ॥ १६ ॥ जे भिक्खू णावाओ उदगभायणेणवा, पडिग्गहेणवा, मत्तेणवा णावा उस्सिंचणवा उस्सिंचंति, उस्सिंचंतं वा साइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू णावं उत्तिंगेणवा उदगं आसममाणिं उवरुवरिं कज्जलवमाणिं पेहाए हत्थेणवा, पाएणवा

अर्थ

नाव में बैठे, बैठते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु पानी के अन्दर डूबती नाव को निकाले, निकालते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु नाव को चलावे चलाते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु नाव की रज्जु-डोर को खींच कर किनारे लावे लाते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु नाव को चलाने के उपकरणों जैसे चाटुवे लकड़ी बांस इत्यादि कर नाव को चलावे, चलाते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु नाव में पानी भराया उसे निकालने के भाजन से तथा अपने पात्रादि से उलिछे उलिछते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु नाव के छिद्र में से पानी भराता हो उसे देख कर उसे

असिपत्तेण वा, कुसुपत्तेण वा, मट्टियाएण वा, चेलेण वा, चेलकण्णेन वा, पडिपेहइ पडिपेहंतं वा, साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू णावाओ णावगयस्स असणं वा,४ पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू णावाओ जलगयस्स असणं वा ४ पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू णावाओ पंकगयस्स असणं वा ४ पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू णावाओ थलगयस्स असणं वा, ४ पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू जलाओ णावगयस्स असणं वा, ४ पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ

अर्थ

हाथ से पांव से किसी वृक्ष के पत्ते से, डाभ-घांसादि से, मट्टी से, वस्त्र से, वस्त्र खण्ड से रोके, रोकते को अच्छा जाने॥१८॥ अब नावमें आहार आदि ग्रहण करने के १६ भांगे कहते हैं-१ जो साधु नाव में रहा हुवा नावमें रहे दातारके पास से अशनादि चारों आहार ग्रहण करे करतेको अच्छा जाने(यह सब जगह कहना) ॥१९॥२ जो साधु नावमें रहा हुवा पानीमें रहे दातार से चारों आहार ग्रहण करे ॥२०॥ ३ जो साधु नावमें रहा हुवा कर्दम [कीचड] में रहे दातार के पास से आहार आदि ग्रहण करे ॥ २१ ॥ ४ जो साधु नाव में रहा हुवा पथवी पर रहा दातार के पास से अशनादि ग्रहण करे ॥ २२ ॥ ५ जो साधु पानी में

सूत्र

॥२३॥जे भिक्खू जलगओ जलगयस्स असणं वा, ४ पडिग्गहेइ,पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू जलगओ पंकगयस्स असणं वा, ४ पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू जलगओ थलगयस्स असणं वा ४ पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू पंकगओ णावगयस्स असणं वा ४ पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू पंकगओ पंकगयस्स असणं वा ४ पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २८ ॥ जे भिक्खू पंकगयाओ पंकेगयस्स असणं वा ४ पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥२९॥जे भिक्खू पंकगओ थलगयस्स असणं वा ४ पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥ जे भिक्खू

अर्थ

रह हुवा नाव में रहे दातार के पास अशनादि ग्रहण करे ॥ २३ ॥ ६ जो साधु पानी में रहा हुवा पानी में रहे दातार के पास से अशनादि ग्रहण करे ॥ २४ ॥ ७ जो साधु पानी में रहा हुवा कर्दममें रहे दातार के पास से अशनादि ग्रहण करे ॥ २५ ॥ ८ जो साधु पानी में रहा हुवा जमीन पर रहे दातार के पास से अशनादि ग्रहण करे ॥ २६ ॥ ९ जो साधु कर्दम में रहा हुवा नावारूढ दातार के पास से अशनादि ग्रहण करे ॥ २७ ॥ १० जो साधु कर्दम में रहा हुवा पानी में रहे दातार के पास से अशनादि ग्रहण करे ॥ २८ ॥ ११ जो साधु कर्दम में रहा हुवा. कर्दम में रहे दातार के पास से अशनादि ग्रहण करे ॥ २९ ॥ १२ जो साधु कर्दम में रहा हुवा जमीनपर रहे दातार के पास से अशनादि ग्रहण करे

सूत्र

भंग	साधु	दातार
१	नाव	नाव
२	नाव	जल
३	नाव	पंक
४	नाव	थल
५	जल	नाव
६	जल	जल
७	जल	पंक
८	जल	थल
९	पंक	नाव
१०	पंक	जल
११	पंक	पंक
१२	पंक	थल
१३	थल	नाव
१४	थल	जल
१५	थल	पंक
१६	थल	थल

थलगओ णावगयस्स असणंवा ४ पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥३१॥ जे भिक्खू थलगओ जलगयस्स असणं वा ४ पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥३२॥ जे भिक्खू थलगओ पंकगयस्स असणं वा ४ पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥३३॥ जे भिक्खू थलगओ थलगयस्स असणं वा ४ पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू वत्थं किण्णइ किण्णावेइ किय साहट्टु दिज्जमाणं

अर्थ

॥ ३० ॥ १३ जो साधु जमीन पर रहा हुवा नावारूढ दातार से अशनादि ग्रहण करे ॥ ३१ ॥ १४ जो साधु जमीन पर रहा हुवा पानी में रहे दातार के पास अशनादि ग्रहण करे ॥ ३२ ॥ जो साधु जमीन पर रहा हुवा कर्दम में रहे दातार के पास से आहार आदि ग्रहण करे ॥ ३३ ॥ और १६ जो साधु जमीन पर रहा हुवा जलशय संस्कृत जमीन पर रहे दातार के पास अशनादि चारों आहार ग्रहण करे करतेको अच्छा जाने ॥३४॥ अब वस्त्र आश्रिय कहते हैं—जो साधु वस्त्र-मोल लेवे, मोल लेवावे, कोइ मोल लेकर वस्त्र दे उसे

पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा॥३५॥जे भिक्खू वत्थं पामिच्चइ पामिच्चावेइ, पामिच्चयसाहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू वत्थं परियट्टइ, परियट्टावेइ, पारियट्टाय साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥३७॥ जे भिक्खू वत्थं अच्छिज्जं, अणिसिट्ठं, अभिहडं, दिज्जमाणं पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइजइ ॥ ३८ ॥ जे भिक्खू अइरेग वत्थं गणिउद्देसिय, गणिसमुद्देसिय, गणिअणापुच्छियं, गणिअण्णमण्णस्स वियग्इ, वियरंतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे

ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ३५ ॥ जो साधु वस्त्र उद्धारा ग्रहण करे, उद्धारा ग्रहण करावे, उद्धारा ग्रहण कर दे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ जो साधु वस्त्र का वदला गृहस्थ से करे, वदला करावे, वदला कर वस्त्र दे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु वस्त्र बलाकार कर-छीन कर लेवे, मालिक की आज्ञा विना लेवें, साधु के सन्मुख लाकर दे उसे ग्रहण करे ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ जो साधु मर्यादा उपरांत वस्त्र की प्राप्ति हो उस को अपनी सम्पदाय के आचार्य के लिये तथा अन्य साधु के लिये ग्रहण कर वह वस्त्र आचार्यादि आगेवानी हों उन को विना पूछे, उन को विना आमंत्रे उन की आज्ञा ग्रहण किये विना

सूत्र

भिक्खू अइरेग वत्थगं खुड्डगस्स वा खुडियाए वा, थेरगस्स वा, थिरियाए वा, अहत्थ छिन्नस्स, अपाय छिन्नस्स, अकण्णछिन्नस्स, अणासछिन्नस्स अहोठि छिन्नस्स सकस्स देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू अइरेग वत्थंग-खुडियाए वा, थेरगस्स वा, थिरियाए वा, हत्थछिण्णस्स जाव असक्कस्स ण देयइ, ण देयंतं वा, साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू वत्थं-अणलं, अथिरं, अधुवं, अधराणिज्जं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू वत्थ-अलं, थीरं, धूवं धरणिज्जं, ण धरेइ,

अर्थ

अपनी इच्छा में आवे उन को देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३९ ॥ जो साधु के पास अधिक वस्त्र हो वह छोटी उम्बर वाले साधु साध्वी को स्थविर साधु साध्वीकों कि जिन के हाथ पांव कान नाक होष्ठादि का छेदन नहीं हुवा है अर्थात् सब अंगोपांग संपूर्ण सबल हैं वे याचनादि करके वस्त्र प्राप्त करने समर्थ हैं उन को देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ जो साधु के पास अधिक वस्त्र हो उसे छोटी उम्मर वाले साधु साध्वी तथा स्थविर स्थविरी वृद्ध वय वाले साधु साध्वी जिन के हाथ पांव कान नाक होष्ठादि का छेदन हुवा है अर्थात् वे वस्त्र प्राप्त करने समर्थ नहीं हैं उन को नहीं देवे, नहीं देते को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु वस्त्र फटा तुटा पुराना टिके नहीं जैसा गला हुवा पास में रखने अयोग्य, अशोभनीक है, ऐसे वस्त्र को पास रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु के पास वस्त्र अखण्ड मजबूत बहुत काल चल

सूत्र
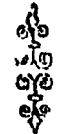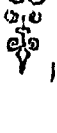
ण धरंतं वा साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू वण्णमंत वत्थं विवण्णं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू विवण्णं वत्थं वण्णमंत करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४५ ॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु-तेल्लेण वा, घएण वा, वसिएण वा, वण्णवण्णीएण वा, मक्खेज्ज वा भिलंगेज्ज वा, मक्खंतं वा भिलंगंतं वा साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु लोद्धेण वा कक्केण वा, ण्हाणेण वा, चुण्णेण वा वण्णेण वा उवट्टेज्ज वा, आव उवट्टंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु सिउदग वियडेण वा, उसिणोदग

अर्थ

ऐसा पास में रखने योग्य. शरीर पर धारन करने योग्य हो उसे रखे नहीं, नहीं रखता हो. फाड तोड फेंकता हो उसे अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ जो साधु शुभ्र वर्ण वाले अच्छे वस्त्र को विवर्ण-खराब वर्ण वाला बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ जो साधु खराब वर्ण वाले वस्त्र को अच्छा बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे यह नवा वस्त्र प्राप्त हुवा है इसे तेल घृतादि लगावु. ऐसा विचार करने वाले को अच्छा जाने ॥ ४६ ॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे नवा वस्त्र प्राप्त हुवा है इसे लोद्र कर्कादि रंग लगावु. ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ४७ ॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे नवा वस्त्र प्राप्त हुवा है इसे अचित्त धोवन पानी गरम पानी से धोवूं

सूत्र

वियडेण वा, जाव उच्छोलंतं वा पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे तिकट्टु बहु दिवसीएण वा तेलेणवा,जाव भिलंगंतं वा साइज्जइ ॥४९॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टू बहुदिवसीएण वा लोद्धेणवा जाव उवटंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्खू णवेइमे वत्थै लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसीएणवा सीउदग वियडेणवा जाव पधोवं तं वा साइज्जइ ॥ ५१ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु दुब्भिगंद्धे करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ५२ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु सुब्भिगंधं करेइ, करंतं वा साइज्जर ॥ ५३ ॥ जे भिक्खू सुब्भि

अर्थ

ऐसे विचार करने को अच्छा जाने ॥ ४८ ॥ जो साध नवा वस्त्र प्राप्त कर ऐसा विचार करे कि मैं इसे बहुत दिन रख कर तथा तीन पसली उपरान्त तेल घृतादि लगावूं. ऐसे विचारक को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे नवा वस्त्र प्राप्त हुवा है, इसे बहुत दिन. रख तथा मर्यादा उपरांत लोद्र कर्कादि लगावु. ऐसे विचारक को अच्छा जाने ॥५०॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे नवा वस्त्र प्राप्त हुवा है इसे बहुत दिन से अथवा विना कारण मर्याद उपरांत अचित्त धोवन तथा गरम पानी कर धोवु ऐसे विचारवाले को अच्छा जाने ॥ ५१ ॥ जो साधु को सुगन्धी वस्त्र प्राप्त हुवा है उसे दुर्गन्धी बनावे बनाते को अच्छा जाने ॥ ५२ ॥ जो साधु को दुर्गन्धी वस्त्र प्राप्त हुवा उसे सुगन्धी बनावे बनाते को अच्छा जाने ॥ ५३ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे

सूत्र

गंधे वत्थे लद्धेत्तिकट्टु तेलेणवा जाव भिलंइंतं वा साइज्जइ ॥ ५४ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे में वत्थं लद्धे त्तिकट्टु लोद्धेणवा जाव उवट्टंतं वा साइज्जइ ॥ ५५ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंध वत्थे लद्धेत्तिकट्टु सीउदग वियडेणवा जाव पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ ५६ ॥ जे भिक्खू सुभिगंधे मे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसीएणं तेलेणवा जाव साइज्जइ ॥ ५७ जे भिक्खू सूब्भिगंध में वत्थे लद्धे त्तिकट्टु बहु दिवसिएण लोद्धेणवा जाव उवट्टंतं वा साइज्जइ ॥ ५८ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे में वत्थे लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसिएणवा सीउदगं वियडेणवा जाव साइज्जइ ॥ ५९ ॥

अर्थ

तेल घृतादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ५४ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे लोद्रादि से रंगे, रंगते को अच्छा जाने ॥ ५५ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे अचित्त पानी से धोवे धोते को अच्छा जाने ॥ ५६ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत, तेल घृतादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ५७ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत लोद्रकादि कर रंगे, रंगते को अच्छा जाने ॥ ५८ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत अचित्त पानी से धोवे, धोते को अच्छा जाने॥५९॥

सूत्र

जे भिक्खू दुब्भिगंधे में वत्थे लद्धे त्तिकट्टु तेलेणवा जाव भिलंगंतं वा साइज्जइ ॥ ६० ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे में वत्थे लद्धे त्तिकट्टु लोद्धेणवा जाव उवट्टतं वा साइज्जइ ॥ ६१ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे मे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु सीउदगं वियडेणवा जाव पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ ६२ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे मे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु तेलेणवा जाव भिलंगजवा साइज्जइ ॥ ६३ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगधमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसिएण लोद्धेणवा जाव उवट्टंतं वा साइज्जइ ॥ ६४ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधेमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसिएणं सीउदगं वियडेणवा जाव पधोवंतं वा

अर्थ

जो साधु दुर्गन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे तेल घृतादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने॥ ६० ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे लोद्रादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ६१ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे अचित्त पानी कर धोवे धोते को अच्छा जाने ॥ ६२ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत तेलादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने*॥ ६३ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत लोद्रादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ६४ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन वक्त उपरांत पानी कर धोवे, धोते को अच्छा

* वस्त्र को युकादि की उत्पत्ति से बचाने तथा आभ मिटाने तेलादि लगाने का कहा देखता है.

सूत्र

साइज्जइ ॥ ६५ ॥ जेभिक्खू अणन्तरहियाए पुढवीए वत्थं अयावेजवा पयावेजवा साइज्जइ ॥ ६६ ॥ जे भिक्खू ससरक्खाए पुढवीए वत्थं जाव पयावंतं वा साइज्जइ ॥ ६७ ॥ जे भिक्खू ससणिद्धाए पुढवीए वत्थं आयावेज्ज वा जाव साइज्जइ ॥ ६८ ॥ जे भिक्खू चित्तमंताए सिलाए चित्तमंताए लेलुए कोलावासंसि वा दारुएइट्ठ जीव स अंड स पाणे, स वीए, स हरीए, स उस्से, सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणए वत्थं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा आयावंतं वा पयावंतं वा साइज्जइ ॥ ६९ ॥ जे भिक्खू थूणंसि वा गिहेदेलुयंसि वा आयावेज्ज वा जाव साइज्जइ

अर्थ

जाने ॥ ६५ ॥ जो साधु सचित्त पृथ्वी काया से अन्तर रहित वस्त्र को आताप में देवे आताप में दे, देते को अच्छा जाने ॥ ६६ ॥ जो साधु सचित्त रज से भरी पृथ्वी पर वस्त्र आताप में दे यावत् अच्छा जाने ॥ ६७ ॥ जो साधु सचित्त पानी से भींजी पृथ्वी पर वस्त्र आताप में दे, देते को अच्छा जाने ॥ ६८ ॥ जो साधु सचित्त सिला सचित्त कंकर घिस लकड के जाले बने जीवोंने प्रवेश किया अण्डे-प्राणी बीज-हरित काया-ओस का पानी कीडी के नगरे फूलन-पानी-मट्टी-करोलिये इत्यादि युक्त हो वहां वस्त्र आताप में दे, यावत् देते को अच्छा जाने ॥ ६९ ॥ जो साधु थुण पर देहली पर यावत् वस्त्र आताप में देते को

जाव साइज्जइ ॥ ७० ॥ जे भिक्खू कुलयंसि वा, भित्तिसि वा जाव अंतरिक्ख-जायसि वा वत्थं आयावेज्ज वा जाव पयायंतं साइज्जइ॥७१॥जे भिक्खू खंद्धंसि वा, थभंसि वा जाव अण्णयरंसि वा, अंतरिक्खजायंसि वा, दुबद्धे दुनिक्खित्ते वत्थं आयावेज्ज वा, जाव पयावंतं वा साइज्जइ ॥ ७२ ॥ जे भिक्खू खंद्धंसि वा, थुभंसि वा मचंसि वा, मालयंसि वा पासायंसि वा, हमीयतलासि वा, अण्णयरंसि वा, अंतरिक्खजायंसि वा वत्थं आयावेज्ज वा, जाव पयावंतं वा साइज्जइ ॥ ७३ ॥ जे भिक्खू वत्थाओ पुढवीकाय णिहरइ णिहरावेइ णियरिय साहट्टु दिज्जमाण पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥७४॥ एवं आउकाया, ॥७५॥ एवं तेऊकाय ॥ ७६ ॥ एवं कंदाणि वा, फलाणि वा जाव हरियाणि वा णिहरइ जाव पडिग्गहंतं वा साइज्जइ

अच्छा जाने॥७०॥जो साधु टट्टी भींतादि पर वस्त्र आताप में दे देते को अच्छा जाने॥७१॥जो साधु लक्कड का ढग स्तंभादि वस्त्र पर आताप में देते को अच्छा जाने॥७२॥जो साधु ईटादि का ढग मचाण मसाद आदि ऊंचा अधर स्थान में वस्त्र आताप में दे देते को अच्छा जाने॥७३॥जो साधु वस्त्र में से पृथ्वी,पानी,अग्नि,कन्दमूलादि वन-स्पति निकाले निकलावे,निकाल कर देता हो उसे ग्रहण करे,करते को अच्छा जाने॥७७॥जो साधु से वस्त्र

सूत्र
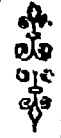
॥ ७७ ॥ जे भिक्खू वत्थाओ उसह बीयाए णिहरइ जाव पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ७८ ॥ जे भिक्खु वत्थाओ तसपाणजायं णिहरइ जाव पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥ ७९ ॥ जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणउवासगं वा गामंतरंसि वा, गामपंतरंसि वा वत्थाओ ओभासिय २ जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥ ८० ॥ जे भिक्खू णायगं वा जाव परिमज्झओ उवट्ठिता वत्थं ओभासियं २ जायइ, जायंतं वा, साइज्जइ ॥ ८१ ॥ जे भिक्खू वत्थं णिसाए उडुबंध वसइ, वसंतं वा साइज्जइ

अर्थ

में धान्यादि बीज निकाले निकलावे. निकालकर वस्त्र दे उसे ग्रहण करे करते को अच्छा जाने ॥ ७८ ॥ जो साधु वस्त्र में से बेइन्द्रियादि त्रस प्राणी निकाले निकलावे निकलाकर वस्त्र देते को अच्छा जाने॥७९॥ जो साधु के पितादि स्वजन हो या स्वजन न हो, श्रावक हो या श्रावक न हो, उनके पास ग्रामादि के अन्तरमें पुकार २ वस्त्र याचे, याचते को अच्छा जाने ॥ ८० ॥ जो साधु स्वजन हो या स्वजन न हो श्रावक हो या श्रावक न हो उन के पास परिषदा में से उठकर पुकार २ कर वस्त्र याचे. याचते को अच्छा जाने ॥८१॥ जो साधु वस्त्र के लिये मास कल्पादि रहे रहते को अच्छा जाने॥८२॥ जो साधु वस्त्र के लिये चौमासा करे करते को अच्छा जाने ॥ ८२ ॥ इन दोषों को किसी भी दोष लगानेवाले को लघु चौमासिक प्राय॰

॥ ८३ ॥ जे भिक्खू वत्थं निसाए वासावासं वसइ जाव साइज्जइ ॥ ८४ ॥ तं सेवमाणे अवज्जइ चउमासियं परिहार ठाणं उग्घाइयं ॥ निसिहज्झयण अठारमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ * * * * *

श्चित्त आता है. जो उक्त दोष परवशपने उपयोग बिना लगावे तो जघन्य ४ आयंबिल, मध्यम ६० नीवी उत्कृष्ट १०८ उपवास. जो आतुरता से उपयोग सहित लगावे तो जघन्य ४ उपवास, मध्य ६ बेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में चार विगय त्याग और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ बेले, मध्यम ४ तले, उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में आयंबिल. इति निशीथ सूत्र का अट्ठारवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १८ ॥ ० ० ०

सूत्र

॥ उन्नीसवा-उद्देशा ॥

जे भिक्खू वियडं किण्णाति किण्णावेति, कीया साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेति, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ एवं वियडं पामिच्च ॥ २ ॥ एवं वियडं परियट्टे ॥ ३ ॥ एवं वियडे अच्छिज्जं ॥ ४ ॥ एवं वियडे अणिसिट्ठं ॥ ५ ॥ एवं वियडे अभिहडं ॥ ६ ॥ जे भिक्खू गिलाणस्स अट्ठाए परंतिण्ह वियडं दत्तीणं पडिग्गाहेति, पडिग्गहंतं

अर्थ

जो साधु-साधु के कल्पने योग्य जो अचित्त वस्तु है उसे मूल्य लेवे, मूल्य लेवावे, अन्य मूल्य लेकर देता हो उसे ग्रहण करे, मूल्य ग्रहण करता हो उस साधु को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु अचित्त वस्तु उद्धारी लेवे, उद्धारी लेवावे, उद्धारी लेकर कोई दे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करावे उद्धारी ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ ऐसे ही अचित्त वस्तु का ग्रहस्थ से बदला करे कि यह मेरी तुम लो वह तेरी मुझे दो, ऐसा अन्य साधु से करावे, ऐसा बदला कर कोई वस्त देता हो उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ ऐसे ही अचित्त वस्तु किसी निर्बल के पास से बलात्कार से छीन कर लेवे, अन्य से लेवावे, छीन कर देता हो उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ ऐसे ही अचित्त वस्तु के मालक की आज्ञा विना ग्रहण करे, करावे, विना आज्ञा ग्रहण कर कोई अन्य देवे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ ऐसे ही अचित्त वस्तु सन्मुख मंगाकर लेवे, अन्य साधु को लेवावे, सन्मुख लाकर दे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु किसी

सूत्र

वा साइज्जइ ॥७॥ जेभिक्खू वियडं गहाय गामाणुगामं दूतिज्जति दूतिज्जंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू वियडं गाळेति गालावेति गालिया साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ, पडिग्गाहंतं वा सइाज्जइ॥९॥ ज भिक्खू चउहिं संज्झाएहिं सज्झायं करेति,करंतं वा, साइज्जइ-तंजहा पुव्वाए संज्झाए, पच्छिमासंज्झाय. अवरण्हे, अड्ढरत्ते ॥ २० ॥

अर्थ

गिल्यानी (रोगी) साधु के लिये अचित्त वस्तु की तीन दाती से ज्यादा ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने. क्यों कि दो वक्त लाया हुवा तो वह अग्रह करने से भी ग्रहण करले. परंतु विशेष अग्रह से वह कोपित होवे तथा गिल्यानी के लिये लाया अन्य को भोगवते से अनेक दोषोंत्पत्ति होवे ॥७॥ जो साधु अचित्त वस्तु आहार आदि ग्रहणकर ग्रामानुग्राम विहार करे विहार करतेको अच्छा जाने* ॥८॥ जो साधु अचित्त वस्तु गुड सक्करादि पानी आदि से गळावे. अन्य पास गलवावे, साधु निमित्त गला कर कोई दे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने, स्वाद निमित्त गलाने में दोष है ॥ ९ ॥ जो साधु—४ अस्वाध्याय के काल में स्वाध्याय [सूत्र पठन] करे, करते को अच्छा जाने तद्यथा—१ प्रातःकाल, २ सन्ध्याकाल (दोनों वक्त रक्त रंग की दिशा रहे वहां तक) ३ दोप्रहर, और ४ आधी रात्रि, (दोनों वक्त एक २ मुहुर्त) ॥ १० ॥ जो साधु कालिक शास्त्र जो दिन और रात्रिके प्रथम और

* साधु को दो कोस उपरांत उपभोगिक पदार्थ ले जाने की मना है.

सूत्र

जे भिक्खू कालिय सुयस्स परंतिण्हं पुच्छाणं पुच्छंति पुच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू दिट्ठिवायस्स परं सत्तण्हं पुच्छण्हं पुच्छंति, पुच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू चउसु महामहेसु सज्झायं करेइ, करंतं वा साइज्जइ, तंजहा-इंदमहेसु वा, खंधमहेसु वा, जक्खमहेसु वा, भुयमहेसु वा ॥ १३ ॥ जे भिक्खू चउसु महा पाडिवएसु सज्झायं करेइ, करंतं वा साइज्जइ तंजहा-सुगिम्हिय पाडिवाए, असाडी पडिवाए, भद्दवए पाडिवाए, कत्तिय पढिवाए ॥ १४ ॥ जे भिक्खू पोरसिं सज्झायं

अर्थ

चौथे प्रहर में पठन किये जाते हैं. उन की अकाल में तीनं गाथा उपरांत पठन करे, करते को अच्छा जाने॥११॥जो साधु अकालमें दृष्टी वाद बारहवा अंग की सात पृछा [गाथा] उपरांत पढे, पडते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु चार देवता के महोत्सव होते हों उस वक्त स्वध्याय करे. करते को अच्छा जाने. तद्यथा—१ इन्द्रदेव का, २ स्कन्ध देव का. ३ यक्ष देव का और ४ भूत देव का ॥ १३ ॥ जो साधु चार महा प्रतिपदा को स्वध्याय करे, करते को अच्छा जाने, तद्यथा—१ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा से वैशाख वद्य प्रतिपदा, २ अषाड शुक्ल पूर्णिमा से श्रावण वद्य प्रतिपदा, ४ भाद्रव शुक्ल पूर्णिमा से अश्विन वद्य प्रतिपदा, और ४ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा से मृगश्रवद्य प्रतिपदा* ॥ १४ ॥ जो साधु

* उक्त प्रातः सन्ध्या दो प्रहर और मध्य रात्रि में, तथा इन चार महा पूर्णिमा तथा प्रतिपदा को देवताओं का गमनागमन विशेष होता है देवता की भाषा और शास्त्र की भाषा एक है. अशुद्धउच्चार होने से विघ्नोत्पति होवे.

उवातिण्णावेति, उवाइणंतं वा साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खू चउकालं सज्झायं न करेति, न करंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू असज्झायं सज्झायं करेति करंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू अप्पणो असज्झायंसि सज्झायं करेति, करंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू हेठिल्लाइं समोसरणाइं अवाएत्ता, उवरिम सुयं वाएति, वायंतं वा साइज्जइ, ॥ १९ ॥ जे भिक्खू णवबंभचेराइ अवाएत्ता

अर्थ

स्वध्याय करता २ प्रहरसी काल का अतिक्रमे (अर्थात् दूसरे प्रहर में ध्यान नहीं करे) अतिक्रमते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु रात्रि और दिन का प्रथम प्रहर और अंतिम प्रहर इन चारों काल में स्वध्याय नहीं करे. नहीं करते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु तारा टूटे, रक्त दिशा, गाज, बीज, आदि अस्वध्याय की वक्त स्वध्याय करे, करते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु अपने शरीर सम्बन्धी रक्तादि की अस्वध्याय में स्वध्याय करे, करते को अच्छा जाने+ ॥ १८ ॥ जो साधु नीचे के (प्रथमके) समवशरण [सूत्र] उल्लंघन [छोड] कर ऊपर का (अन्य) सूत्र की वांचना प्रथम देवे, देते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ अर्थात् जो साधु नव ब्रह्मचर्य के [आचारांग के प्रथय श्रुतस्कन्ध के] अध्ययन

+ आवश्य सूत्र नो कालिक नो उत्कालिक कहा है, इस लिये सामायिक प्रतिक्रमण के लिये कोइ भी अस्वध्याय नहीं है

सूल

अन्नरिमसुयं वाएइ वायंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू अवत्तं वाएति वायंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खु वत्तंणवाएति, णवायंतावा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू अप्पत्तं वाएति, वायंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू पत्तं नवाएति नवायंतं वा साइज्जति ॥ २४ ॥ जे भिक्खू दोण्हपि मरिसयाणं एक्कसं सिक्खावेति, एक्कं न सिक्खावेति, एक्कं वाएइ, एक्कं नवाएइ, एक्कं न संसिक्खावेइतं वा,

अर्थ

छोड कर अन्य सूत्र प्रथम पढावे, पढाते को अच्छा जाने॥ २० ॥ * जो साधु अव्यक्त- छोटी उमर वाले जिस के कांख होठ पर रोम-बाल प्रगट नहीं हुवे हों उन को शास्त्रार्थ की वांचना देवे. वांचना देते को अच्छा जाने ॥२१॥ जो साधु व्यक्त-योगावस्था-युक्तवय सम्पन्न को वांचना नहीं देवे. नहीं देते को अच्छा जाने ॥२२॥ जो साधु अप्राप्त अर्थात् सूत्र ज्ञान ग्रहण करने के जो विनयादि गण है उसे अप्राप्त अयोग्य हो तथा व्यवहार सूत्रानुसार दीक्षा का काल प्राप्त नहीं हुआ हो उसे सूत्र बचावे, बचाते को अच्छा जाने ॥२३॥ जो साधु विनयादि गुण सम्पन्न ज्ञान देने योग्य हो उसे सूत्र की वांचना नहीं देवे, नहीं देते को अच्छा जाने ॥२४॥ जो साधु दो साधु एक से सूत्र ग्रहण करने योग्य वय बुद्धि विनयादि गुण सम्पन्न हों उन में से एक को

---

* चौथे आरे में प्रथम आचारांग पढा कर फिर अन्य शास्त्र पढाते थे. इस वक्त आचार्य परम्परा से प्रथम दशवैकालिक शास्त्र पढाते हैं.

सूत्र

एकं णवायंतं वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू आयरिय उवज्झाएहिं अविदिण्ण-गिरं आतियइ, आतियतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा वाएति, वायंत वा साइज्जाति ॥ २७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा वायणं पडिच्छंति, पडिच्छंतं वा साइज्जाति ॥ २८ ॥ जे भिक्खू पासत्थं वाएति, वायतं वा साइज्जइ ॥२९॥ जे भिक्खू पासत्थस्स वाएणं पडिच्छंति, पडिच्छतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥ एवं उसण्णं ॥ ३२ ॥ एवं कुसीलं ॥ ३४ ॥

अर्थ

सूत्र वांचावे. एक को नहीं वांचावे, नहीं वांचाते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ जो साधु आचार्य उपाध्याय के पास वांचनी लिये बिना अपने मन से ही शास्त्र वांचे वांचते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक गृहस्थ को वांचनी दे, देते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक गृहस्थ के पास वांचनी ले, लेते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ जो साधु पार्श्वस्थ [ढीले] साधु को वांचनी देवे, देते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो साधु पार्श्वस्थ (ढीले) साधु के पास वांचनी लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥३०॥ जो साधु ऊसन्न साधु को वांचनी देवे, देते को अच्छा जाने ॥३१॥ जो साधु उसने साधु के पास वांचनी लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ जो साधु कुशीलीये साधु को वांचनी देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु कुशीलीये साधु पास वाचनी लेवे, लेते को अच्छा जाने

सूत्र

एवं गितियं ॥ ३६ ॥ एवं संसत्तं ॥ ३८ ॥ तं सेवमाणे अवज्जइ चाउम्मासियं परिहारठाणं उग्घातियं ॥ निसीहेज्झयणस्स गुणवीसमं उद्देसो सम्मत्तो ॥ १९ ॥

अर्थ

॥ ३४ ॥ जो साधु नित्यक साधु को वांचनी देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३५ ॥ जो साधु नित्यक के पास से वाचनी लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ जो साधु संसक्त को वांचनी देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु संसक्त के पास वांचनी लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ उक्त ३८ दोष में के किसी भी दोष सेवन करने वाले को लघु चौमासिक प्रायःश्चित आता है. जो उक्त दोष-परवश पने विना उपयोग से लगावे तो जघन्य ४ अयंबिल मध्यम ६० नीवी. उत्कृष्ट १०८ उपवास, जो अतुरता से उपयोग सहित लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ६ बेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारने में धारविगय बंध और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ बेले. मध्यम ४ तेले उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारणे में आंबिल. इति निशिथ सूत्र का उन्नीसवा उद्देशा संपूर्ण ॥ १९ ॥

॥ बीसवा—उद्देशा ॥

सूत्र

(१)जे भिक्खू मासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचिय आलोएमाणस्स मासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं (२) जे भिक्खू दो मासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स दो मासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स तिमासियं (३) जें भिक्खू तिमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचिय आलोएमाणस्स तिमासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स चउमासियं (४) जे भिक्खू चउमासियं परिहारठाणं पाडिसेवित्ता

अर्थ

(१) जो साधु एक महिने का प्रायःश्चित आवे ऐसे दोष स्थान का सेवन कर आचार्यादि के पास उस की आलोचना करते जो वह माया कपट रहित आलोचना करे तो उसे एक महिने का प्रायःश्चित आवे और वह जो माया-कपट सहित आलोचना करे तो उसे दुगुना अर्थात् दो महिने का प्रायःश्चित आवे. [२] जो साधु दो महिने का प्रायःश्चित आवे ऐसा दोष स्थान का सेवन कर माया रहित आलोचना करे तो दो महिने का प्रायःश्चित आवे और माया-कपट सहित आलोचना करे तो तीन महिने का प्रायःश्चित आवे. (३) जो साधु तीन महिने प्रायःश्चित का दोष स्थान सेवन कर

सूत्र

आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स चउमासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स पंचमासियं (५) जे भिक्खू पंचमासियं पडिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स पंचमासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स छम्मासियं (६) तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा तं चेव छमासियं ॥ १ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि मासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोए

अर्थ

माया रहित आलोवेतो तीन महिने का प्रायःश्चित आवे और माया सहित आलोवेतो चार महिने का प्रायःश्चित आवे (४) जो साधु चार महिने प्रायःश्चित का दोष स्थान सेवन कर कपट रहित आलोवे तो चार महिने का प्रायः श्चित और कपट सहित आलोवे तो पांच महिने का प्रायःश्चित. (५) जो साधु पांच महिने का प्रायःश्चित का स्थान सेवन कर माया रहित आलोवे तो पांच महिने का प्रायःश्चित और माया सहित आलोवे तो छ महिने का प्रायःश्चित (६) उक्त स्थान सिवाय किसी भी प्रायःश्चित का स्थान सेवन कर कपट रहित आलोवे तथा कपट सहित आलोवे किसी भी प्रकार आलोचना करे तो भी छ महिने का ही प्रायःश्चित आवे. क्यों कि उत्कृष्ट तप छ महिना का ही होता है और प्रायः श्चित भी उतना ही होता है. छ महिने से ज्यादा तप भी नहीं और प्रायःश्चित भी नहीं है ॥१॥ अब बहुत वक्त दोष

माणस्स मासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं (१) जे भिक्खू बहुसोवि दोमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियं आलोएमाणस्स दो मासियं पलिउंचियं आलोएमाणस्स तिमासियं (२) जे भिक्खू बहुसोवि तिमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोयज्जा,अपलिउंचियं आलोएमाणस्सति मासियं,पलिउंचियं आलोएमाणस्स चउमासियं (३) जे भिक्खू बहुसोवि चउमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स चउमासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स पंचमासियं (४) जे भिक्खू पंचमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता

सेवन आश्रिय कहते हैं-(१) जो साधु बहुत (तीन) वक्त एक महिने का प्रायश्चित आवे ऐसा दोष स्थान सेवन कर कपट रहित आलोयना करे तो एक महिने का प्रायश्चित आवे और कपट सहित आलोयना करे तो दो महिने का प्रायश्चित आवे (२) जो साधु बहुत वक्त दो महिने का प्रायश्चित आवे ऐसा दोष स्थान सेवन कर कपट रहित आलोयना करे तो दो महिने का प्रायश्चित आवे, और कपट सहित आलोयना करे तो तीन महिने का प्रायश्चित्त आवे. (३) जो साधु बहुत वक्त तीन महिने का प्रायश्चित्त का स्थानक सेवन कर कपठ रहित आलोवे तो तीन महिने का प्रायश्चित्त आवे और कपट सहित आलोवे तो चार महिने का प्रायश्चित्त आवे (४) जो साधु बहुत वक्त चार महिने

सूत्र

आलोएज्जा अपलिउंचियं आलोएमाणस्स पंचमासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स छमासियं (५) तेणं परं पलिउंचियं अपलिउंचियं आलोएमाणस्स तं चेव छमासियं ॥ २ ॥ जे भिक्खू मासियं वा, दोमासियं वा, तिमासियं वा, चउमासियं वा, पंचमासियं वा, एएसा परिहारठाणाणं अण्णयरं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउचियं आलोएमाणस्स मासियं, दोमासियं, तिमासियं, चउमासियं, पंचमासियं,

अर्थ

का प्रायःश्चित्त का स्थानक सेवन कर कपट रहित आलोवे तो चार महिने का प्रायःश्चित्त आवे और कपट सहित आलोवे तो पांच महिने का प्रायःश्चित्त आवे (५) जो साधु पांच महिने का प्रायःश्चित्त का स्थानक सेवन कर जो कपट रहित आलोवे तो पांच महिने का प्रायःश्चित्त आवे और कपट सहित आलोवे तो छ महिने का प्रायःश्चित्त आवे (६) इस सिवाय अन्य कोइ भी प्रायःश्चित का स्थानक सेवन कर कपट सहित तथा कपट रहित किसी भी प्रकार आलोचना करे तो भी छही महिने का प्रायःश्चित आवे क्यों कि ज्यादा प्रायःश्चित नहीं है ॥ २ ॥ अब सब समुच्चय कहते हैं—जो साधु एक महिने का, दो महिने का, तीन महिने का, चार महिने का, पांच महिने का, इन प्रायःश्चित के स्थान में से किसी भी प्रायःश्चित का स्थान सेवन कर जो कपट रहित आलोचना करे तो एक महिने वाले को एक मासिक, दो महिने वाले को दो मासिक, तीन महिने वाले को तीन मासिक, चार महिने वाले को चार मासिक,

सूत्र

पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं तिमासियं चउमासियं, पंचमासियं, छमासियं॥ तेणं परं पलिउंचियं वा अपलिउंचियं वा, आलोएमाणस्स तं चेव छम्मासियं ॥ ३ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि मासियं दोमासियं, तिमासियं चउमासियं, पंचमासियं एएसिं परिहारठाणाणं अण्णयर परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स मासियं, दोमासियं तिमासियं चउमासियं पंचमासियं. पलिउंचियं आलोएमाणस्स-दोमासियं वा, तिमासियं वा, चउमासियं वा, पंचमासियं वा,

अर्थ

और पांच महिने वाले को पांच मासिक प्रायःश्चित आवे और जो वह कपट सहित आलोचना करे तो-एक महिने वाले को दो मासिक, दो महिने वाले को तीन मासिक, तीन महिने वाले को चार मासिक, चार महिने वाले को पांच मासिक और पांच महिने वाले को छ मासिक प्रायःश्चित आता है इस सिवाय किसी भी दोष स्थान का सेवन कर कपट रहित या कपट सहित किसी भी प्रकार आलोचना करे तो भी छही महिने का प्रायःश्चित आता है. इस उपरांत प्रायश्चित नहीं है ॥ ३ ॥ बहुत वक्त आश्रिय कहते हैं—जो साधु बहुत वक्त एक मासिक, दो मासिक तीन मासिक, चार मासिक और पांच मासिक प्रायःश्चित का स्थानक सेवन कर उस की कपट रहित आलोचन करे तो,एक महिने वाले को एक महिने का यावत् पांच महिने वाले को पांच मासिक प्रायःश्चित आवे और जो कपट सहित आलोयना करे

सूत्र
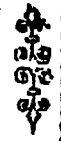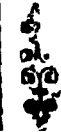
छमासियं वा, ॥ तेणं परं पलिउंचियं वा, अपलिउंचियं वा, आलोएमाणस्स तं चेव छमासियं वा ॥ ४ ॥ जे भिक्खू चउमासियं वा, सातिरेगं चउमासियं वा, पंचमासियं वा, सातिरेगं पंचमासियं वा, एएसिं परिहारठाणाणं अण्णयरं परिहार-ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स चउमासियं, सातिरेगं चउमासियं, पंचमासियं, सातिरेगं पंचमासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स पंचमासि-

अर्थ

तो एक महिने वाले को दो मासिक, दो महिने वाले को तीन मासिक, तीन महिने वाले को चार मासिक, चार महिने वाले को पांच मासिक और पांच महिने वाले को छ महिने का प्रायःश्चित आवे ॥ इस उपरांत किसी भी प्रायःश्चित का स्थान सेवन कर कपट सहित तथा कपट रहित किसी भी प्रकार आलोचना करे तो भी छः महिने का प्रायःश्चित आता है ॥ ४ ॥ अब मासिकादि प्रायःश्चित से कुच्छ अधिक प्रायःश्चित्त आश्रिय कहते हैं—जो साधु चौमासिक तथा चौमासिक से कुच्छ अधिक, पांच मासिक तथा पांच मासिक से कुच्छ अधिक प्रायःश्चित्त का स्थानक सेवन कर जो कपट रहित आलोचना करे तो चौमासिक वाले को चार महिने का, चार मासिक से कुच्छ अधिक वाले को चार मासिक से कुच्छ अधिक, पांच मासिक वाले को पांच महिन का, पांच महिने से कुच्छ अधिक वाले को, पांच महिने से कुच्छ अधिक प्रायःश्चित्त आवे, और जो कपट सहित आलोचना करे तो चौमासिक वाले

सूत्र

यं वा सातिरेगं पंचमासियं वा, छमासियं वा, ॥ तेणं परं पलिउंचियं वा अपलिउंचियं वा, आलोएमाणस्स तं चेव छमासियं ॥ ५ ॥ जे भिक्खू चउमासियं वा, साइरेगं चउमासियं वा, पंचमासियं वा, साइरेगं पंचमासियं वा, एएसिं परिहारठाणाणं अण्णयरं पाडिहारठाणं पाडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं अ.लोएमाणस्स

अर्थ

को पांच मासिक, चौमासिक से कुच्छ अधिक वाले को पांच मासिक से कुच्छ अधिक, पांच मासिक वाले को छ महिने का और पांच मासिक से से कुच्छ अधिक वाले को भी छ ही महिने का प्रायःश्चित्त आता है. इस उपरांत कितना भी प्रायःश्चिच का स्थानक सेवन करे और कपट रहित तथा कपट सहित आलोचना करे तो छ ही महिने का प्रायःश्चित्र आता है. क्यों कि इसउपरांत प्रायःश्चित्त नहीं है ॥ ५ ॥ अब प्रायःश्चित्त उतारते बीच में पुनः प्रायःश्चित्त का स्थान सेवन करे जिस आश्रित कहते हैं—जो साधु चौमासिक तथा चौमासिक से कुच्छ अधिक, पांच मासिक तथा पांच मासिक से कुच्छ अधिक प्रायःश्चित्त का स्थानक बहुत लोग जाने इस प्रकार सेवन कर फिर कपट सहित आलोचना करे तो उसे सर्व संघ के सन्मुख प्रायःश्चित दे× फिर उस की शक्ति का विचार कर गुरु आज्ञा देवे कि—यह कल्प स्थित है इस लिये इस का प्रायश्चित पूर्ण होवे वहां तक वांचनादि

× क्यों कि जिस से अन्य को भी भयोतपन्न होवे और वे वैसा काम नहीं करे.

सूत्र

ठवणिज्ज ठवेइत्ता करणिज्ज वेयावडियं ठवितेवि, परिसेविता सेवि कसिणा तत्थेव आरुहियव्वेसिया-१ पुव्वं पडिसेवितं पुव्वं आलोइयं, २ पुव्वं पडिसेवित्तं पच्छा-आलोइयं, ३ पच्छा पडिसेवित्तं पुव्वं आलोइयं, ४ पच्छा पडिसेवित्तं पच्छा

अर्थ

की सहायता करो. तो अन्य साधु उस की सहायता करे और जो अनुपहारी है परंतु दुःकल्पास्थित है अर्थात जिस की समाचारी शुद्ध नहीं है उन के लिये भी जो गुरु आज्ञा देवे तो वांचनादि की सहायता करे, अनुपहारिक होने आया अर्थात् जिस का प्रायःश्चित्त पूर्ण होने आया उस को उस की वैयावच्च में स्थापन करे. और जो किसी साधुने गुप्त—कोइ भी नहीं जाने इस प्रकार दोष स्थान सेवन किया हो÷ उसे गुप्त प्रायःश्चित्त देकर उक्त प्रकार ही प्रायःश्चित्त उतरावे. और वह प्रायःश्चित्त का स्थानक उतारता मध्य में दूसरा प्रायःश्चित्त का स्थान सेवन कर ले तो उस का भी प्रायःश्चित्त प्रथम के प्रायःश्चित्त में वृद्धि करे. आलोचना के ४ भांगे—१ प्रथम दोष सेवन कर प्रथम ही आलोचना करे, २ प्रथम दोष सेवन कर पीछे आलोचना करे. ३ प्रथम आलोचना कर फिर दोष सेवन करे, और ४ पीछे दोष सेवन करे और पीछे ही आलोचना करे. और भी आलोचना के ४ भांगे—१ कपट रहित

÷ उस का दोष जो संघ के सन्मुख प्रगट करे तो उस प्रगट करता को उतना ही प्रायःश्चित्त आवे जितना उस दोषित को आवे. बत्तीस योग संग्रह की साक्षी से.

सूत्र

आलोइयं ॥ १ अपलिउंचिए, पलिउंचियं, २ अपलिउंचिए पलिउंचियं, ३ पलिउं-चिए अपलिउंचिए, ४ पलिउंचियं, पलिउंचिउंचियं—आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहूणियं ॥ ६ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि चउमासियं वा, पंचमासियं वा, एवं जाव

अर्थ

दोष सेवन कर कपट रहित ही आलोचना करे, २ कपट रहित दोष सेवन कर कपट सहित आलोचना करे. ३ कपट सहित दोष सेवन कर कपट सहित आलोचना करे और ४ कपट सहित दोष सेवन कर कपट सहित ही आलोचना करे कितनेक इन चार भांगो का यह भी अर्थ कहते हैं—१ आलोचना किये पहिले विचार करे की कपट रहित आलोचना करूंगा और कपट रहित ही आलोच करे. २ आलोचना करते पहिले विचार करे कि कपट रहित आलोचना करूंगा और कपट सहित आलोचना करे. ३ आलोचना करते पहिले विचार करे कि कपट सहित आलोचना करूंगा और कपट रहित आलोचना करे, और ४ आलोचना करते पहिले विचारे कि कपट सहित आलोचना करूगा और कपट सहित ही आलोचना करे. इन सब कर्मों को विचक्षण आचार्य उस की निश्रा भाषनादि से जान जावे और वह जिस प्रायःश्चित को योग्य होवे सब प्रायःश्चित एकत्र कर उसे देवे. परन्तु सब को एकसा प्रायः श्चित देवे नहीं ॥ ६ ॥ इसे ही बहु वचन से कहते हैं.—जो साधु बहुत वक्त चार मासिक पांच मासिक प्रायःश्चित के तप में स्थापन किया हुआ परिहारिक बना हुआ पुनःकोइ बहुत चौमासिक दोष

सूल

एयाए पठवणाए णिविसमाणे पडिसेवि, सेविकासिणं, तत्थेव आरुहियव्वे सिया ॥ ९ ॥ जे भिक्खू चउमासियं वा, साइरेगं चउमासियं वा, पंचमासियं वा, साइरेगं पंचमासियं वा, एएसिं परिहाराठाणाणं, अण्णयरं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, पलिउंचियं आलोएमाणस्स ठवणिज्ज ठवइत्ता, करणिज्जं वेयावडिया, ठविते परिसेवित्ता सेविकासिणो तत्थेव आरुहियव्वेसिया—१ पुव्वंपडिसेवितं पुव्वं

अर्थ

का स्थान सेवन कर आलोचना करे तो उसे पुनः प्रायश्चित देकर पहिले के तप में वृद्धि करे ॥ ७ ॥ जो साधु चौमासिक कुछ अधिक चौमासिक, पंच मासिक, कुछ अधिक पंच मासिक प्रायश्चित के स्थानक में का किसी स्थान का सेवन कर जो कपट सहित आलोचना करे तो उसे परिहारिक तप में स्थापन करे, और उस की वैयावच में अन्य साधुओं को स्थापन करे. कदाचित वह प्रहारिक तप करता हुआ अन्य किसी दोष स्थान का सेवन करले तो पास आलोचना करावे, आलोचना का विशेष कहते हैं—अनेक प्रायश्चित के स्थानक का सेवन करने वाले अनेक साधुओं में से १ कोइ पहिले सेवन किये दोष की पहिले आलोचता करे, २ कितनेक पहिले सेवन किये दोष की पीछे आलोचना करे, ३ कितनेक पीछे सेवन किये दोष की पहिले आलोचना करे, और ४ कितनेक पीछे सेवन किये दोष की पीछे-आलोचना करे. और भी—१ कितनेक सरलता से आलोचने करने का विचार कर

आलोइयं, २ पुव्वंपडिसेवितं पच्छा आलोइयं ३ पच्छापडिसेवित्तं पुव्वं आलोइयं पच्छा पडिसेवितं पच्छा आलोइयं ॥ १ अपलिउंचिए अपलिउंचियं, २ अपलिउंचिए, पलिउंचियं ३ पलिउंचिए अपलिउंचियं ४ पलिउंचिय पलिउंचियं, आलोएमाणस्स सव्वामेव सकयं साहणिज्जं ॥ जे एवं बहुसोवि एयाए पठवणाए पठविए णिविसमाणे पडिसेवित्ता सेविकासिणो तत्थेव आरुहिव्वेसिया ॥ ८ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि चउमासियं वा, साइरेगं चउमासियं वा, पंचमासियं वा, साइरेगं पंचमासियं वा, एएसिं परिहारठाणाणं अण्णयरं

अर्थ

शरलता से ही आलोचना करे, २ कितनेक शरलता से आलोचना का विचार कर कपट से करे, ३ कितनेक कपट से आलोचना करने का विचार कर शरलता से करे, और ४ कितनेक कपट से आलोचना का विचार कर कपट से आलोचना करे. इस प्रकार आलोचक के अभिप्राय पर से बचनोचार से विचक्षण आचार्य भेद को पहचान उस की आलोचना प्रमाने सब प्रायःश्चित एकत्र कर साथ ही देवे. ऐसे ही बहुत मासिक प्रायःश्चित में स्थापन किये हुवे. प्रायःश्चित का तप करते थोडा तप बाकी रहे तब पुनः किसी दोष स्थान का सेवन करे तो पुनः उसे उस दोष का जितना प्रायःश्चित हो उस में स्थापन करे ॥ ८ ॥ अब अधिक दोषाश्रिय कहते हैं—जो साधु बहुत चौमासिक तथा चौमासिक से कुछ अधिक, बहुत पंच मासिक तथा पंच मासिक से कुछ अधिक इन दोष स्थान में से

सूत्र

परिहारठाणं पडिसेविक्तं आलोएज्जा अपलिउंचियं आलोएमाणस्स ठवणिज्जं ठवेइत्ता करणिज्जं वेयावडियं, ठावितेवि पडिसेविता सेवि कासिणे तत्थेव आरुहिय्य सिया-१ पुव्वं पडिसेवित्तं पुव्वं आलोइयं २ पुव्वं पडिसेवित्तं पच्छा आलोइयं ३ पच्छा पडिसेवित्तं पुव्वं आलोइयं ४ पच्छा पडिसेवित्तं पच्छा आलोइयं ॥ १ अपलिउंचिए अपलिउंचियं २ अपलिउंचिए पलिउंचियं ३ पलिउंचिए अपलिउंचि-

अर्थ

किसी दोष स्थान का सेवन कर कपट सहित आलोचना करे तो उसे परिहारिक तप में स्थापन करे. अन्य साधुओं को वैयावच्च में स्थापन करे. वह परिहारिक तप करता हुआ वीच में कोइ अन्य दोष स्थान सेवन करले तो उस दोष का जितना प्रायःश्चित हो उतना पूर्ण प्रायःश्चित उसे देवे. इस का भी विशेष उक्त प्रकार ४ भांगे-१ प्रथम सेवन किये दोष की प्रथम आलोचना करे, २ प्रथम सेवन किये दोष की पीछे आलोचना करे. ३ पीछे सेवन किये दोष की प्रथम आलोचना करे, और ४ पीछे सेवन किये दोष की पीछे आलोचना करे. तथा-१ कपट सहित सेवन किये दोष की कपट रहित आलोचना करे २ कपट रहित सेवन किये दोष की कपट सहित आलोचना करे, ३ कपट सहित सेवन किये दोष की, कपट रहित आलोचना करे, और ४ कपट सहित सेवन किये दोष की कपट सहित आलोचना

सूत्र
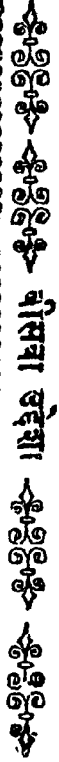
यं, ४ पलिउंचिए पलिउंचियं आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहणीयं ॥ १ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि चउमासियं वा, सातिरेगं चउमासियं वा, पंचमासियं वा, सातिरेगं पंचमासियं वा, एएसिं परिहारट्ठाणाणं अण्णयरं परिहारठाणं पडिसेवित्ता, आलोएज्जा—पलिउंचियं आलोएमाणस्स ठवणिज्ज ठवइ, करणिज्जं वेयावडियं ठावि तेवि पडिसेवित्ता सेविकसिणे तत्थेव आरुहियव्वं सिया ॥ १ पुव्वं पडिसेवित्तं पुव्वं आलोइयं. पुव्वं पडिसेवित्तं पच्छा आलोइयं, पच्छा परिसवित्तं पुव्वं आलोइयं

अर्थ

करे जिस प्रकार आलोचना करे उस का प्रायःश्चित एकत्र कर वीचक्षण आचार्य उसे देवे ॥ ९ ॥ अब थोडा प्रायःश्चित्त बाकी रहे दोष लगावे उसे आश्रिय कहते है—जो साधु बहुत वक्त चौमासिक कुच्छ अधिक चौमासिक, पंचमासिक कुच्छ अधिक पंच मासिक इन प्रायःश्चित स्थान में के किसी एक प्रायःश्चित का स्थान सेवन कर कपट सहित आलोचना करे तो उसे योग्य प्रायःश्चित्त दे, प्रायःश्चित्त तप करावे, अन्य साधु को वैयावच मे रखे. वह प्रायःश्चित्तका तप करता हुआ पुनः किसी दोष स्थान का सेवन करले तो पीछा उस ही परिहारिक तप से स्थापन कर संपूर्ण तप पीछा करावे. विशेष—१ प्रथम लगा दोष प्रथम आलोवे. २ प्रथम लगा दोष पीछे आलोवे, ३ पीछे लगा दोष प्रथम आलोवे, और ४ पीछे लगा दोष पीछे आलोवे. तथा—१ सरलता से आलोचना करने का विचार

सूत्र

पच्छा पडिसेवित्तं पच्छा आलोइयं ॥ अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए, पलिउंचियं, पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं, आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहणियं ॥ जे एवं बहुसोवि एयाए पट्ठवणाए पट्ठविए णिव्विसमाणे पडिसेवेवि, सेविकसिणे, तत्थेव आरुहियव्वेसिया ॥ १० ॥ (१) छम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइ राइ दिय आरोवणा, आदि मज्झे अवसाणे, सअट्ठे सहेउं सकारणं

अर्थ

कर, शरलता से करे, २ शरलता से करने का विचार कर कपट से करे, ३ कपट से करने का विचार कर शरलता से करे. और ४ कपट से आलोचना करने का विचार कर कपट से आलोचना करे. आलोचक जिस प्रकार आलोचना करे उस का आद्यन्त पूर्णता से विचार कर सब प्रायःश्चित्त एकत्र कर उसे प्रायःश्चित्त देवे. ऐसे ही बहुत वक्त सेवन किया का भी कहना. उक्त प्रकार प्रायःश्चित्त में स्थापन किया हुवा प्रायःश्चित की समाप्ति कर निकलता हुवा पुनः कोइ प्रायःश्चित का स्थान सेवन करले तो फिर उसे प्रायःश्चित आरोपन कर उस में स्थापन करे ॥ १० ॥ [१] किसी साधु को छ मासिक प्रायःश्चित के तप में स्थापन किया. वह प्रायःश्चित का तप करता हुआ बीच में दो मासिक प्रायःश्चित आवे ऐसे दोष स्थान की सेवन कर [कपट रहित] आलोचना

सूत्र

अहाणं मइरित्तं तेणं परं सवीसइ रायाइदोमासि (२) पंचमासियं वा, परिहारठाणं पठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया अरोवणा, आदि मज्झं अवमाणे सअट्ठे सहेउं सकारणं अहिण मइरित्तं तेणं परं सवीसइ राइया दो मासी (३) एवं चउमासियं, जाव सवीसइ राइया

अर्थ

करे, तो उस को वीस रात्रि अधिक का प्रायःश्चित देवे. अर्थात् छ मास उपरांत वीस रात्रि पर्यंत और तप करावे, और जो वह वक्रता से आलोचना करे, तो उस का आदि मध्य अर्थ सहित हेतु सहित कारण सहित कमी नहीं ज्यादा नहीं. उस छ मास तप के उपरांत (अलग ही) दो महिने और वीस रात्री का प्रायःश्चित देवे [२] कोइ साधु पांच मासिक प्रायःश्चित का तप करता हुआ बीच में दो मासिक प्रायःश्चित आवे ऐसा दोष स्थापन सेवन कर (जो कपट रहित) आलोचना करे तो उस को उस तप उपरांत वीस रात्रि का अधिक प्रायःश्चित देवे और जो वह कपट सहित आलोचना करे तो उस का आदी मध्य अंत अर्थ सहित हेतु सहित कारण सहित कमी नहीं जयदा नहीं विचार कर उस तप के उपरांत दो महिने और वीस रात्रि का प्रायःश्चित देवे. ॥ [३] चौमासिक प्रायःश्चित का तप करता को वीस रात्रि अधिक दो महिने का प्रायःश्चित देवे, [४] ऐसे ही तीन मासिक प्रायःश्चित का तप करता, [५] ऐसे ही दो मासिक प्रायःश्चित का तप करता, और [६] ऐसे ही एक मासिक

सूत्र

दोमासी (४) एवं तेमासियं (५) दो मासियं (६) मासियंवि जाव सवीसइ राइया ॥ ११ ॥ (१) दो मासियं परिहारठाणं पठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारठाणं पाडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइ राइया आरोवणा आदि मज्झे अवसाणे सअट्ठे सहेउं सकारणं अहिण मइरित्तं तेण परं दसराया तिणिमासी (२) दसराया तिमासिय परिहारठाणं जाव तेणं परं चत्तारि

अर्थ

प्रायश्चित का तप करता हुआ भी जो बीच मे मासिक प्रायश्चित का स्थानक सेवन करे तो उसे बीस रात्रि का अधिक प्रायश्चित देवे. जो कपट सहित आलोचना करे तो अलग ही दो महिने और बीस रात्रि का प्रायश्चित देवे ॥ ११ ॥ (१) अब कोइ साधु ऊपर कहा दो महिन और बीस रात्रि अधिक प्रायश्चित का तप करता हुआ बीच में दो महिने के प्रायश्चित के स्थानक का सेवन करे कपट रहित आलोचना करे तो फिर भी उसे बीस रात्रि का प्रायश्चित देवे. और जो वह कपट सहित आलोचना करे तो उस का आदि मध्य अंत अर्थ हेतू कारण सहित नुन्याधकता रहित विचार कर पहिले के प्रायश्चित से (८० रात्रि) के उपरांत बीस रात्री अधिक करे अर्थात् सब १०० रात्रि (तीन महिने और दश रात्रि) का प्रायश्चित आवे [२] अब जो

सूत्र

अहाणं मंडरित्तं तेणं परं सवीसइ रायाइदोमासि (२) पंचमासियं वा परिहारठाणं मासी (३) चउमासियं परिहारठाणं जाव तेण परं सवीसइ राइया चत्तारि मासी [४] सवीसइ राइया चउमासियं परिहारठाणं जाव तेणंपरं सदसराया पंचमासी [५] सदसरायं पंचमासियं परिहारठाणं जाव तेणं परं छमासियं ॥ २ ॥ (१) छमासियं परिहारठाणं पठावितए अणगारे अंतरा मासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा, आदि मज्झे अवसाणे, सअट्ठे

अर्थ

साधु वह तीन महिने और दशदिन का प्रायश्चित का तप करते पुनः कोइ दो मासिक प्रायश्चित आवे ऐसा दोष स्थान सेवन करलेवे तो उस को बीस रात्री का प्रायश्चित देवे, तब (प्रथम के तीन महिने और १० दिन में यह २० दिन मिलाने से) चार महिने का पूर्ण प्रायश्चित हुआ (३) कोइ इस चार मासिक प्रायश्चित का तप करता बीच में दो मासिक प्रायश्चित का दोष स्थान सेवन करे उसे चार महिने उपरांत बीसदिन का प्रायश्चित देवे [४] जो चार महिने बीसरात्री का तप करता हुआ दो मासिक प्रायश्चित का दोष स्थान सेवन करे तो उसे उस उपरांत पांच महिने दश रात्रि का प्रायश्चित देवे [५] पांच महिने दश रात्रि का तप करता दो मासिक प्रायश्चित का स्थानक सेवन करलेवे तो यावत् छ महिने का प्रायश्चित देवे ॥ १२ ॥ (१) छ मासिक प्रायश्चित का तप करता साधु बीच में

सहेउं सकारणं अहिण मइरित्तं तेण परं दिवड्ढोमासी (७) एवं पंचगहमासियं आसमाणस्स (३) चउमासियं (४) तिमासियं [५] दोमासियं परिहारठाणं [६] मासियस्स जाव तेण परं दिवड्ढोमासी ॥ १३ ॥ (१) दिवड्ढमासियं परिहारठाणं पठाविए अणगारे अंतरामासिय पडिसेवित्ता आलोएज्जा, पक्खिया आरोवणा आदिं

अर्थ

एक महिने का प्रायःश्चित आवे ऐसा दोष स्थान सेवन कर कपट रहित आलोचना करे तो उस को पन्दरे दिन का प्रायःश्चित्त देवे. और वह जो कपट सहित आलोचना करे तो उस का आदि मध्य अंत का अर्थ हेतु कारण सहित विचार कर हिनाधिकता रहित प्रथम के प्रायःश्चित्त के उपरांत देढ [१॥] महिने का प्रायःश्चित्त देवे (२) ऐसे ही पंच मासिक (३) चौमासिक (४) तीन मासिक (५) द्विमासि और (६) एक मासिक किसी भी प्रकार का प्रायःश्चित्त उतारने का तप करता हुवा बीच में एक मास का प्रायःश्चित्त का दोष स्थान सेवन कर उस की कपट रहित आलोचना करे तो उस के तप में पन्दरे दिन की वृद्धि करे. और जो कपट सहित आलोचना करे तो उस तप से अलग ही एक महिना और पन्दरें दिन का तप कर प्रायःश्चित्त देवे ॥ १३ ॥ (१) यदि उस देढ मासिक प्रायःश्चित्त तप को करता हुवा बीच में एक मासिक तप आवे ऐसा प्रायःश्चित्त का स्थान सेवन कर कपट रहित आलोचना करे. तो उसे फिर पन्दरा दिन का प्रायःश्चित्त देवे और जो वह कपट सहित आलोचना,

सूत्र

मज्झे अवसाणे सअट्ठे सहेउं सकारणं अहिण मइरित्तं तेणं परं दो मासी (२) दोमासियं परिहारठणं पठविए अणगारे एवं पक्खियया आरोवियव्वो जाव छमासी पुणत्ति ॥ १४ ॥ (१) दोमासियं परिहारठाणं पाडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा आदि मज्झे अवसाणा; सअट्ठे सेहउं, सकारणं अहिण मइरित्तं, तेणं परं अड्ढाइज्जमासी [२] अड्ढाइय मासियं परिहारठाणं जाव अंतरादोमासियं परिहारठणं पाडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसराइयं आरोवणा

अर्थ

करे तो उस का आदि मध्य अन्त को अर्थ हेतु कारण यक्त न्युनाधिकता रहित विचार कर उस उपरांत पंदरे दिन अधिक करे. तब पूर्ण दो महिने का प्रायःश्चित्त होवे (२) दो मासिक परिहार स्थानक का तप करता हुवा साधु को भी इस ही प्रकार प्रायःश्चित्त देवे यावत् छ मासिक तप करने वाले को भी इस ही प्रकार प्रायःश्चित्त देवे ॥ १४ ॥ [१] दो मासिक प्रायःश्चित्त का तप करता हुवा साधु बीच में एक मासिक प्रायःश्चित आवे ऐसा दोष स्थान सेवन कर जो कपट रहित आलोचना करे तो उसे पक्खिक (पन्दरे दिन के) तप की आरोपन करे. यदि वह कपट से आलोचना करे तो उस का आदि मध्य अंत को अर्थ हेतु कारण विचार करे यावत् अढाइ मास का प्रायःश्चित देवे [२] अढाइ मास का प्रायःश्चित का तप करता हुवा मध्य मे दो महिने का प्रायःश्चित का स्थान सेवन कर कपट

सूत्र

आदि मज्झे अवसाणे, सअट्ठे सहेऊं सकारणं अहिण माइरित्तं तेणं परं स पंचरा इया तिण्णिमासिया (३) स पंचराइ तिमासियं परिहारठाणं पठविए अणगारे अंतरा-मासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा जाव तेणं परं सवीसइ राइया तिणिमासी (४) सवीसराइया तिण्णमासियं परिहारठाणं पठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा आहवरा वीसराइया आरोवणा जाव तेणं परं वीसराइया चत्तारिमासी [५] दसराइया

अर्थ

रहित आलोचना करे तो उस को बीस दिनका प्रायःश्चित देवे, जो वह कपट सहित आलोचन करे तो उसका आदि मध्य अंत का तपास कर. उसे तीन महिने पंद्रे दिनका प्रायःश्चित देवे. (अढाइ महिने पर बीस दिन अधिक करने से इतना प्रायःश्चित होता है) (३) वह तीन महिने पांच रात्रि का तप करता हुआ साधु मध्य में एक महिने का प्रायःश्चित का स्थानक सेवन कर कपट रहित आलोचना करे तो उसे पक्षिक [१५ दिन] का प्रायःश्चित देवे जो वह कपट से आलोचना करे तो तीन महिने उपर बीस रात्रि का प्रायःश्चित देवे (४) उस तीन महिने बीस रात्रि का तप करता हुआ मध्य में दो मासिक प्रायःश्चित स्थानका सेवन कर कपटरहित आलोचना करे तो उसे बीस रात्रि के प्रायःश्चितकी आरोपना करे और जो कपट से करे तो चार महिने ऊपर दश दिन का प्रायःश्चित देवे. (५) चार महिने

सूत्र

चउमासियं परिहारठाणं पठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, आहवरा पक्खिया आरोवणा आदि मज्झे अवसाणे जाव तेण परं पचुण्णं पंचमासियं (६) पंचराया पंचमासिया परिहारठाणं पठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता, आलोएज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा, आदि मज्झे अवसाणे, सअट्ठ सहेऊं सकारणं अहिणं माइरित्तं तेणं परं अद्धछमासी (७) अद्धछट्ठ मासियं परिहारठाणं पठविए अणगारे अंतरा मासियं

अर्थ

दश दिनका तप करता बीचमें एक महिनेका प्रायःश्चितका स्थानक सेवनकर कपट रहित आलोवे तो उसे पन्द्र दिनका प्रायःश्चित दे. जो कपट युक्त आलोचना करे तो पांच दिन कम पांच महिनेका प्रायःश्चित देवे [६] पांच दिन कम महिने का तप करता हुआ बीच में दो मासिक प्रायःश्चित का स्थानक सेवन कर कपट रहित आलोचना करे तो उसे बीस रात्र का प्रायःश्चित आरोपे. जो कपट सहित करे तो आदी मध्य अंत को अर्थ हेतु कारण सहित हिनाधिकता रहित तपास कर साढा पांच महिने का प्रायःश्चित देवे. पांच दिन कम (पांच महिने में बीस दिन मिलाने से साढे पांच महिने होते है) ॥ ७ ॥ साढे पांच महिने का तप करता हुआ साधु बीच में एक महिने का प्रायःश्चित का स्थानक सेवन कर कपट रहित आलोचना करे तो उसे पक्षिक तप देवे. और जो वो कपट सहित आलोचना करे तो उस का आदि

सूत्र
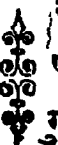
परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावए पक्खिया आरोवणा, आदि मज्झे अवमाणे मअट्ठे सहेऊं सकारणं अहिणं मइरित्तं तेणं परं छमासियं ॥ १५ ॥ गाहा—दंसण चारित्तं जुत्तो, गुत्तो गुत्ति सु सज्जणं, हिअय णामेणं विसाहगणी, महत्तर उ णाणं मकुसी ॥ १ ॥ किसिकंत्ती पिणधा, जसपत्तं पडहो सागराणिरूद्धो ॥ पुणरुत्तं भमतो माहि, ससिव्वठाणं गण गणं संत्त ॥ २ ॥ तस्सालिहियं निस्साहि,

अर्थ

मध्य अंत तपास कर अर्थ हेतु कारण सहित हीनाधिकता रहित पूरा छ मास का प्रायःश्चित देवे. क्यों कि छे महिने के उपरांत प्रायःश्चित नहीं है. तप भी नहीं है ॥ १५ ॥ गाथार्थ—यह जो नीशीत सूत्र है वह किसने लिखा है ? तो कि श्री विशाखा गणी आचार्य भगवंतने. वे कैसे थे ? तो कि जिन का सम्यक्त्व और चारित्र निर्मल था, समिति समितः गुप्ती कर जो गुप्तात्मा थे, स्वजन जनों के एकान्त हित चिंतक सूत्र ज्ञान के महा निधान द्रव्य पूरित मंजूष-तीजोरी समान ॥ १ ॥ कीर्तीरूप रविकी किरणों कर जिनों का अपयशःरूप अन्धकार नष्ट हुवा. सत्य धर्म के निर्घोष रूप पडह कर सागर तक पृथ्वी को जिनोंने निरून्धन की, जो जिस प्रकार आकाश में चन्द्रमा ग्रह नक्षत्र ताराओं के परिवार से परिभ्रमण करता है उस ही प्रकार पृथ्वी में शिष्य गण के परिवार कर विचरते हुवे ॥ २ ॥ इस प्रकार गुन संपन्न विशाखागणीने इस निशीत सूत्र को धर्म धुरा के धारन करने में प्रधान आरोग्य [निर्दोष]

सूत्र

चउमासियं परिहारठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारठाणं पडिसेविता धम्म धूरा धरणं पवर ॥ पुजस्स अगेग धारणिज्जं सिसपसिस्सोव भोज्जंव ॥ २ ॥
इति निसहीज्झयणे वीसमोद्देसो सम्मत्तो ॥ २० ॥ * * *

अर्थ

हित शिक्षा धारन करने योग्य शिष्य प्रति शिष्यों के पठन के लिये लिखी है ॥ ३ ॥ इति निशीत सूत्र का वीसवा उद्देशा समाप्तम् ॥ २० ॥ * *

इति षड् विंशातितम

॥ निशिथ सूत्र तृतिय छेद समाप्तम् ॥

*वीर संवत् २४४६ जेष्टकृष्ण ७ चंद्रवार. *

शास्त्रोद्धार प्रारंभ — वीराब्द २४४२ ज्ञान पंचमी

इति

निशीथ सूत्र

समाप्तम्

शास्त्रोद्धार समाप्ति — वीराब्द २४४६ विजयादशमी